# चुनाव

श्रीमीलाल इलाहाबादी

# एक

मुहल्ले के एक सिरे पर अच्छी दशा में छोटी सी पुरानी इमारत के ऊपर झण्डा लहरा रहा था। इमारत के माथे पर दस फीट लम्बा और चार फीट चौड़ा एक साइनबोर्ड लगा हुआ था। काली जमीन पर लाल अक्षरों में लिखा था 'कार्यालय सत्ता पार्टी'। यह इमारत सड़क से पचास फीट हट कर बनी हुई थी। इमारत के आगे घास का एक टुकड़ा छूटा हुआ था। घास की कटाई यद्यपि हो चुकी थी, परन्तु उसकी सतह समतल नहीं थी। कहीं-कहीं घास ज्यादा लम्बी थी, कहीं छोटी और कहीं बिल्कुल ही साफ थी। इमारत में घुसने के लिए दो फाटक थे उसके दोनों ओर तिरछी ईंटें गडी हुई थीं। कहीं-कहीं यह ईंटें दायें-बायें गिरी-पड़ी थीं। इमारत पर सफेदी हो चुकी थी फिर भी दीवारों की गन्दगी सफेदी की पतली सी तह में से झांक रही थी। देखने में इमारत विधवा औरत की तरह दिखाई पड़ती थी, हां यह अलग बात थी कि कभी-कभी जरूरत पड़ने पर इसे सजाया भी जाता था। रात के समय जब बिजली के बल्ब जगमगा उठते और रंग-बिरंगे कागजों की झण्डियां लहराने लगतीं तो सत्ता पार्टी की यह विधवानुमा इमारत दुल्हन सी दिखाई देने लगती।

इस समय सुबह के साढ़े दस बज चुके थे और दो-मंजिली इमारत

के ऊपर के कमरे में कुछ मर्दाना हँसी के स्वर गूँज रहे थे। उस समय वहाँ तीन आदमी बैठे इधर-उधर की गप्प हाँक रहे थे। पता नहीं उन्होंने किस बात पर कहकहे लगाये थे, फिर अनायास ही उनमें से एक बहुत गम्भीर होकर बोला—'यार चुप रहो, अपने नेतागण आते ही होंगे।'

दूसरा बोला—'इसमें घबराने की क्या बात है ? इतने ऊँचे कमरे में से दूर से आता हुआ आदमी दिखाई दे जाता है। नेतागण दबे पाँव हमारे सिर पर थोड़े ही आ धमकेंगे। वह तो दूर ही से आते दिखाई दे जायेंगे। कई लोग उनके साथ होंगे।'

इतने में गोपाल ने, जो कि खिड़की के पास ही खड़ा था, शोर मचा दिया—'अरे बकवास बन्द करो। नेता जी आ रहे हैं।'

सचमुच ही नेता जी वहाँ पहुँचने वाले थे। उनका असली नाम मदनसिंह ठाकुर था। वे ठाकुरों के ख़ानदान के थे इसलिए वह भी ठाकुर कहलाते थे। दोहरा बदन, कद न बहुत ऊँचा और न छोटा, रंग खूब खिलता हुआ और उनके गालों पर लाली झलकती थी। नाक-नक्शा अच्छा था, बुढ़ापे में भी इस बात का पता चलता था कि जवानी के जमाने में अच्छे रोबदार आदमी रहे होंगे। उनके बाप-दादा और खान-दान के दूसरे पुरुष लम्बी-लम्बी मूँछें रखते थे। परन्तु ठाकुर साहब ने केवल जवानी में तनी हुई मूँछें रखी थीं। उन दिनों वह पहलवानी भी करते थे, परन्तु जब वह नेता बने तो यह सारे काम छोड़ दिये यहाँ तक कि मूँछें भी सफाचट करा दीं। कहने वाले कहते थे कि जवानी में वह आँखों में सुरमा भी लगाते थे और कल्ले में सदा चार-छः पान दबाये रखते थे। अब उन्होंने सुरमा लगाना तो छोड़ दिया था लेकिन पान खूब खाते थे। पान की लत के कारण उनके करीब-करीब सभी दाँत

उखड़ गये थे, उन्होंने बनावटी दाँतों का सेट लगवा रखा था। सिर के बाल अब भी अंग्रेजी ढंग से कटे थे, अन्तर केवल यह था कि जवानी में खूब लम्बी जुल्फें रखते थे, और अब उन्होंने बाल काफी छोटे करा दिये थे। इस उम्र में भी उनके बाल उड़े नहीं थे। सारे बाल ज्यों के त्यों मौजूद थे उनका रंग तो सफेद हो चुका था लेकिन काला करने के लिए खिजाब इस्तेमाल करते थे। चेहरा भरा था, फिर भी नाक की जड़ से दोनों ओर लकीरें गालों की ओर बढ़ रही थीं हँसते तो ऐसा लगता जैसे इनसे जैसा खुश-मिजाज आदमी नहीं होगा और जब क्रोध में आते तो अधरों की दशा देखने लायक हो जाती। इसीलिए उनका अपनी पार्टी में बड़ा रोब था। राजनैतिक जानकारी के अतिरिक्त उनका व्यक्तिगत दबदबा भी काफी था।

दूसरे आने वाले लोग उनसे तीन-चार कदम पीछे हटकर चले आ रहे थे। उनका रोब ऐसा था कि किसी का इतना साहस नहीं होता था कि बिना किसी कारण के उनके साथ सटके खड़ा हो जाय। इस समय केवल अनिता उनके बगल में चली आ रही थी।

अनिता का रंग गहरा गेहुँआ था। शरीर खूब सुडौल और सीधा था। गर्दन ऊँची और चेहरे की बनावट तथा नाक-नक्शा सुन्दर था। आँखें बहुत बड़ी-बड़ी उभरी हुईं और तीखी थीं। जब वह अपनी काली-काली पुतलियाँ घुमाती तो जिधर देखती उधर ही एक रोब सा छा जाता। वही ठाकुर साहब की सेक्रेट्री थी। खद्दर के साधारण वस्त्रों में भी उसके लम्बे, सुडौल शरीर की सुन्दरता साफ दिखाई दे रही थी।

ठाकुर साहब अनिता को कहाँ से उठा लाये थे, इसके बारे में निश्चित रूप से कोई कुछ नहीं बता सकता था। कई किस्म की अफ-

चाहें जरूर फैली हुई थीं। लोग यहाँ तक भी कहते थे कि उन्हीं के इलाके में एक पासिन से किसी ठाकुर की यारी लग गई। अनिता उन दोनों के मिलाव का ही नतीजा थी। पासिन भी बहुत अच्छी थी और वह ठाकुर भी हजारों में एक था। यह तो मानी हुई बात है कि बेमेल जातियों की सन्तान और भी अधिक सुन्दर होती है। कहते हैं कि जब ठाकुर साहब के बुरे दिन आ गये तो अनिता की माँ को खर्चे के लिए पूरा रुपया भी नहीं दे पाते थे फिर भी अनिता की माँ उनसे अच्छा व्यवहार करती रही। ठाकुर मदन सिंह को असलियत का कुछ ज्ञान था। जब अनिता की माँ पर ज्यादा बुढ़ापा आ गया और वह बिल्कुल ही शक्तिहीन हो गई तो ठाकुर मदन सिंह ने किसी और गाँव में उसके रहने-सहने का प्रबन्ध कर दिया और अनिता की जिम्मेदारी अपने सिर पर ले ली। अनिता की माँ का चाल-चलन खराब नहीं था। वह तो अनिता के पिता को अपना पति मानती रही। हालांकि उन दोनों की शादी नहीं हुई थी। ठाकुर मदन सिंह और अनिता का सम्बन्ध किसी तरह भी खराब नहीं था। दोनों की आयु में भी जमीन-आसमान का अन्तर था। अनिता ने अभी अट्ठारहवें वर्ष में कदम रखा था और मदन सिंह बूढ़े हो चुके थे। उनका शरीर ढल गया था लेकिन सीने का फुलाव अब भी काफी था और कन्धे भी काफी चौड़े थे। अनिता अपनी शोख आँखों से कभी-कभी तो ठाकुर साहब के चौड़े सीने को टकटकी बाँधकर यों देखने लगती जैसे वह कोई देव-पुरुष हों। या फिर, कौन जाने स्त्री के मन की गहराई को। उसकी माँ ने भी तो बाली उम्र में अपने से बहुत काफी बड़े ठाकुर को दिल दे दिया था।

तेज धूप में चलते-चलते ठाकुर साहब फाटक पर आकर रुक गये। उनके साथ अनिता भी रुक गई। अनिता की रेशमी बालों की नागिन

की लम्बी चोटी का फुंदना थोड़ी देर झूमकर रह गया। एकाएक किसी विचार के कारण ठाकुर साहब रुक गये थे। उन्होंने अपनी आँखों से इशारा करके पीछे आने वाले आदमियों में से दो को अपने निकट बुलाया। वे दोनों झट आगे बढ़े और हाथ जोड़कर खड़े हो गये।

ठाकुर साहब भारी स्वर में बोले—'अच्छा तो क्या खबर है?'

'सब ठीक है जी।'—उनमें से एक ने उत्तर दिया। और बाकी बातें भी उसी ने कीं।

अब ठाकुर साहब ने धूप की ओर पीठ कर ली और उनकी आँखों का चुंधापन भी दूर हो गया। अपनी ठुड्डी को हथेली से रगड़ते हुए बोले—'देखो बाग सिंह चुनाव में अब केवल कुछ दिन रह गये हैं। मालूम है ना?'

'जी हाँ।'

'हमारी तैयारी में जो थोड़ी-बहुत कसर रह गई है, वह पूरी हो जानी चाहिए।'

'अवश्य।'

ठाकुर साहब उन्हें अपने दफ्तर में नहीं ले जाना चाहते थे। वे देहाती कर्मचारी थे और ठाकुर साहब नहीं चाहते थे कि उनके दफ्तर में जो बैठक होने जा रही थी उसमें वे भाग लें क्योंकि वहाँ कई ऐसी बातें भी होने वाली थीं जो देहाती कर्मचारियों के कानों तक पहुँचनी ठीक नहीं थीं। इसीलिए ठाकुर साहब फाटक पर खड़े-खड़े जरूरी बातें कर लेना चाहते थे। चुनाँचे उन्होंने अपने स्वर में जरा रोब पैदा करते हुए कहा—'बाग सिंह मैं समझता था कि तुम कोई खास खबर लाओगे या कम से कम कोई नया सुझाव दोगे, परन्तु तुम्हारे मुँह से कोई ऐसी बात नहीं सुन रहा हूँ।'

बाग सिह कुछ हड़बड़ा गया क्योंकि वह सुझाव देने तो आया था लेकिन ठाकुर साहब के रोब के कारण अभी तक कुछ कह नहीं पाया था। वह उचित मौके की तलाश में था, चुनांचे उसने मौका उचित समझकर कहा—'ठाकुर साहब मैं सोच रहा था कि जरा आराम से बैठें तो बात हो।'

यह सुनकर ठाकुर साहब कुछ बिगड़ गये और ऊँचे स्वर में बोले—'भई तुम लोग भी अजीब आदमी हो। मेरे पास आराम से बैठने का समय नही है और बाग सिह अच्छी तरह समझ लो कि हम सब के लिए आराम हराम है।'

ठाकुर साहब के बिगड़े हुए तेवर देख कर बाग सिह सहम गया। ठाकुर साहब फिर बोले—'जो बात कहनी है, बस खड़े-खड़े कह दो। तुम इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि आज-कल मैं कितना व्यस्त हूँ।'

मदन सिह महान् नेता थे, भला उनके सामने बाग सिह की क्या हैसियत थी। बेचारा हकला गया और उसके मुँह से एक-दो बेतुकी आवाज निकलकर रह गई। तब उसने आँखों से अनिता की ओर इशारा किया। इस इशारे का अर्थ समझते हुए ठाकुर साहब ने कहा—'तुम इनकी फिक्र मत करो। जो बात कहनी है फौरन कह दो। अच्छी तरह समझ लो कि अब जब कि चुनाव में केवल कुछ दिन रह गये हैं, हममें से किसी को एक पल भी नष्ट नहीं करना चाहिए। हाँ तो कहो।'

बाग सिह ने दोनों हाथ जोड़ कर कहा—'देखिये एक कष्ट आपको सहना पड़ेगा।'

'कैसा कष्ट ?'

बाग सिह कुछ संकोच में पड़ गया। शायद वह सोच रहा था कि

अपने मन की बात कहे या नहीं। आखिर में उसने बात कह ही दी—'मेरे स्थान में आप स्वयं हमारे इलाके का दौरा करें तो बहुत अच्छा है।'

'सो तो है ही। ख्वामख्वाह संकोच में पड़े हुए थे। तुम्हारे सुझाव से पहले ही हम दौरा करने का प्रोग्राम बना चुके थे। जरा सोचो तो कि हमारे दौरे के बिना कुछ हो सकता है।'

'जी हाँ वही तो मैं भी कहता हूँ।'

बाग सिंह की मूर्खता पर ठाकुर साहब ने धीरे से अपने माथे पर बल मारा जिसका अर्थ न तो बाग सिंह समझा और न उसके साथी, परन्तु अनिता समझ गई तभी तो उसके लाल होंठों पर मुस्कराहट खेलने लगी।

बाग सिंह बोला—'आपका कब तक आने का विचार है? मुझे कुछ तैयारियाँ भी तो करनी पड़ेगी।'

इस बात का उत्तर ठाकुर साहब ने सीधा बाग सिंह को नहीं दिया। उन्होंने अनिता की ओर देखते हुए कहा—'अनिता ?'

'जी।'

ठाकुर साहब कुछ कहने से पहले सोच में डूब गये। उनके चौड़े माथे पर गहरे बल पड़ गये। तब उन्होंने कुछ फैसला करके कहना शुरू किया—'हाँ तो अनिता ?'

'जी हाँ।'—अनिता ने फिर उत्तर दिया।

'तुम्हारे पास तो मेरे सारे कार्यक्रम की रूप-रेखा तैयार है।'

'जी हाँ।'

'आज दोपहर को फुरसत मिलने पर मुझे याद दिला देना, ताकि बाग सिंह के इलाके के दौरा का प्रोग्राम बनाया जा सके।'

'अच्छा जी ।'

'देखो भूलना नहीं क्योंकि मेरे दिमाग से कोई बात उतर जाती है तो फिर एक सिरे से ही गायब हो जाती है । बेहतर तो यही होगा कि तुम इस बात को लिख लो ।'

'आप निश्चिन्त रहिये मैं इतनी जल्दी भूलने वाली नहीं ।'—यह कहकर अनिता मुस्करायी तो उसके सफेद-सफेद दाँत चमक उठे । ठाकुर साहब के सामने इतनी निडरता से कोई बात कहने का किसी और का साहस नहीं हो सकता था । इसका कारण यह नहीं था कि ठाकुर साहब से उसका बहुत ज्यादा बेतकल्लुफी का सम्बन्ध था । बल्कि अभी उसकी उम्र ही इतनी कम थी कि वह बिना किसी संकोच के बात कह देती थी ।

अब ठाकुर साहब ने बाग सिंह की ओर देखते हुए कहा—'बस, यह बात भी हो गई और दो-तीन दिन के अन्दर-अन्दर पत्र द्वारा तुमको पूरी सूचना पहुँच जायगी । ठीक है ?'

'जी हाँ, जी हाँ ।'

ठाकुर साहब के साथ जो और लोग थे, वह सड़क के दूसरे किनारे पेड़ की छाँव तले खड़े हो गये थे ताकि ठाकुर साहब जरूरी बातें कर सकें । वह इस प्रतीक्षा में थे कि बाग सिंह वहाँ से टले तो वे ठाकुर साहब के पास पहुँच जायँ ।

यह समझ कर कि बाग सिंह से उनकी बात-चीत पूरी हो चुकी, ठाकुर साहब फाटक के अन्दर घूमे तो उन्होंने कनखियों से देखा कि बाग सिंह अब भी उनकी ओर कदम बढ़ा रहा है । वह फिर रुक गये और उनके माथे पर गहरे बल पड़ गये । जरा भारी स्वर में बोले—'अभी कोई और बात है क्या ?'

'जी हाँ।'

'तो भई कह डालो ना। स्वामख्वाह समय नष्ट हो रहा है।'

'बात'''बात तो केवल यह है कि''' ।'

अब एक ऐसी समस्या आ गई थी जिसके बारे में बाग सिंह अनिता के सामने कुछ नहीं कहना चाहता था। अब मामला उन लोफरों और गुण्डों का था जिनसे काम लिये बिना या जिनकी सहायता बिना नेता लोगों की नेतागीरी बहुत दिनों नहीं चल सकती। उन्हीं को खिलाने-पिलाने के लिए कुछ न कुछ करने की जरूरत थी। शराब और गोश्त की दावतों के अतिरिक्त उन लोगों को नकद रुपया भी देना पड़ता था। हर राजनीतिक पार्टी की तरह सत्ता पार्टी को भी गुण्डे पालने पड़ते थे। यह गुण्डे अपना महत्व अच्छी तरह समझते थे, इसलिए उनका दिमाग हवा में रहता था। उनके हौसले इतने बढ़े हुए थे कि किसी भी भले आदमी की पगड़ी उछालने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता था। बाग सिंह भेद की यह बात कहने के लिए ठाकुर साहब के बहुत ही निकट खिसक गया और उनके कान तक मुँह ले जाकर फुसफुसाते हुए बोला—'कुछ रुपये की भी जरूरत होगी।'

एक क्षण में ही ठाकुर साहब सब कुछ भाँप गये। वह इस तरह चौंके जैसे बहुत ही महत्वपूर्ण बात उनके दिमाग से उतर गई हो। फौरन ही हाथ बढ़ाकर बाग सिंह के कन्धे पर रख दिया और बोले—'खूब याद दिलाया। मैं तो इस बात को बिल्कुल ही भूल गया था।'

ठाकुर साहब की इस बात से बाग सिंह का सीना फूल गया। नथुने फड़काते हुए बोला—'जी,ऐसा तो हो ही जाता है। चौबीस घण्टों में आपको कान खुजाने की तो फुर्सत नहीं मिलती, भला आपको ऐसी छोटी-छोटी बातें कैसे याद रह सकती हैं?'

ठाकुर साहब ने बाग सिंह की यह खुशामद भरी बातें सुनी-अनसुनी कर दी। वह तो अपने ही विचारों में डूबे हुए थे। एकाएक कुछ सोच कर उन्होंने बाग सिंह का कन्धा दबाया और बोले—'तुम्हारे पास कोई भरोसे का आदमी है?'

बाग सिंह समझ नहीं पाया कि ठाकुर साहब को कैसे आदमी की जरूरत थी। भरोसे के आदमी तो कई थे लेकिन यह भी तो पता चलना चाहिए कि काम किस प्रकार का था, क्योंकि उसी के अनुसार आदमी को काम सौंपा जा सकता है।

ठाकुर साहब भी एक घाघ थे। वह बाग सिंह के मन की दशा भाँप गये फिर भी बोले—'मेरा मतलब है कि कोई ऐसा आदमी चाहिए जिस पर रुपये-पैसे का भरोसा किया जाय।'

ठाकुर साहब ने भी बाग सिंह के कान में बात फुसफुसा कर कही थी। इससे बाग सिंह को बड़ा गर्व महसूस हो रहा था। जो लोग उन्हें देख रहे थे वह इस काना-फूसी से यह महसूस किये बिना कैसे रह सकते थे कि बाग सिंह ठाकुर साहब का बड़ा ही खास आदमी था।

ठाकुर साहब की बात सुन कर उसने बड़ी फुर्ती से आँखें झपकायीं और अपने पास खड़े आदमी की ओर इशारा करके बोला—'यह भी अपनी पार्टी के आदमी हैं, इन पर रुपये-पैसे के मामले में पूरा भरोसा किया जा सकता है।'

बाग सिंह की बात सुनकर ठाकुर साहब ने एक नजर पास खड़े आदमी पर डाली तो उसने दोनों हाथ जोड़कर सिर नीचे को झुका लिया।

ठाकुर साहब फिर अपना मुँह बाग सिंह के कान तक ले गये और फुसफुसा कर बोले—'काफी मोटी रकम होगी।'

'जी वह तो मैं जानता हूँ।'

'तो फिर···?'

'आप चिन्ता न कीजिये यह तो अपने भरोसे का आदमी है इसे लाखों रुपया भी सौंपा जा सकता है।'

ठाकुर साहब ने इतमीनान की साँस लेकर कहा—'यह बात है तो बस परसों तक फिर इसे हमारे पास भेज देना और हम सारी रकम इसके हवाले कर देंगे।'

बाग सिंह का मन हो रहा था कि वह उनसे रकम के बारे में बात-चीत करे परन्तु उसकी हिम्मत छूट गई। उसने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि ठाकुर साहब क्रोध मे आ जांय और इस तरह बनी-बनाई बात बिगड़ जाय। ठाकुर साहब भी कच्ची कौड़ियाँ नहीं खेले थे। जो खींच-तान बाग सिंह के मन में चल रही थी उन्होंने उसका अनुमान लगा लिया और फिर बाग सिंह के कन्धे पर थपकी लगाते हुए धीरे से बोले—'जितनी रकम सम्भव हो सकेगी, मैं भेज दूंगा। यदि अधिक धन की जरूरत हो तो मुझे पत्र द्वारा सूचित कर देना।'

बाग सिंह पर इस बात का गहरा प्रभाव पड़ा। बाग सिंह ने भी दाँत निकाल कर हँस दिया। उसके साथी से भी न रहा गया, वह भी हँसा। जब वे दोनों वहाँ से चले तो मारे खुशी के उनके पाँव धरती पर नहीं पड़ रहे थे। लगता था मानो उन्हें कोई छिपा हुआ खजाना मिल गया है। दूर पेड़ की छाँव तले खड़े लोगों की ओर उन्होंने अकड़ कर देखा और फिर पसीना पोंछते हुए बस के अड्डे की ओर चल दिये।

उनसे फुर्सत पाकर ठाकुर साहब ने दूसरे लोगों को इशारे से बुलाया। वे लपक कर उनके पास पहुँचे तो ठाकुर साहब ने अपनी कलाई की घड़ी पर नजर डालते हुए कहा—'अब मेरे पास मुश्किल से

बाकी आदमी तो पहले से ही अन्दर जा चुके थे। रामू सिर पकड़ कर दरवाजे के निकट ही स्टूल पर बैठ गया। उसे बड़ा दुःख हो रहा था। वह अपनी तकदीर को कोसने लगा कि जिस समय गोपाल और किशन अनिता से चुहल कर रहे होंगे, उस समय उसे ठाकुर साहब के दरवाजे की पहरेदारी करनी पड़ेगी।

किसी कर्मचारी में इतना साहस नहीं था कि अनिता से चुहलबाजी कर सके, खास कर ये तीनों तो किसी गिनती में ही नहीं थे। फिर भी जब कभी उन्हें घड़ी दो घड़ी अनिता की खुशामद करने का मौका मिल जाता और वह इनकी मूर्खता की किसी बात पर मुस्करा भी देती तो यह इसी में मुग्ध हो जाते। कमरे में खड़े-खड़े किशन और गोपाल को मालूम हो गया कि ठाकुर साहब अभी दूसरे कमरे में पधार रहे हैं। परन्तु उन्हें इस बात का पता नहीं था कि अनिता कुछ देर के लिए उन्हीं के पास आ रही है। जब वह फुर्ती से ठाकुर साहब के लम्बे-चौड़े फ्रेमवाले फोटो को हार पहना चुके और धूप जला चुके तो अनिता को कमरे में प्रवेश करते देख कर उन दोनों की बाँछें खिल उठीं। दोनों हाथ जोड़ कर और खूब नीचे को झुक कर उन्होंने इतनी नम्रता से नमस्ते की जैसे कहीं की महारानी कमरे में आई हों, और यह दोनों महारानी के दास हों।

'कुमारी जी, नमस्ते।'

'नमस्ते, कुमारी जी।'

उन दोनों खुशामदी टट्टुओं का स्वर कमरे में गूंजा।

अनिता अपने जन्म से चाहे जो कुछ भी थी, लेकिन उसका व्यवहार छोटे-बड़े से ऐसे ही होता था जैसे वह किसी ऊँचे घराने की महिला हो। न वह किसी महान् व्यक्ति के सामने घबराती थी और न साधारण

आदमियों से शरमाती थी। सैकड़ों मर्द उसे किस नजर से देखते हैं, उसने कभी इस बात की फिक्र नहीं की। वह अपने आप में ही मग्न रहती। अब भी उसने यह जानने की कोशिश नहीं की कि दो मामूली कर्मचारी उसे कैसी भूखी नजरों से देख रहे थे। मर्दों की इस आदत से वह बिलकुल बेपरवाह हो चुकी थी। चुनांचे नमस्कार का उत्तर देते हुए मुस्करा कर बोली— 'कहिये, आप लोग आनंद से तो हैं ?'

'जी बिल्कुल।'

'जी बिल्कुल'

फिर उन दोनों ने आगे-पीछे एक से ही शब्द कहे।

अनिता ने अपनी मोटी-मोटी आँखों से सारे कमरे का निरीक्षण किया। उसकी यह भी ड्यूटी थी कि वह अपने नीचे काम करने वाले कर्मचारियों के काम को देखे, यदि कोई खराबी हो तो उसे ठीक करवा ले। अनिता की नजर ठाकुर साहब की बड़े फोटो पर भी रुकी। फ्रेम पर फूलों की माला और फोटो के सामने धूप सुलगती देख कर उसने इतमीनान की साँस ली।

इतने में ही गोपाल कुर्सी ले आया और किशन उसे झाड़ते-पोंछते हुए बोला—'पधारिये कुमारी जी।'

अनिता ने एक नजर कुर्सी पर डाली और फिर दीवार के साथ रखे हुए बड़े तख्त-पोश की ओर बढ़ी, जिस पर उजली चादर बिछी थी और दीवार के साथ-साथ कुछ गाव-तकिये लगे थे।

अनिता ने धीमे स्वर में कहा—'कुर्सी रहने दो, मैं तख्त-पोश पर ही बैठूंगी। कुर्सी पर बैठने में कुछ मजा नहीं आता। हम देसी लोग है इसलिए देसी ढङ्ग से बैठने में ही हमें आराम मिलता है।

इतना कह कर अनिता तख्त-पोश पर जा बैठी, और कोहनी गाव-तकिये पर टेक कर उसने अपने पाँव साड़ी में ढँक लिये।

किशन बोला— 'कुमारी जी, हम तो आप को ऊपर से देख रहे थे। आप काफी देर तक तो फाटक के पास ही खड़ी रहीं।'

यह बात सुनकर अनिता ने अपनी आँखें उठाई और किशन और गोपाल की ओर यों देखा जैसे वह छोटे-छोटे बुद्धू बच्चे हों। और फिर बेतकल्लुफी से मुस्करा कर बोली—'अच्छा तो आप देख रहे थे ऊपर से ?'

'जी······जी हाँ।'

'अच्छा ! मैंने तो आप लोगों को नहीं देखा।'

किशन—'हम खिड़की में ही तो खड़े थे।'

अनिता—'ओह ! तो यह बात है !'

गोपाल—'जी, यही बात थी। यदि आप ऊपर को नजर उठातीं तो आपको हम खिड़की में ही दिख जाते।'

अनिता—'मुझे क्या मालूम था कि आप लोग खिड़की में खड़े थे। मैं समझी थी कि आप लोग अपने काम में जुटे होंगे।'

अनिता ने उन पर चोट की। यह सुनकर वे दोनों घबरा गये कि अनिता ने अगर ठाकुर साहब से उनकी शिकायत कर दी तो वह उनकी चमड़ी उधेड़ देंगे। किशन को बात सूझी तो फौरन ही बोला—'कुमारी जी, हम तो अपना काम समाप्त कर चुके थे और आप ही की प्रतीक्षा कर रहे थे।'

उनकी यह बात सुनकर अनिता अपनी इस चोट का मन ही मन में आनन्द लेती रही। गोपाल और किशन घबराहट में आपस में इशारे-इशारे में बातें कर रहे थे। अनिता कनखियों से सब कुछ देख रही थी, और उनकी इस दशा का मजा ले रही थी।

इशारों-इशारों में कुछ तय करके गोपाल उनकी ओर बढ़ा और दोनों हाथ जोड़ कर बोला—'एक बात कहूँ ?'

अनिता—'हाँ, कहो।'

गोपाल ने ओंठ को थूक से गीला करते हुए कहा—'कुमारी जी, आप यह बात ठाकुर साहब से न कहियेगा।

अनिता ने जान-बूझ कर बुद्धू बनते हुए पूछा—'कौन सी बात ?'

गोपाल—'यही कि हम लोग खिड़की में खड़े थे।'

अनिता ने अनजान बनकर पूछा—'अरे! खिड़की में खड़े होने में क्या होता है ?'

इतने में किशन आगे बढ़ कर बोला—'होता तो कुछ नहीं परन्तु आप तो जानती ही हैं कि ठाकुर साहब का गुस्सा कितना तेज है। आपने उनसे कुछ कह दिया तो हमें डाँट पड़ जायगी।'

अनिता पल भर चुप रही, फिर कन्धों को हिला कर बोली—'मेरी समझ में नहीं आता कि खिड़की में खड़े होने में बुराई क्या है ?'

किशन—'जी बुराई तो कुछ नहीं परन्तु फिर भी हमारी विनती यही है कि आप उनसे कुछ न कहें।'

'ठीक है। तुम नहीं चाहते तो मैं उनसे नहीं बताऊँगी।'

इतना सुन कर उन दोनों ने इतमीनान की साँस ली। अनिता को वह बिल्कुल जोकर ही दिखाई देते थे, इसीलिए तो वह उनकी बातों का मजा ले रही थी।

गोपाल और किशन की हार्दिक इच्छा रहती कि उन्हें किसी रोज अनिता से बातचीत करने का मौका मिल जाय। एक आध बात तो हो ही जाती थी परन्तु आज उन्हें बहुत अच्छा मौका मिला था। वह अधिक से अधिक बातें कर लेना चाहते थे।

वैसे तो उनकी वेतुकी वातें सुनने की अनिता के पास फुर्सत ही नहीं थी, परन्तु चूँकि इस समय वह फुर्सत में थी इसलिए उसने सोचा कि चलो थोड़ी देर तक इन मूर्खों की वात का ही मजा लिया जाय।

ठाकुर साहव के दरवाजे पर वैठे-वैठे रामू को किशन और गोपाल की वातें और अनिता की हल्की हँसी की आवाजें सुनाई दे रही थी। उसके पेट में भी मरोड़ उठ रहे थे। काश ! इस समय वह भी अनिता के पास वैठ कर उसकी मीठी-मीठी वातें सुन सकता और उसकी प्यारी-प्यारी शक्ल देख सकता। वह सोच रहा था कि न जाने उसने क्या पाप किया था कि जो ठाकुर साहव ने उसे अपने दरवाजे पर ही वैठा लिया। अनिता से वातें करने का आज कैसा सुनहरा मौका मिला था जिसका वह लाभ भी नहीं उठा सकता था। उसी तरह वह अपने मन में कुढ़ रहा था कि अन्दर से ठाकुर साहव की भारी आवाज सुनाई दी—'रामू !'

रामू ने उछल कर जवाव दिया—'आया ठाकुर साहव।'

अन्दर पहुँचा तो ठाकुर साहव ने कहा—'देखो रामू, पनवाड़ी की दुकान से सव के लिए एक-एक वोतल कोकोकोला और पान लगवाकर ले आओ। हाँ, कुमारी जी से भी पूछ लेना। यदि उन्हें भी प्यास लगी हो तो एक कोकोकोला उनके लिए भी लेते आना।'

यह सुनकर रामू की वाँछें खिल गई। आखिर भगवान ने उसकी प्रार्थना सुन ली और उसे अनिता से दो वातें करने का मौका मिल गया।

वह भागा हुआ वड़े कमरे में पहुँचा और जाते ही दोनों हाथ जोड़ कर वोला—'नमस्ते कुमारी जी।'

उसे देख कर अनिता हँसी। मन में कहने लगी—लो यह तीसरा बुद्धू भी आ गया। फिर बोली—'क्या बात है रामू? इतने बौखलाये हुए क्यों हो?'

'जी मुझे ठाकुर साहब ने भेजा है।'

'अच्छा, तो क्या कहा है उन्होंने?'

'जी बात यह है कि उन्होंने सबके लिए कोकोकोला मँगवाया है और उन्होंने कहा था कि आप से भी पूँछ लूँ क्या आप कोकाकोला पियेंगी?'

अनिता—'नहीं।'

रामू उदास मन से कोकोकोला और पान लेने चला गया।

# दो

ठाकुर साहब महान् नेता थे। उन्होंने अनिता के रहने का प्रबन्ध कुछ दिनों के लिए एक होस्टल में कर दिया था। और उसे दो कमरे दिला दिये थे। अनिता सुबह नौ बजे तक ठाकुर साहब के मकान पर पहुँच जाती और उन्हीं के साथ दफ्तर चली जाती। शाम को साढ़े पाँच बजे उसे छुट्टी मिल जाती और वह अपने होस्टल वापस चली जाती थी। वहाँ मुँह-हाथ धोकर चाय पीती फिर थोड़ा-बहुत टहलने के लिए बाहर निकल जाती। अक्सर उसके साथ होस्टल की एक न एक लड़की होती। कभी-कभी ऐसा भी दिन आ जाता कि उसे किसी का साथ न मिलता। ऐसे मौके पर वह या तो बाजार से अपने लिए छोटी-मोटी चीज खरीदने चली जाती थी या पास की नदी के किनारे टहलने चली जाती। नदी किनारे काफी रौनक रहती थी। वहाँ बहुत से लोग अपने बाल-बच्चों सहित टहलने जाते थे। इसलिए वहाँ अकेले घूमने में कोई डर की बात नहीं थी। अक्सर ठाकुर साहब रात को भी एक-डेढ़ घण्टे के लिए अनिता को बुला लेते। खाना खा चुकने के बाद नौ बजे तक अनिता ठाकुर साहब की भेजी हुई कार में बैठ कर उनके मकान तक चली जाती। ठाकुर साहब उसे सारे जरूरी

काम बता देते, जिनका भुगतान करके साढ़े दस या ग्यारह के आस-पास ठाकुर साहब की कार में बैठ कर वह लौट आती।

एक शाम जब कि अनिता को कोई साथ नहीं मिला तो वह अकेली ही नदी की ओर चल दी। नदी होस्टल से कुछ ज्यादा दूर नहीं थी। यही दो या ढाई फर्लाङ्ग का फासला होगा। वहाँ पहुँची तो सदा की तरह बाल-बच्चेदार लोग भी आये हुए थे जिनमें स्त्रियाँ भी थी। यहाँ लोग अपने काम से काम रखते थे, कोई किसी से पूछ-ताछ नहीं करता था। चाहे कोई अकेला हो, चाहे किसी साथी या बाल-बच्चों सहित, हर कोई अपने आप में मग्न रहता था।

अनिता नदी के किनारे जाकर रुक गई। जिस स्थान पर वह खड़ी थी वहाँ से कुछ दूर तक भूमि काफी ढालू थी इससे आगे नदी की फैली हुई जमीन थी। सूर्य अस्त हो चुका था और दूसरे किनारे पर खड़े हुए पेड़ धुन्धले से दिखाई दे रहे थे। जब सूर्य अस्त होने को होता तो नदी के पानी में आकाश की लाली झलकने लगती। और रंगीन बादलों का दृश्य पानी में भी दिखाई देने लगता। परन्तु इस समय सूर्य की लाली गायब हो चुकी थी इसलिए नदी का पानी स्लेटी रंग का दिखाई दे रहा था।

अनिता इस वातावरण में चुपचाप खड़ी थी कि इतने में पीछे से आवाज आई—'अरे आप ?'

अनिता को आवाज कुछ जानी-पहचानी सी लगी। उसने जरा घूमकर देखा तो बाबू अरविन्द कुमार खड़े नजर आये, जो उस समय दोनों हाथ जोड़ कर अनिता को नमस्कार कर रहे थे।

अरविन्द कुमार 'कुली पार्टी' के नेता थे। उनकी आयु छत्तीस-सैंतीस वर्ष के लगभग होगी। कद जरा निकलता हुआ था, बदन एकहरा लेकिन

ी मजबूत थी। हाथ देहातियों की तरह बड़े-बड़े, और अँगुलियाँ लम्बी या मोटी थीं। चेहरे की हड्डियाँ भी चौड़ी थीं। माथा छोटा, भौंहें नी, कल्ले पिचके हुए, दाँत जरा बड़े, रंग गेहुँआ, ठुड्डी जरा चौड़ी ौर आगे को निकली थी, ऊँची गर्दन थी। सिर के बाल खूब घने, मोटे और काले थे। इस समय सदा की तरह वह लम्बा सा कुर्ता पहने हुए थे, कुर्ता खद्दर का और चौड़े मोहरे का पाजामा भी खद्दर का ही था। अनिता उन्हें पहचानती थी क्योंकि वे दोनों राजनीति के मैदान के सिपाही थे। यह अलग बात थी कि अनिता सत्ता पार्टी में थी और अरविन्द कुमार कुली पार्टी के बड़े नेता थे।

अनिता ने नमस्ते का उत्तर दिया तो कुमार साहब ने दो कदम आगे बढ़ कर पूछा—'अनिता जी, आप यहाँ कैसे ?'

कुछ कहते-कहते अनिता रुक गई। उसने सोचा कि यदि उसने बता दिया कि वह तो हर रोज ही इधर घूमने आती है तो उसकी मुसीबत हो जायगी। वह जानती थी कि कुमार साहब बड़ी चिपकू किस्म के आदमी हैं। यदि उन्हें पता चल गया कि वह वहाँ हर रोज आती है, तो वह उसे बोर करने के लिए हर रोज वहाँ पहुँच जाया करेंगे। चुनांचे वह सम्हल कर बोली—'आज शाम फुर्सत थी, कोई और काम करने को नहीं था इसलिए सोचा, कि चलो नदी तक टहल आऊँ।'

इतने में कुमार साहब उसके बराबर आकर खड़े हो गये और दाँत निकालते हुए बोले—'यह तो आपने बहुत अच्छा किया। मुझसे पूछिये तो आपको यहाँ हर रोज आना चाहिए, क्योंकि थोड़ा-बहुत टहलना स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है।'

अनिता ने बात बनाते हुए कहा—'आप ठीक ही कहते हैं, परन्तु क्या किया जाय, फ़ुर्सत कहाँ मिलती है।'

इस पर कुमार जी ने दोनों हाथ ऊपर उठाते हुए कहा—'जी नहीं मैं आपकी यह बात मानने को तैयार नहीं हूँ। आप खुद ही बताइये कि गाँधी जी से अधिक व्यस्त और कौन होगा, परन्तु वह भी टहलने के लिए समय जरूर निकालते थे। अभी उनकी गोखले जी से भी यही बहस चलती रहती थी। गाँधी जी उन दिनों बहुत अधिक प्रसिद्ध तो नहीं थे, परन्तु उन्होंने उस समय तक अपने नियम बना लिये थे। वह खुद गोखले जी से अनुरोध करते रहते कि वह किसी प्रकार का व्यायाम जरूर करें क्योंकि गोखले साहब का स्वास्थ्य हमेशा ही खराब रहता था। गोखले जी ने अधिक काम का बहाना लगा कर कभी व्यायाम नहीं किया। गाँधी जी ने भी उनके इस बहाने को कभी स्वीकार नहीं किया।'

अनिता तो जानती ही थी कि कुमार साहब की जुबान बहुत चलती है। बात करने का कोई बहाना होना चाहिए। बस उसी पर कुमार साहब एक भाषण दे डालते। उनकी बातें सुनकर अनिता जान-बूझ कर चुप रही क्योंकि वह जानती थी कि यदि उसने कोई उत्तर दिया तो कुमार साहब की बातों की गाड़ी फिर चालू हो जायगी। परन्तु कुमार जैसे नेता इन मामूली चुप्पियों के सामने हथियार डालने वाले नहीं थे। पल भर रुक कर उन्होंने फिर बोलना शुरू कर दिया—'आप तो पढ़ी-लिखी महिला हैं, आपको समझाना तो सूर्य को चिराग दिखाने वाली बात है।'

अनिता समझ गई कि उसके चुप रहने पर कुमार साहब उसका पीछा छोड़ने वाले नहीं थे। कुछ न कुछ उत्तर देना जरूरी था। इतना

च कर वह मुस्करा दी और धीरे से बोली—'मैं आपकी बात से हमत हूँ। अब मैं इस बात की कोशिश करूँगी कि यदि शाम को नहीं तो सुबह के समय टहल लिया करूँ।'

अपनी बात मनवाकर कुमार साहब खुश हुए और चहक कर बोले—'यह सुन कर मुझे बहुत खुशी हुई कि आप मुझसे सहमत हैं। देखिये ना आपका जीवन संघर्ष का जीवन है। कभी यह काम करना, कभी वह काम करना। दिमागी मेहनत आपको अलग करनी पड़ती है। इसलिए अपना स्वास्थ्य बनाये रखना आपके लिए बहुत ही जरूरी है। यदि संध्या को समय नहीं मिलता तो सुबह के वक्त ही थोड़ा-बहुत घूमा कीजिये। सुबह की हवा तो संध्या की हवा से और भी ज्यादा अच्छी होती है।'

'आप ठीक कहते हैं।'

यदि अनिता उनसे सहमत न होती तो कुमार साहब घण्टों इसी विषय पर बात करते चले जाते। परन्तु उसके सहमत हो जाने से उनकी बातों की चलती हुई गाड़ी रुक जाती। शायद उन्हें अनिता के स्वास्थ्य की भी इतनी फिक्र नहीं थी, हो सकता है कि ऐसी सुन्दर लड़की को देख कर कई बार उनका मन चाहा हो कि उससे बातें करें। आज मौका मिलने पर वह कैसे चूक सकते थे।

बातों का सिलसिला समाप्त हो गया तो कुमार साहब को यों ल[illegible] जैसे अनिता किसी बहाने से खिसक जायगी। वह यह नहीं चाहते थे[illegible] चुनांचे जल्दी में और कोई बात नहीं सूझी तो बोले—'अनिता जी, [illegible] से थोड़ी दूर ऊपर जाकर एक छोटा रेस्टोरेण्ट हैं। रेस्टोरेण्ट भी [illegible] है, एक खपरैल का खुला हुआ कमरा है जो देखने में केवल बरामद[illegible] लगता है। उसके सामने नदी की ओर एक काफी बड़ा चबूतरा है

पर शाम के समय कुर्सियाँ और मेज लगा दी जाती है। रेस्टोरेण्ट बेशक मामूली सा है, परन्तु यहाँ की चाय बहुत बढ़िया होती है। आप एक बार पी लें तो खुद ही मान जायेंगी। कहिये तो वहाँ चलें, आध-पौन घंटा बैठ कर चाय पियें और कुछ गप-शप का मजा उठायें।

अनिता ने कभी सोचा भी नहीं था कि कुमार साहब इस प्रकार का सुझाव देंगे। वह जल्दी में कुछ फैसला न कर सकी कि उसे उनके साथ जाना चाहिए या नहीं। इतना तो वह जानती थी कि ठाकुर साहब को पता चल भी जाय तो वह बुरा नहीं मानेंगे। भला, बुरा मानते भी कैसे ? वह अच्छी तरह जानते थे कि अनिता उनकी मुट्ठी में है और उनसे कट कर उसका कोई भविष्य हो ही नहीं सकता।

अनिता को इस तरह सोच में डूबे देख कर कुमार साहब बोले—अरे, आप किस सोच में डूब गईं ?

अनिता चौंक कर बोली—'जी कोई खास बात तो नहीं सोच रही हूँ।'

कुमार—'शायद आप यह समझती हों कि मैं दूसरी पार्टी का आदमी हूँ और आप दूसरी पार्टी की। अनिता जी, राजनीति में तो ऐसी बातें चलती रहती हैं। चाहे हमारी पार्टियों का कितना भी विरोध हो परन्तु यह तो असंभव है कि मैं ठाकुर साहब को चाय पर बुलाऊँ तो वे इन्कार कर दें, या वह मुझे बुलायें तो मैं इन्कार कर दूँ। इस संसार में सब कुछ चलता है। पार्टी बाजी भी चलती है और एक दूसरे के सामाजिक संबंध भी चालू रहते हैं।'

अनिता सिर हिला कर बोली—'नहीं कुमार साहब। मेरे चुप रहने का अर्थ आप गलत समझे; ऐसा विचार तो मेरे मन में कोई नहीं आया।'

कुमार साहब खुश होकर बोले—

'तो चलिये फिर।'

'चलिये।'

वे दोनों बातें करते हुए रेस्टोरेण्ट की ओर बढ़े। वहाँ पहुँच कर अनिता ने देखा कि कुमार साहब ने बात सच ही कही थी। नदी की सतह से कुछ ऊपर सीमेण्ट का बड़ा सा चबूतरा था, वहाँ बैठने पर चारों ओर से ठण्डी हवा आती थी। चबूतरे के तीन तरफ सीमेण्ट का दो फीट ऊँचा जंगला बना हुआ था। वे दोनों एक कोने में छोटी सी मेज के निकट कुर्सी पर बैठ गये। वहाँ बैठे-बैठे नदी में तैरने वाली नौकाओं को वह देख सकते थे, और मल्लाहों के गीत भी सुन सकते थे।

मन ही मन में अनिता ने उस रेस्टोरेण्ट को इतना पसन्द किया कि उसने निश्चय कर लिया कि वह हर रोज संध्या की चाय उसी जगह पिया करेगी। फिर उसे ख्याल आया कि यदि कुमार साहब का हर रोज उधर का चक्कर लगता होगा तो बड़ी परेशानी होगी क्योंकि वह अपनी किसी सखी के साथ बैठ कर चुपचाप चाय नहीं पी सकेगी। मन का संदेह दूर करने के लिए उसने प्रश्न कर डाला—'कुमार साहब, आपको यह जगह इतनी पसन्द है तो, आप यहाँ हर रोज ही आते होंगे ?

'अनिता जी मेरी इतनी किस्मत कहाँ ! यह नेतागीरी का काम ऐसा है कि मैं रोज शाम के समय आ नहीं सकता। हाँ कभी दूसरे-तीसरे महीने शहर के इस भाग में चला आऊँ तो यहाँ चाय जरूर पीता हूँ।

यह सुनकर अनिता के मन से बोझ सा उतर गया। कुमार साहब ने बैरे को बुला कर चाय का आर्डर दिया।

कुमार साहब शर्मा विद्यार्थी ही थे जब उन्हें राजनीति में दिलचस्पी पैदा हो गई। कालेज और यूनिवर्सिटी में भी वह कोई न कोई पार्टी बना कर हुड़दंग मचाते रहते थे। पढ़ने-लिखने में उनका कोई ध्यान नहीं था। एक बड़ा भाई था जो कारोबार करता था और अपने बाल-बच्चों सहित आराम से जीवन व्यतीत करता था। कुमार साहब ने न कोई काम किया और न शादी की। वह तो मजदूरों और कुलियों की पार्टी बना कर हड़तालें कराया करते थे, और इस बात के स्वप्न देखा करते थे कि एक रोज जब उनकी पार्टी दूसरी सब पार्टियों को हरा देगी तो वह देश के सबसे बड़े नेता कहलायेंगे और मुख्य मन्त्री बनेंगे। उनकी इन हरकतों का नतीजा यह निकला कि उनकी छोटी दो बहनों की शादी भी बड़े भाई को करनी पड़ी। उनका बाप तो बचपन में ही मर चुका था, केवल माँ थी जो सदा अपने बड़े बेटे के साथ रहती थी। यद्यपि उन्होंने अपना जीवन पार्टी को अर्पण कर दिया था, और संसार की दूसरी चीजों से मुँह मोड़ लिया था, फिर भी कभी-कभी अनिता जैसी लड़की को देखकर उनके दिल में गुदगुदी होने लगती। आज तो उन्हें इस बात का भी मौका मिल गया था कि वह अनिता से अकेले में बैठ कर बातें करें। अपने मन में वह समझते थे कि अनिता का स्थान ठाकुर साहब के पहलू में नहीं, बल्कि उनके अपने पहलू में था। आखिर अनिता गरीब घर की लड़की थी, और ऐसी जाति से सम्बन्ध रखती थी कि जिसे समाज में अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता था। परन्तु अपने मन की यह बातें वह खुल कर नहीं कह सकते थे। आखिर वह भी तो छोटे-मोटे नेता थे, और इस बात को समझते थे कि अपना दृष्टिकोण दूसरे के आगे रखने का ढङ्ग कैसा होना चाहिए। इस समय वह कोई भी ऐसी बात कहना नहीं

चाहते थे जिससे अनिता भड़क जाय और भविष्य में उनसे बात करने से भी कतराने लगे। अभी तो वह अनिता को यह विश्वास दिलाना चाहते थे कि वह बड़े ऊँचे विचारों के मनुष्य और ऊँची श्रेणी के नेता हैं। इसका सीधा-सादा तरीका यह था कि वह बेकार की आलोचना न करें, और ठाकुर साहब तथा उनकी पार्टी का विरोध न करें क्योंकि इसका यह परिणाम हो सकता था कि वह अनिता की नजर से गिर जाते। वह इतना अच्छी तरह समझते थे कि यदि आज वह अनिता मन के पर अपना अच्छा प्रभाव डालने में सफल हो गये तो आगे बड़ी सुविधा होगी।

चाय आने तक दोनों पर मौन छाया रहा। अनिता अपने मन में सोच रही थी कि राजनीति की बातें न चले तो अच्छा है, क्योंकि इस समय वह हल्की-फुल्की बातें करने की मूड में थी। वह अपने मन में जल्दी-जल्दी सोचने लगी कि वह खुद ही कोई ऐसी बात शुरू कर दे, वरना नेता जी की गाड़ी चल निकलेगी। जल्दी में कुछ नहीं सूझा तो बोली—'आप क्या इसी शहर में रहते हैं ? मेरा अर्थ है कि आपके माँ-बाप इसी शहर के थे ?'

'जी हाँ। ऐसा ही समझिये। वैसे तो मेरे पिता जी की देहात में छोटी-मोटी जमीदारी थी, परन्तु वे शहर में आकर नौकरी करने लगे, इसलिए हमें आप इसी शहर का ही समझें।

'आपका जन्म तो गाँव में ही हुआ होगा।'

'जी नहीं। मेरा जन्म यहीं हुआ है। हाँ मेरे बड़े भाई साहब का जन्म गाँव में हुआ था।'

इतना कह कर कुमार साहब ने अपने खानदान के सम्बन्ध में कुछ और बातें भी बताईं। अनिता ने पूछा—'आपके बाल-बच्चे भी यहीं रहते हैं ?'

'बाल-बच्चे ?'

'अजी··· ···बाल-बच्चे कैसे ? मेरी तो अभी शादी ही नहीं हुई।'

'चाय का एक छोटा सा घूंट भर कर अनिता ने प्याला मुंह से अलग हटाया, और कुछ आश्चर्य प्रकट करती हुई बोली—'अरे ! क्या आपने अभी तक शादी ही नहीं की ?'

कुमार साहब ने सोचा कि कहीं अनिता यह न समझ बैठे कि किसी कारण उनकी शादी हो ही नहीं सकती, चुनांचे वह जल्दी से बोले—'रिश्ते तो बहुत आते रहे मैंने शादी की ही नहीं।'

'क्यों ?'

अनिता को इन बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी लेकिन वह मन में खुश थी कि जैसी हल्की-फुल्की बात वह चाहती थी वैसी ही हो रही है। उधर न जाने क्यों कुमार साहब भी खुश थे कि यह विषय चल निकला है। शायद वह अनिता को अच्छी तरह समझा देना चाहते थे कि अभी उनके मन का सिंहासन सूना ही पड़ा है, और यह भी कि यदि कोई लड़की चाहे तो उस सिंहासन पर विराजमान हो सकती थी।

अनिता फिर मुस्करा कर बोली—'आपने शादी की क्यों नहीं ?'

'अब क्या बताऊं ? मैं उस समय शादी को कोई महत्व नहीं देता था। और मैंने अपना जीवन जनता के लिए अर्पण कर दिया था।'

अनिता होशियार लड़की थी। उसने बड़े मजे की बात पूछी—'अच्छा तो अब आपका इसके बारे में क्या विचार है ?'

'किसके बारे में ?'

'यही शादी, पत्नी आदि के बारे में।'

अनिता की यह बात सुनकर कुमार के मन में गुदगुदी सी होने लगी। पहले तो कुछ शर्मा गये, फिर बोले—'देखिये उन दिनों तो

कुमार साहब फिर खुश हो गये। उन्हें लगा कि यह बात तो अनिता ने यों ही कह दी थी, वरना उसके मन में तो कोई और ही बात है। वह क्या बात है, यह कुमार साहब अच्छी तरह समझते थे। उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि अनिता इतनी जल्दी बेतकल्लुफ हो जायगी। उनके मन में एक तूफान सा आ गया, लेकिन उन्होंने अपने आपको सम्भालने की पूरी-पूरी कोशिश की, क्योंकि उन्हें इस बात का भी डर लगा हुआ था कि कहीं इस मौके पर उनसे जरा सी भी भूल हो गई तो यह खूबसूरत चिड़िया उनके हाथ से निकल जायगी।

उनको इस तरह चुप देख कर अनिता ने पूछा—'आप खामोश क्यों हो गये? क्या आपको मेरा सुझाव पसन्द नहीं आया?'

'जी नहीं, भला मुझे क्या आपत्ति हो सकती है? जब आप स्वयं दिलचस्पी ले रही हैं तो भला मैं उसमें टाँग अड़ाने वाला कौन हूँ?'

'तो फिर मुझे इस बात की इजाजत है कि मैं आपके लिए कोई अच्छी लड़की ढूंढ़ निकालूं?'

कुमार साहब को इन बातों में बड़ा आनन्द आ रहा था, फौरन ही बोले—'हाँ-हाँ, आप अवश्य तलाश कीजिये।'

'वैसे आप निश्चिन्त रहिये, जब मैं कोई लड़की ढूंढ़ लूंगी तो आपकी उससे मुलाकात भी करा दूंगी, ताकि आप दोनों एक दूसरे को पसन्द कर लें।'

कुमार साहब ने मन में सोचा कि अनिता दूसरी लड़की का बहाना बना कर दर-असल अपने ही दिल की बात कह रही है। जब अनिता खुद ही अपने मन की बात कह रही थी तो फिर उन्हें अपनी ओर से कुरेद करने की क्या जरूरत है? सभी लड़कियाँ शर्मीली होती हैं, इस-लिए अनिता का इतनी बातें कह देना ही काफी है। आज की बात

जहाँ की तहाँ रह जानी चाहिए। अब तो अनिता भविष्य में फिर इस बात को आगे बढ़ायेगी ही। यह सब कुछ सोच कर उन्होंने कहा—'अनिता जी, मुझे मालूम नहीं था कि आप मेरी इस समस्या में इतनी गहरी दिलचस्पी लेंगी। इसलिए में यह सब कुछ आप ही पर छोड़ता हूँ, जो आपको जी चाहे सो कीजिये।'

बात यहाँ तक पहुँचकर रुक गई। अब अनिता की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि वह और किस विषय पर बात शुरू करे। उधर कुमार साहब भी इस मौन से परेशान थे। वह डरते थे कि यदि कोई बात-चीत न हुई तो अनिता वहाँ से चलने का सुझाव दे देगी। इसलिए यों ही बात छोड़ने के लिए कह दिया—'अनिता जी आपके लिए भी मेरा एक सुझाव है। कहिये तो अपना सुझाव आपके आगे रखूं?'

अनिता घबरा गई कि कहीं कुमार साहब उसकी शादी की बात न छेड़ दें। परन्तु कुमार साहब इतने मूर्ख नहीं थे, उन्होंने केवल यही कहा—'मेरा सुझाव यह है कि आप दूसरी पार्टियों से भी सम्बन्ध स्थापित करें।'

'कुमार साहब मुझे इन सब बातों से क्या लेना है? ठाकुर साहब जो काम कह देते हैं सो मैं कर देती हूँ। मुझे राजनीति की बातों में, कोई विशेष दिलचस्पी नहीं है।'

'चाहे आपको दिलचस्पी न हो, परन्तु इस क्षेत्र में आप आ तो चुकी हैं। इसलिए दूसरी पार्टियों के बारे में और उनके दृष्टिकोण के बारे में आपको कुछ न कुछ ज्ञान तो होना ही चाहिए। अच्छा, यह तो बताइये कि आप कभी मेहर बाबा से मिली हैं?'

'वह वड़े अच्छे आदमी हैं। मेहर वावा 'मानवता पार्टी' के नेता हैं। उम्र सत्तर के आस-पास है। आप उनसे भी मिलिये और दूसरे नेताओं से भी भेंट कीजिये।'

इसके वाद कुमार साहव ने काफी लम्बा भाषण दिया। अनिता ने पीछा छुड़ाने के लिए कह दिया कि आप कहते हैं तो जरूर मैं मिलूंगी।

# तीन

उस शाम कुमार साहब की अनिता से जो बात-चीत हुई, उसमें से याद रखने वाली तो एक भी बात नहीं थी, और न अनिता को वह बातें याद रहीं। परन्तु मानवता पार्टी के नेता मेहर बाबा के बारे में जो कुछ कुमार ने कहा था वह उसे नहीं भूली। मेहर बाबा का नाम उसने पहले भी सुना था। परन्तु उनके बारे में कुछ अधिक जानने की जरूरत महसूस नहीं हुई। उसने अखबारों में मेहर बाबा के बारे में थोड़ा-बहुत पढ़ा भी था, लेकिन उसने कभी इस बात की जरूरत नहीं महसूस की कि मेहर बाबा के विचार और सिद्धान्त क्या हैं? परन्तु कुमार साहब की जबानी मेहर बाबा की प्रशंसा सुन कर उसने तय किया कि किसी रोज वह उनका भाषण सुनने जायगी।

मेहर बाबा नाम से ही उसे एक आकर्षण महसूस हुआ। उसने अखबारों में छपे उनके फोटो भी देखे थे। यों तो सभी नेता एक दूसरे को गालियाँ देते रहते थे, और एक दूसरे की कड़ी आलोचना करते रहते थे, परन्तु उसने किसी पुरुष को मेहर बाबा के बारे में अनुचित शब्द कहते नहीं सुना था। उसने यही अनुमान लगाया कि चाहे

किसी का मेहर बाबा से राजनैतिक मामलों में कितना भी मतभेद हो लेकिन व्यक्तिगत रूप में सभी उन्हें मान देते थे।

उस रात इसी प्रकार की बातें सोचते-सोचते वह सो गई। दूसरे दिन जब वह ठाकुर साहब के यहां पहुँची तो वह कुछ और लोगों के साथ विचार-विनिमय कर रहे थे। उस समय अनिता ने ठाकुर साहब के चेहरे का निरीक्षण किया। उनके चेहरे के नाक-नक्शे से साफ दिखाई पड़ता था कि ठाकुर साहब किसी खास समस्या में गम्भीरता से विचार-विनिमय कर रहे हैं।

इसी प्रकार के विचार आ-जा रहे थे कि इतने में जो लोग ठाकुर साहब के पास बैठे थे वे उठ कर चले गये। अब कमरे में उन दोनों के सिवा और कोई नहीं रह गया था।

एकाएक ठाकुर साहब ने भारी स्वर में कहा—'अनिता !'

अनिता यों चौंकी जैसे उन्होंने उसके मन के विचार समझ लिये हों, हालांकि उस वक्त ठाकुर साहब उसकी ओर देख भी नहीं रहे थे। अनिता ने तुरन्त उत्तर दिया—'जी !'

'इधर आओ।'

अनिता को लगा कि आज ठाकुर साहब के स्वर में थोड़ी सी कठोरता आ गई थी, वह अब भी उसकी ओर नहीं देख रहे थे।

अनिता उठकर उनके निकट जा बैठी, और फिर बोली—'जी।'

ठाकुर साहब का चेहरा काफी गम्भीर हो रहा था बिलकुल वैसा ही जैसा कि किसी को डाटते समय हो जाता था। अनिता ने अपने दिमाग पर जोर डाल कर सोचा लेकिन वह समझ नहीं पाई कि उससे ऐसी कौन सी भूल हो गई थी जिसके कारण ठाकुर साहब को उस पर क्रोध आ रहा है।

ठाकुर साहब फिर बोले—'तुम कल शाम कहाँ थीं ?'

ठाकुर साहब से अनिता को इस प्रकार के प्रश्न की आशा नहीं थी। वह ऐसी हड़बड़ा गई कि पल भर को वह बिलकुल ही भूल गई कि पिछली शाम वह कहाँ थी ? फिर एकाएक सारी बात याद आ गई। वह कुमार साहब के साथ थी परन्तु उत्तर में उसने केवल इतना ही कहा—'कल शाम मैं नदी के किनारे घूमने चली गई थी।'

'साथ और कौन था ?'

ठाकुर साहब का भारी स्वर सुनकर अनिता समझ गई कि उन्हें कुमार साहब के बारे में पता चल गया है, इसलिए उस बात को छिपाना अच्छा नहीं होगा। वैसे भी अनिता के मन में कोई चोर नहीं था। उसने यह समझ कर मुलाकात की थी कि ठाकुर साहब इसे पसन्द नहीं करेंगे। उसने साफ-साफ कह दिया—'अक्सर तो मैं एक न एक सहेली को साथ ले जाती हूँ परन्तु कल कोई नहीं मिला इसलिए अकेली ही चली गई।'

'तो ?'

'वहाँ कुमार साहब से भेंट हो गई थी।'

'कौन कुमार साहब ?'

अनिता समझ गई कि ठाकुर साहब झूठ-मूठ को अनजान बन रहे हैं। बोली—'वही कुली पार्टी के नेता।'

'तुम उन्हें कब से जानती हो ?'

'कल से पहले तो मैं उनके बारे में कुछ भी नहीं जानती थी, सिवा इसके कि वह भी एक पार्टी के नेता थे। व्यक्तिगत रूप में मेरी उनकी मुलाकात कभी नहीं हुई।'

अब ठाकुर साहब ने पहली बार नजर उठाकर उसकी ओर देखा। उनकी आँखें लाल थीं, गुस्से के कारण नहीं, बल्कि रोज संध्या के समय शराब पीने की वजह से उनकी आँखें सदा ही लाल रहती थीं यानी बिना क्रोध के भी लाल, और जब बहुत क्रोध आता था तो वह दहकता हुआ अंगारा बन जाती थीं।

अनिता ने फिर विश्वास दिलाते हुए कहा—'ठाकुर साहब मैं आप को सच्चे दिल से बता रही हूँ कि कुमार साहब से मेरी कल से पहले कभी मुलाकात नहीं हुई। हाँ यों ही किसी जल्से में उन्हें देख लिया हो, या एकाध बातें हो गई हों, तो उसकी कसम मैं खा नहीं सकती। कल भी हमारी मुलाकात हरगिज न होती, परन्तु वह इत्तफाक से वहाँ पहुँच गये। मैं तो उनसे पीछा छुड़ाना चाहती थी परन्तु वह तो हाथ धोकर मेरे पीछे ही पड़ गये। उन्होंने एक प्याला चाय भी पिलाया और वे सिर-पैर की बातें करते रहे।'

इतना सुन कर ठाकुर साहब हँस दिये। उन्हें खुश देख कर अनिता को भी कुछ इतमिनान हुआ और उसकी घबराहट दूर होने लगी।

ठाकुर साहब फिर बोले—'क्या-क्या बातें हुई थीं ?'

जिस ढंग से उन्होंने यह प्रश्न किया था उससे अनिता को लगा कि वे कुरेद करने के विचार से नहीं पूछ रहे थे, बल्कि साधारण ढंग से ही बात कर रहे हैं। अनिता मुस्करा कर बोली—'बातें तो बड़ी मजे की हुईं।'

ठाकुर साहब ने दिलचस्पी लेते हुए कहा—'अच्छा ! हम भी तो सुनें कि ऐसी क्या बातें हुईं ?'

'इतना तो मैं जानती थी कि वे बड़े बातूनी हैं और खासकर उनके राजनीति के विषय पर भाषण देने से मुझे बहुत ही डर लग रहा था।'

ठाकुर साहब इस बात से खुश हो गये क्योंकि इससे पता चलता था कि अनिता को दुर्गा पार्टी की नीति में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह हँसकर बोले—'तुमने उन्हें टालने की कोशिश नहीं की ?'

'जी कोशिश तो की, परन्तु आप तो जानते ही हैं कि वह टलने वाले असामी नहीं हैं।'

'यह तो तुम ठीक कहती हो, बड़े ही विचित्र किस्म का आदमी है। उसकी इस आदत से तो अच्छे-अच्छे लोग घबराते हैं। भला एक लड़की क्यों न घबरायेगी ?'

'जी हाँ ! मैंने विषय का रुख बदलने के लिए उनसे निजी बातें शुरू कर दीं। उनके खानदान और गृहस्थी के बारे में, साथ ही मैंने खास तौर पर उनकी शादी का प्रश्न भी उठाया।'

यह सुनकर ठाकुर साहब को कुछ और मजा आया, गहरी दिलचस्पी लेते हुए उन्होंने पूछा—'अच्छा तो इसके बारे में उसने क्या कहा ?'

'जब मैंने उनके बाल-बच्चों के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि बड़े भाई साहब की शादी हो चुकी है, परन्तु मैं……।'

इस तरह अनिता ने सारी बातें बता दीं। ठाकुर साहब उसकी बातों का आनन्द लेते रहे। अन्त में जरा से गम्भीर होकर बोले—'अनिता, तुम समझदार लड़की हो इसलिए मैं तुम्हें किसी से मिलने-जुलने से मना करने की जरूरत नहीं समझता हूँ। बस केवल इस बात का ध्यान रखो कि तुम मेरे साथ काम करती हो और मैं एक पार्टी का बड़ा नेता हूँ, इसलिए तुमसे कोई ऐसी हरकत नहीं होनी चाहिए और न तुम्हारे मुँह से कोई ऐसी बात निकलनी चाहिए जिससे हमारी पार्टी की बदनामी हो या हमारा कोई भेद खुल जाय।'

पहले तो अनिता डर गई थी, परन्तु उनकी पूरी वात सुनकर उसे मिनान हो गया कि उन्हें इस वात पर क्रोध नहीं आया। इसके थ ही अनिता यह भी समझ गई कि उसे इस धोखे में नहीं रहना ाहिए कि ठाकुर साहव को उसकी किसी हरकत का ज्ञान नहीं हो कता। यह ठीक है कि उन्होंने उसके पीछे जासूस नहीं लगा रखे थे, किन इस वात की सम्भावना तो सदा ही हो सकती थी कि उसकी किसी भी हरकत का ठाकुर साहव को ज्ञान हो सकता था। यह सव कुछ समझते हुए अनिता ने ठाकुर साहव की तसल्ली के लिए कहा—'ठाकुर साहव, जैसा कि मैं पहले भी कह चुकी हूं कि यदि आपको कोई आपत्ति हो तो मैं विना आपकी आज्ञा के कभी भी किसी से न मिलूं।'

ठाकुर साहव काफी चालाक थे। उन्होंने यही वेहतर समझा कि अनिता को ढील देकर ही रखें, ताकि वह वहुत चौकस न होने पाये। यदि उन्होंने रोक लगा दी तो इस वात का भी डर था कि अनिता चोरी-छिपे ही कोई ऐसी हरकत कर वैठे जिसका उन्हें पता भी न चलने पाये। वैसे भी अनिता ऐसी स्थिति में नहीं थी कि उनसे नाता तोड़ने की वात सोच सके। इसलिए उन्होंने वड़ी उदारता से कहा—'नहीं अनिता, ऐसी कोई वात नहीं। तुम्हें जैसे कुमार साहव ही मिल गये थे, तो क्या तुम मेरी आज्ञा लेती फिरोगी। तुम जहाँ जी चाहे घूमो, जिससे जी चाहे मिलो, परन्तु केवल उन वातों का ख्याल रखना जो मैंने अभी-अभी तुम्हें वताई हैं।'

'जी, वहुत अच्छा।'

इतने में ही ठाकुर साहव का एक आदमी अन्दर आया और ठाकुर साहव के निकट जाकर वोला—'ठाकुर साहव मैकू आपसे मिलना चाहता है।'

'कौन मैकू ?'

'वही चमार।'

'ओह, वह बुड्ढा-बुड्ढा सा ?'

'जी हाँ, वही जिसकी आयु पचास वर्ष के लगभग होगी।'

'हाँ, याद आ गया; अच्छा उसे अन्दर भेज दो।'

यह सुनकर वह कर्मचारी तो कमरे के बाहर चला गया और पल भर बाद दरवाजे में मैकू की शक्ल दिखाई दी। उसका बदन एकहरा, और डील-डौल बड़ा था, मुँह में पान भरा था जिसका रंग उसकी बाछों तक फैला हुआ था। वह शक्ल से ही पूरा गुण्डा दिखाई देता था। अन्दर आते ही उसने पहले तो अनिता की ओर घूरकर देखा, और फिर ठाकुर साहब के निकट पहुँचकर दोनों हाथ जोड़ते हुए ऊँचे स्वर में बोला—'अन्नदाता!'

कहने को तो वह ठाकुर साहब को 'अन्नदाता' कह रहा था परन्तु उसके रंग-ढंग से लगता था कि वह भी अपने आपको बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति समझता है।

ठाकुर साहब ने अपनी मूँछ को उँगलियों से मरोड़ते हुए कहा—'आओ, मैकू! कहाँ कैसे आना हुआ ?'

उत्तर देने से पहले मैकू पाँव के बल फर्श पर बैठने लगा तो ठाकुर साहब बोले—'आओ मैकू इधर बैठो ना कुर्सी पर।'

मैकू अपने बड़े-बड़े हाथ हवा में उठा कर बोला—'नहीं अन्नदाता, हमारे बैठने का स्थान तो आपके चरणों में ही है।'

'लगता है कि किसी खास काम से आये हो ?'

मैकू ने बिना कुछ कहे पल भर को अनिता की ओर देखा। ठाकुर साहब बोले—'तुम निश्चिन्त होकर कहो। क्या बात है ?'

अनिता को लग रहा था कि मैकू खूब पिए हुए था, क्योंकि उसकी चाल और स्वर में एक प्रकार की लड़खड़ाहट थी। मैकू बोला—'क्या कहें अन्नदाता आपके राज में पुलिस ने हमारे नाक में दम कर रखा है।'

'क्यों खैरियत तो है ? आखिर हुआ क्या ?'

'बात यह है अन्नदाता कि हमारे मुहल्ले में एक बाबू साहब रहते हैं। हीरा लाल उनका नाम है। उन्होंने पुलिस में मेरे छोटे लड़के की रिपोर्ट कर दी है। जिसका नतीजा यह हुआ कि पुलिस मेरे लड़के नन्हें के पीछे पड़ गई है।'

'अच्छा-अच्छा, तुम्हारे उस लड़के को तो मैंने देख रखा है।'

'जी हाँ, आपने जरूर देखा होगा। अभी उसकी उम्र केवल अट्ठारह वर्ष की होगी, पर ऐसे हाथ-पाँव निकाले हैं कि सैकड़ों में अलग पहचाना जाता है।'

'अच्छा, वही जो कसरत और कुश्ती लड़ता है ?'

'जी हाँ, बिलकुल वही।'

'हाँ भई, ज्वान तो अच्छा है। परन्तु उसे समझा देना जवानी सँभालकर रखने की चीज है।'

'अन्नदाता उसकी जवानी कहाँ तक साथ देगी, जब हमारी पुलिस उसे डाँटे, फटकारे और हड़कायेगी ?'

'भई, पुलिस क्यों हड़काती है ? मेरी समझ में तो कुछ नहीं आया।'

'क्या बतायें सरकार हीरालाल ने पुलिस में रिपोर्ट कर दी है और पुलिस हाथ धोकर उसके पीछे पड़ गई है। दो-तीन दिन तो इसी आँख-मिचौनी में गुजरे, नन्हें उनके हाथ ही नहीं आया; परन्तु आज वह

पनवाड़ी की दुकान पर खड़ा बीड़ी ले रहा था तो पुलिस ने जा दबोचा और उसे थाने ले गई। मैं तो घबराया हुआ आपके पास चला आया हूँ। अन्नदाता,' नन्हें आपका बड़ा भक्त है। आपके वोटों के लिए अभी से उसने प्रचार शुरू कर दिया है और दिन-रात इसी कार्य में लगा रहता है। पर क्या कहूँ यह पुलिस वाले बड़े जालिम होते हैं, वे तो मार-मार कर उसका भर्ता बना देंगे।'

'लेकिन मैकू, कुछ तो इसका कारण होना चाहिए ?'

'जी कारण क्या होना ? बस यह समझ लीजिये कि करे कोई मरे कोई। बाबू हीरालाल बड़े शरीफ खानदान के बनते हैं। उनकी एक लड़की है जो बन-ठन कर कालेज जाती है और दायें-बायें आँखें भी मटकाती रहती है। हर समय दो-चार आवारा उसके पीछे रहते हैं। नन्हें का कहना है कि तीन-चार रोज पहले वही लड़की पनवाड़ी की दुकान के आगे से गुजरी। नन्हें वहाँ पान खाने गया हुआ था। न जाने किसने लड़की को कुछ बात कह दी। बस फिर क्या था लड़की सैंडिल उतार कर नन्हें की ओर दौड़ी। नन्हें को ताव आ गया, उसने लड़की के उठे हुए हाथ को कलाई से पकड़कर रोक दिया और सैंडिल छीन कर दूर फेंक दी। बस अन्नदाता इतनी सी बात थी, जिसका बतंगड़ बन गया। लड़का बेचारा चुप-चाप घर चला आया, लेकिन हीरालाल को चैन नहीं पड़ा। वह हमारे घर आकर हमें सौ-सौ गालियाँ देने लगा। नन्हें ने बहुत कुछ अपने गुस्से को पिया परन्तु फिर उससे नहीं रहा गया। उसने बाहर निकल कर बाबू साहब को दो-चार हाथ दे दिये। बस फिर क्या था, बाबू जी ने डाक्टर का झूठा सर्टीफिकेट बनवा कर थाने में रिपोर्ट ठोंक दी। गरीब आदमी पर हर कोई चढ़ दौड़ता है। इसीलिए पुलिस उसे पकड़ कर ले गई।'

'यह कितनी देर की वात है ?'

'यही एक घण्टे पहले को ।'

मैकू का लड़का नन्हें मुहल्ले का माना हुआ गुण्डा था । उससे हर शरीफ आदमी वच कर रहता था । वह वड़ा ही हथछुट था । पराई वहू-वेटियों से छेड़-छाड़ करने में उसे कोई संकोच नहीं होता था । हीरालाल वावू को तो अनिता ने भी दो-चार वार आते-जाते देखा था । वेचारे दुवले-पतले और डरपोक आदमी थे । अनिता को तो यह सारी कहानी विल्कुल गढ़ी हुई लगी । पर वह मुँह से कुछ नहीं वोली, उसने सोचा कि ठाकुर साहव जो कुछ उचित समझेंगे करेंगे ।

ठाकुर साहव ने उस थाने के दरोगा का नाम पूछा और फिर उसी समय टेलीफोन उठा कर उससे वात-चीत करने लगे—'हेलो-हेलो'''।'

दूसरी तरफ से आवाज आई—'कौन साहव हैं ?'

'मैं ठाकुर मदन सिंह वोल रहा हूँ ।'

'नमस्ते, कहिये कैसी तवियत है ?'

'अच्छी है ! आपके नाके में अभी-अभी नन्हें नाम का एक लड़का लाया गया है ।'

'जी हाँ ।'

'अरे भई वह अपना आदमी है । आप किसी के झाँसे में न आयें और उसे फौरन छोड़ दें ।'

'जैसा आप कहें ।'

'हाँ-हाँ मेरी जिम्मेदारी है । जो होगा सो निपट लूंगा । साथ ही मैं सुपरिण्टेण्डेण्ट साहव को भी फोन कर देता हूँ । यह तो आप जानते ही हैं कि आपके साहव मेरे खास मित्रों में से हैं ।'

'ठीक है ठाकुर साहव ।'

'अच्छा तो आप लड़के को फौरन छोड़ दीजिये ।'

'ठीक है ।'

'धन्यवाद ।'

यह बातें करके ठाकुर साहब ने फोन का चोंगा नीचे रख दिया और मैकू की ओर देखते हुए कहा—'अब तुम बेफिक्र रहो । मेरे ख्याल में तुम्हारे घर पहुँचने से पहले नन्हें भी पहुँच चुका होगा ।'

इतना सुनकर मैकू ने दोनों हाथ उठाते हुए कहा—'अन्नदाता, आप धन्य हैं । भगवान करे आपकी गद्दी बनी रहे । मैं जाता हूँ । नमस्ते, सरकार ।'

'नमस्ते ।'

अब मैकू पहलवानों की तरह टाँगें फैलाये धीरे-धीरे अकड़ कर चलता हुआ दरवाजे में से बाहर निकल गया । अनिता ठाकुर साहब का यह न्याय देख कर चकित रह गई । शायद ठाकुर साहब उसके चेहरे से कुछ भाँप गये, फौरन बोले—'क्या किया जाय ? यह लोग बड़े काम के आदमी हैं । आज हम इनकी रक्षा न करेंगे तो कल को कौन हमारा साथ देगा ? वोट दिलाने में इनका हाथ होता है ।'

अनिता बेचारी और कुछ तो न कह सकी, केवल इतना बोली—'परन्तु ठाकुर साहब, देखने में तो बाबू हीरालाल बेचारे बड़े भले लगते हैं ।'

'हो सकता है । परन्तु अनिता, भले आदमियों को चाहिए कि वह ख्वामख्वाह दूसरों से उलझते न फिरें ।'

अनिता को यह बात बड़ी अजीब लगी । उसकी समझ में नहीं आया कि एक भला आदमी ख्वामख्वाह गुण्डों के साथ क्यों उलझेगा । उसकी तो इतनी हिम्मत ही नहीं हो सकती ।

यह बातें अनिता के मन में ही रहीं, आखिर वह ठाकुर साहब से क्या कहती ?

इतने में ही फिर वही कर्मचारी अन्दर आया और वोला—'ठाकुर साहव देहात से वाग सिंह आया है ।'

वाग सिंह का नाम सुन कर ठाकुर साहव ने अपने घने नेत्र ऊपर को उठाये और भारी स्वर में वोले—'अकेला है; या कोई और भी उसके साथ है ?'

'जी हाँ कोई आधे दर्जन आदमी उसके साथ हैं ।'

'अच्छा तो उन्हें अन्दर भेज दो ।'

'बहुत अच्छा ।'

कर्मचारी इतना कहकर बाहर गया और दूसरे ही क्षण वाग सिंह अन्दर चला आया । उसके साथ छः तगड़े सण्ड-मुशण्ड भी थे, जिनकी मूंछें तनी हुई थीं और हाथों में लम्बी-लम्बी लाठियाँ थीं ।

उन्हें देख कर अनिता को वड़ा अजीव सा लगा, क्योंकि उनमें से हर एक गुण्डा दिखाई देता था । उनकी शक्ल ऐसी नहीं थी कि जिसे देख कर किसी भी भले आदमी को खुशी होती या कोई शरीफ आदमी उनका अपने घर में स्वागत करता । परन्तु उन्हें देखकर ठाकुर साहव का चेहरा खिल उठा । उन्होंने वड़ी खुशी से उनका स्वागत किया । वाग सिंह ने अपने साथियों का परिचय कराते हुए कहा—'ठाकुर साहव यह अपने ही पट्ठे हैं ।'

ठाकुर साहव की वाँछें खिली जा रही थीं । उन्होंने वड़े गर्व से सवकी ओर वारी-वारी से नजर डाली तो वाग सिंह फिर वोला—'इन्हें तो केवल नमूने के तौर पर अपने साथ लेता आया हूं । आप विश्वास रखिये कि हमारे पास एक से एक पट्ठा मौजूद है ।'

ठाकुर साहब ने हाथ से इशारा करते हुए कहा—'क्यों नहीं-क्यों नहीं, आओ भई बैठो सब लोग। अरे भई कोई है? अन्दर आलमारी में पान लगे रखे हैं, उठा तो लाओ। सिगरेट की प्लेट भी लेते आना।'

ठाकुर साहब का एक नौकर पान और सिगरेट उठा लाया। हर पट्ठे ने चार-चार पान कल्ले में दबाये, और एक-एक सिगरेट होठों में दबाकर सुलगा लिया।

अब ठाकुर साहब बोले—'हाँ भई बाग सिंह, क्या खबर है?'

'खबर तो सारी अच्छी है जी, जनता को केवल आप ही का इन्तजार है।'

ठाकुर साहब—'क्या कहूँ, मैं तो इतना व्यस्त रहा कि निकल ही नहीं पाया।'

बाग सिंह—'इससे तो बड़ा नुक्सान है ठाकुर साहब क्योंकि दूसरी पार्टियों के नेता खूब चक्कर लगा रहे हैं।'

ठाकुर साहब ने माथे पर बल डाल कर आश्चर्य में आ पूछा—'चक्कर लगा रहे हैं? मैं पूछता हूँ बाग सिंह तुम्हारे और इन पट्ठों के होते हुए दूसरों की यह मजाल?'

बाग सिंह ने मूँछों को ताव देते हुए कहा—'जी इस तरह चक्कर लगाने से क्या होता है? जरा जलसा करके दिखाये तो हम मानें।'

'अच्छा, तो अभी कोई जलसा-वलसा नहीं हुआ?'

बाग सिंह ने सीना फुला कर कहा—'अजी जलसा हो ही कैसे सकता है? क्या हमने चूड़ियाँ पहन रखी हैं? जरा जलसा करके तो देखे, हम उन्हें नाकों चने न चबवा दें तो हमारा नाम नहीं।'

ठाकुर साहब ऊँचे स्वर में बोले—'शाबाश! शाबाश! बस इस बात का ख्याल रखो कि उनका कोई जलसा सफल न होने पाये।'

'लेकिन वाग सिंह, यह बात मैं फिर दोहरा दूं कि किसी तरह से
ी हमारी मूंछ नीची नहीं होनी चाहिए। बस इतना समझ लो कि हम
ाकुर हैं, इसलिए हमारी किसी तरह से बदनामी नहीं होनी चाहिए।'

वाग सिंह ने अपने सीने पर हाथ रखते हुए कहा—'आप भी ठाकुर, हम भी ठाकुर। मैं ठाकुर की इज्जत रखना खूब जानता हूँ। बस एक बार मौका तो दीजिये आप।'

'मौका तो आज ही आ गया, इसी इतवार को जलसा होगा। शामियाने, कुर्सियाँ, झण्डे, झण्डियाँ, लाउड स्पीकर आदि सब का प्रबन्ध हो जाना चाहिए।'

'वह तो होगा ही, परन्तु ठाकुर साहब सबसे आवश्यक बात तो आप भूल ही गये।'

'वह क्या ?'

'अजी यही अपने लट्ठबाज।'

यह सुनकर ठाकुर साहब ने मुँह फाड़ कर कहकहा लगाया और बोले—'अरे भई वह तो तुम्हारा क्षेत्र है। उसके बारे में मैं क्या कह सकता हूँ ? तुम जो चाहो सो करो।'

इस तरह वह सब मिल-जुलकर हँसी-मजाक करते रहे। अनिता ने ठाकुर साहब को इतनी वेतकल्लुफी से हँसते हुए पहले कभी नहीं देखा था। अजीब बात यह थी कि यदि वहाँ कोई और लोग होते तो ठाकुर साहब बाग सिंह से बड़े रोब में बात करते, परन्तु अकेले में तो ऐस वेतकल्लुफ हो रहे थे जैसे वे बिल्कुल एक बराबर के मित्र हों। अनित को मन में यह सोचना अच्छा तो नहीं लगा, परन्तु वे सब उसे दिखाई दे रहे थे जैसे डाकुओं का टोला बैठा कहीं डाका डालने योजना बना रहा हो।

एकाएक ठाकुर साहब को कुछ याद आया तो गम्भीर स्वर में बोले—'लेकिन बाग सिंह !'

बाग सिंह भी पक्का खुशामदी टट्टू था । ठाकुर साहब की शक्ल बदलती देख कर वह भी फौरन गम्भीर होकर बोला—'जी ठाकुर साहब ।'

'भई, और सब पार्टियों से तो हम निबट लेंगे, परन्तु एक पार्टी ऐसी है जिससे निबटना कुछ कठिन लग रहा है ।'

'कौन सी पार्टी ?'

'मानवता पार्टी एक ऐसी है कि जिससे......।'

बाग सिंह बात काटकर बोला—'ठाकुर साहब जहाँ तक हमारा सम्बन्ध है, हम तो वहाँ भी लट्ठ घुमा देंगे ।'

'नहीं भई, यही तो कठिनाई है । वहाँ लट्ठ घुमाना ठीक नहीं होगा ।'

'तो फिर आप ही बताइये ?'

'तुम तो जानते ही हो कि इस पार्टी के नेता मेहर बाबा हैं । सारे देश में उनको बड़ी आदर की दृष्टि से देखा जाता है । वह भी यहाँ जलसा तो करेंगे ही, परन्तु यदि वहाँ पर हमने कोई लट्ठबाजी वाला काम किया तो उससे हमारी पार्टी की बड़ी बदनामी हो जायगी । पब्लिक हमारा विरोध करने लगेगी । इसका प्रभाव वोटों पर भी पड़ेगा इसीलिए मैं तुमको सावधान करना चाहता हूँ कि उनके जलसे में इस प्रकार का कोई हुड़दंग नहीं होना चाहिए । समझे ?'

'जी समझा । परन्तु ठाकुर साहब, हम उन्हें इतनी ढील कैसे दे सकते हैं ?'

'भई देखो, इस समस्या के लिए हमें कुछ और कदम उठाने पड़ेंगे।'

'जो आप चाहेंगे हम वही करेंगे।'

'पहली बात तो यह है कि इस बात का पूरा-पूरा ख्याल रखा जाय कि उनके जलसे में हमारी ओर से कोई हुडदंगबाजी न होने पाये, वरना हमारे किये-कराये पर पानी फिर जायगा। यह बात मैं इसलिए दोहरा रहा हूँ ताकि तुम अपने सब आदमियों को अच्छी तरह समझा दो।

'जी बहुत अच्छा।'

'हाँ, अन्दर ही अन्दर उनके कर्मचारियों को खिला-पिला कर, घूस देकर, या उन्हें कोई और लोभ देकर उनकी पार्टी से तोड़ लो। इस प्रकार के जितने सदस्य तोड़े जा सकें उतना ही अच्छा है।'

'आपका मतलब यह है कि लट्ठ को छोड़कर और जिस ढंग से भी उन्हें असफल बनाया जा सके, हम बनाने की कोशिश करें।'

'तुम ठीक समझे।'

हर मनुष्य को अपना-अपना उल्लू सीधा करने की फिकर होती है। बेशक बाग सिंह सच्चे दिल से ठाकुर साहब के साथ था, परन्तु वह इस मौके का फायदा उठाकर अपने हाथ भी अधिक से अधिक रंग लेना चाहता था। चुनाँचे वह अपना चेहरा ठाकुर साहब के कान के पास ले जाकर बड़े खुशामदाना स्वर में बोला—'परन्तु ठाकुर साहब, इसके लिए और अधिक धन की जरूरत पड़ेगी।'

ठाकुर साहब माथे पर बल डालकर बोले—'मेरी समझ में नहीं आता कि तुम बार-बार यह बात क्यों उठाते हो?' जब हमने एक बार कह दिया कि रुपया पानी की तरह बहाया जायगा तो फिर बेकार घबराने की क्या जरूरत है?'

बाग सिंह दाँत निकाल कर हँसा—'अजी ठाकुर साहब, घबराता कौन है ? आप तो राजा हैं राजा। वैसे तो मेरे पास कुछ रुपया है। परन्तु……।'

'तुम बेफिकर रहो, अब तुम चलकर कुछ खाओ-पिओ और अपने साथियों को भी खिलाओ-पिलाओ। जाते समय तुम्हें काफी धन दे दिया जायगा। यही नहीं बल्कि इस इतवार को अब मैं तुम्हारे इलाके में आऊँगा तो अपने साथ और भी धन लेता आऊँगा। अरे बाग सिंह, रुपया तुम आँख बन्द करके खर्च करो क्योंकि इसकी हमारे पास कोई कमी नहीं है। केवल याद रखने की बात यही है कि हम हारना नहीं जानते हमारी मूँछ नीची नहीं होनी चाहिए। भगवान ने चाहा तो आपकी ही जीत होगी।'

यह सुनकर ठाकुर साहब फिर बड़े जोर से हँसे और बाग सिंह की पीठ पर थपकी देते हुए बोले—'अच्छा अब तुम लोग चलो।'

वे सब चले गये तो ठाकुर साहब ने अनिता की ओर देखकर कहा--'क्या करूँ काम बहुत है, परन्तु इस जनसे मे जाना भी जरूरी है। बल्कि पूरे इलाके का दौरा करना पड़ेगा जिसमें कम से कम दस दिन लग जायेंगे। अच्छा तुम यहीं रुकी रहना और जो काम मैं बता जाऊँगा उसे पूरा करके दो दिन बाद मुझसे आ मिलना, समझी।'

अनिता—'जी।'

इतना कहकर ठाकुर साहब उठकर चले गये।

# चार

उस समय तक अनिता ने कभी इधर-उधर की बात नहीं सोची थी। न उसने ऐसी जरूरत महसूस की। वह केवल इतना ही समझती थी कि ठाकुर साहब उसके सब कुछ हैं और उसका कर्त्तव्य है कि जो ठाकुर साहब कहें उसे वह चुपचाप मान ले। यह दृष्टिकोण तो अब भी नहीं बदला था, परन्तु बाग सिंह से ठाकुर साहब की बात-चीत सुनकर अनिता के मन में हल्की सी कुरेद उत्पन्न हुई। पहले वह केवल यह समझती थी कि ठाकुर साहब एक महान् नेता, महान् पुरुष थे जो एक महान् कार्य में जुटे हुए थे। उसे इस बात का कभी ख्याल ही नहीं आया कि राजनीति के दाँव-पेंच ऐसे घटिया होते हैं कि महान् पुरुष को भी उनका सहारा लिये बिना सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। यूं कहना चाहिए कि पहले अनिता को राजनीति से कोई दिलचस्पी नहीं थी, वह तो केवल ठाकुर साहब के छोटे-मोटे कार्य कर देती थी। परन्तु उस दिन की बातों से उसे राजनीति से थोड़ी दिलचस्पी पैदा हो गई। इसक[illegible] यह अर्थ नहीं था कि उसके मन में ठाकुर साहब का विरोध करने [illegible] इच्छा जागृत हुई हो, या वह स्वयं राजनीति के क्षेत्र में कोई विशे[illegible] भाग लेना चाहती हो, नहीं यह सब उसके बूते का काम नहीं था। [illegible]

तो केवल कुछ और अधिक बातें जानने की इच्छुक हो गई थी। पहले वह केवल अपने काम से काम रखती थी, परन्तु अब वह कुछ और भी जानना चाहती थी।

राजनीति के क्षेत्र में उसने एक नाम अक्सर सुना था—मेहर बाबा का नाम। और आम जनता तो मेहर बाबा को मानती भी थी, परन्तु जब कुमार साहब ने उनका जिक्र किया था, तो अनिता ने महसूस किया कि वह जरूर ही बड़े-ऊँचे स्तर के पुरुष होंगे और फिर जब बाग सिंह से बातें करते समय मेहर बाबा का जिक्र आया तो ठाकुर साहब भी उनके जलसे में किसी प्रकार की गड़बड़ कराने के हक में नहीं थे। जिसका अर्थ यह था कि ठाकुर साहब जैसे महान् नेता भी मेहर बाबा का अपमान करने का साहस नहीं कर सकते थे।

इन्हीं बातों को सोचकर उसके मन में मेहर बाबा के दर्शन करने की इच्छा हुई। अब समस्या यह थी कि वह मेहर बाबा के दर्शन कैसे करे और उनके पास बैठकर उनकी बातें कैसे सुने। यही सोचते-सोचते उसे याद आया कि उसकी एक सहेली अक्सर मेहर बाबा का जिक्र किया करती थी। उसकी सहेली का नाम उर्मिला था, जो अक्सर उसके साथ सैर करने भी जाया करती थी। उर्मिला भी मेहर बाबा का नाम बड़े आदर के साथ लेती थी। पहले तो अनिता ने कभी गहरी दिलचस्पी नहीं ली, परन्तु अब उसने सोचा कि यदि वह उर्मिला से कहे तो वह उसे मेहर बाबा के पास ले जा सकती थी। मेहर बाबा से मिलने का सबसे अच्छा अवसर वही हो सकता था जब ठाकुर साहब दौरे पर चले जायेंगे। वह मेहर बाबा के घर जा सकती थी। उर्मिला के साथ जाने से सबसे बड़ा फायदा यह था कि यदि बाद में ठाकुर साहब कभी पूछें भी तो वह कह सकती थी कि उसकी सहेली उर्मिला उसे जबरदस्ती

लिवा ले गई थी। ठाकुर साहब ने उसे मेहर बाबा से मिलने को मना तो नहीं किया था इसलिए यदि उन्हें पता भी चलेगा तो वह यही समझेंगे कि यूं ही अपनी सहेली के साथ चली गई होगी। उन्हें यह शंका तो कभी नहीं होगी कि अनिता अपनी मर्जी से मेहर बाबा के पास गई होगी।

× × × ×

दूसरी शाम जब अनिता की उर्मिला से मुलाकात हुई तो वे दोनों सैर करने निकलीं। बातों ही बातों में अनिता ने कहा—'उर्मिला यह मेहर बाबा कौन हैं ?'

उर्मिला को बड़ा आश्चर्य हुआ वह बोली—'अरे, क्या मेहर बाबा को नहीं जानतीं ?'

'नहीं यह बात नहीं मेरा अर्थ तो केवल यह है कि मेहर बाबा कैसे मनुष्य हैं ? तुम तो जानती हो कि मुझे राजनीति से कोई दिलचस्पी नहीं। सिर्फ मेरे मन में मेहर बाबा को व्यक्तिगत रूप में जानने की इच्छा पैदा हुई है, क्योंकि मैंने देखा है कि बड़े-बड़े नेताओं के मन में भी उनका आदर है।'

'अच्छी बात है, तुम चाहो तो मेरे साथ चल सकती हो।'

'वह तो ठीक है परन्तु मैं चाहती हूँ कि ऐसे समय पर उनके पास जाऊँ जब कि वह अकेले हों या वहाँ कम से कम लोग हों।'

'बिल्कुल अकेले तो उन्हें कोई रहने ही नहीं देता। हाँ पूजा-पाठ करते समय वह अकेले होते हैं, परन्तु उस समय तो उनसे कोई नहीं मिल सकता। उनका जो बाकी समय होता है उस समय तो कोई न कोई बैठा ही रहता है।'

अनिता कुछ सोच में डूब गई तो उर्मिला ने पूछा—'क्या बात है ? क्या ठाकुर साहब से डर लगता है ? अरी उनकी चिन्ता न कर। पूछें, तो कह देना कि मेरी एक सखी मुझे जबरदस्ती घसीट कर ले गई थी। समझी ?'

उर्मिला की यह बात सुनकर अनिता मुस्कराने लगी क्योंकि उर्मिला ने उसके मन की ही बात कही थी।

उर्मिला भी होशियार लड़की थी, वह अनिता के मुस्कराने से ही समझ गई कि यही उसके दिल का चोर था। वह उसके कन्धे पर हाथ रखकर उसे धीरे से हिलाते हुए बोली—'क्यों यही बात है न ?'

अनिता ने उत्तर दिया—'भई तुम कहती तो ठीक हो। वैसे मैं तुम्हें बता दूँ कि ठाकुर साहब ने मुझे किसी से मिलने-जुलने को मना नहीं कर रखा है, फिर भी अच्छा यही रहेगा कि उनको पता ही न चले। यदि पता चल भी जाये तो मैं तुम्हारी कही बात कह दूँगी।'

'बिल्कुल ठीक। अच्छा, यह बताओ कि चलना किस रोज है ?'

'देखो, ठाकुर साहब इस शनिवार या इतवार की सुबह को यहाँ से जा रहे हैं। वह मुझे साथ नहीं ले जायेंगे।'

उर्मिला ने बीच में ही बात काट कर पूछा—'क्या तुम साथ नहीं जा रही हो ?

'अजी नहीं, ठाकुर साहब ने कहा है कि कुछ काम रह जायगा वह निबटा कर दो दिन पीछे आ जाना।'

'तब तो बड़ा अच्छा है। सच कहती हूँ अनिता, मेहर बाबा बहुत ही अच्छे आदमी हैं। तुम उनसे मिलोगी तो खुश हो जाओगी। यूँ तो तुमने कई नेता देखे हैं, परन्तु उन जैसा नहीं देखा होगा। देखो बुरा न मानना, उनसे मिलकर तुम ठाकुर साहब को भी भूल जाओगी।

वह मनुष्य नहीं देवता हैं। उनमें चालाकी नहीं, क्रोध नहीं, झूठ और मक्कारी नहीं। इसीलिए उनके सामने बोलने में बड़े से बड़े नेता की भी हिम्मत नहीं पड़ती। जब तुम उनके कमरे में पहुँचोगी तो यूँ लगेगा जैसे किसी मन्दिर में पहुँच गई हो।'

अनिता ने अपनी मोटी-मोटी आँखों से उर्मिला की ओर जरा गौर से देखते हुए कहा—'इसीलिए तो मैं भी उनके दर्शन करना चाहती हूँ। परन्तु उर्मिला, कभी-कभी मैं सोचने लगती हूँ कि व्यक्तिगत रूप में एक संन्यासी या देवता होते हुए भी वह राजनीति की दलदल में क्यों जा फँसे?'

'केवल अपने देश और यहाँ की जनता का उद्धार करने के लिए। वह ऐसे संन्यास में विश्वास नहीं रखते जो संसार को त्याग कर सिर्फ अपनी भलाई के लिए गुफा में जा बैठता है, क्योंकि वैसा त्याग सरल है। मैं यह तो नहीं कहती कि वह त्याग हर कोई कर सकता है, क्योंकि वैसा त्याग भी महापुरुष ही कर सकता है, परन्तु मेहर बाबा अपने देश को और यहाँ की जनता को संकट में देखकर रह नहीं सके। इसीलिए उन्होंने इस बात का निश्चय कर लिया कि वह संसार के बीच में रहते हुए और अपने देशवासियों के कन्धे से कन्धा मिलाकर इस देश का उद्धार करेंगे। मेरे ख्याल में संसार की सारी कठोरता के बीच में रहते हुए भी अपना त्याग का जीवन व्यतीत करना एक महान् कार्य है।'

उर्मिला की इन बातों से अनिता के दिल में एक खलबली सी मच गई। उसने निश्चय कर लिया कि जैसे भी हो वह मेहर बाबा के दर्शन अवश्य करेगी।

मेहर बाबा के दर्शन करने के लिए उसे बहुत इन्तजार की जरूरत नहीं पड़ी। यह अलग बात थी कि इतने से दिन भी उसके लिए वर्षों

से कम नहीं थे। आखिर वह घड़ी भी आ पहुँची। इतवार की सुबह को ठाकुर साहब दौरे पर चले गये, और सन्ध्या के समय दोनों सहेलियाँ मेहर बाबा के आश्रम की ओर चल दीं।

रास्ते में उर्मिला ने बताया कि छुट्टी का दिन होने के कारण आज मेहर बाबा के आश्रम में हर रोज से कुछ अधिक भीड़ होगी, लेकिन एक तरह से अच्छा ही है, क्योंकि उतनी भीड़ में कम ही लोगों का ध्यान उनकी ओर जायगा। मर्दों के बैठने का स्थान अलग है और स्त्रियों के बैठने का अलग। वे दोनों चुपचाप जायेंगी और स्त्रियों के बीच में घुस कर बैठ जायेंगी।

जब वे आश्रम के निकट पहुँचीं तो अनिता ने देखा कि काफी बड़ा टुकड़ा समतल जमीन का है, जिसके बीचोंबीच आश्रम बना हुआ है। आश्रम में बहुत ज्यादा कमरे नहीं थे। चार कमरे एक ओर, और एक लम्बा सा हॉल उन कमरों के साथ जुड़ा हुआ था। उन कमरों में मेहर बाबा और उनके कर्मचारी रहते थे, या आने-जाने वाले लोग भी टिके रहते, बड़े हॉल में मेहर बाबा जनता को दर्शन देते और भाषण दिया करते थे। छत खपरैल की थी, और दीवारें कच्ची ईंटों की। आस-पास जो धरती छूटी हुई थी उसमें कहीं-कहीं फूलों के गमले रखे थे। एक कोने में तो केवल सब्जियाँ ही बोई जाती थीं। वहाँ बहुत अच्छी नस्ल की दो गायें भी थीं जो काफी दूध देती थीं। इसी दूध से आश्रम में रहने वालों की जरूरतें पूरी होती थीं। उस समय सूर्य अस्त हो रहा था, और आश्रम के चारों ओर पानी का छिड़काव किया जा रहा था। वहाँ घूमने-फिरने वाले कर्मचारी चुपचाप अपना-अपना काम करने में मगन थे। कोई भी आदमी ख्वामख्वाह दायें-बायें झाँकता नहीं था, न बेकार में हँसता था, और न चिल्लाता था।

जब वे बरामदे के निकट पहुँचीं तो अनिता ने सहेली से कहा—'उर्मिला, मालूम होता है कि अभी यहाँ कोई भी नहीं आया। हम सबसे पहले ही पहुँच गये हैं।'

इतना कहते-कहते अनिता एकदम चुप हो गई, क्योंकि अब वह बरामदे में पहुँच चुकी थीं। जब अनिता की नज़र खिड़की से अन्दर की ओर पड़ी तो उसने देखा कि सारे का सारा हॉल भरा हुआ था। पहले तो वह समझी कि मेहर बाबा वहीं मौजूद हैं, परन्तु जब वे हॉल में घुसीं तो पता चला कि मेहर बाबा अभी अन्दर से आये ही नहीं थे। अनिता चकित रह गई कि पुरुष और स्त्रियों से ठसाठस भरा होने पर भी हॉल में किसी प्रकार की आवाज सुनाई नहीं दे रही है, यहाँ तक कि वह अन्दर घुसीं भी तो किसी ने भी उनकी ओर आँख उठाकर नहीं देखा। वे दोनों स्त्रियों में घुस कर चुपके से बैठ गईं।

पहले तो अनिता को बोलने का साहस नहीं हुआ, परन्तु जब उसने देखा कि वहाँ कुछ लोग ऐसे थे जो आपस में कोई जरूरी बात एक दूसरे के कान में कह देते थे, तो फिर उससे भी न रहा गया। वह धीरे से फुसफुसाई—'उर्मिला, यहाँ का वातावरण तो बड़ा अजीब है।'

'हाँ।'

'हमारे यहाँ इस संख्या का अगर बीसवाँ भाग भी हो, तो इतना शोर मचता है कि बस कुछ मत पूछो।'

'नहीं, यहाँ ऐसा नहीं होता। मेहर बाबा कहते हैं कि ऊँचे प्रकार के अनुभव के लिए मनुष्य की बुद्धि में सबसे पहले तो मौन छा जाना चाहिए। उनका कहना है कि भिन्न-भिन्न विचार एक दूसरे से टकराते हैं तो मनुष्य के दिमाग में भी बड़े जोर का शोर होने लगता है। इस शोर का हमारी चेतना पर भी प्रभाव पड़ता है, क्योंकि इस शोर में

हम आत्मा के आवाज को नहीं सुन पाते; और उसका नतीजा यह निकलता है कि हमारी चेतना घटिया भावनाओं और विचारों की दलदल में धँसती ही चली जाती है।'

उर्मिला अनिता से चार-पाँच वर्ष बड़ी थी, फिर भी उसके मुँह से ऐसे ऊँचे विचार सुनकर अनिता को बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि अनिता ने पहले कभी ऐसी बातें नहीं सुनी थीं। उर्मिला के इशारे पर अनिता फिर कुछ नहीं बोली, क्योंकि बिना किसी खास जरूरत के बोलना वहाँ बुरा समझा जाता था।

चुपचाप बैठ कर अनिता दबी-दबी नजरों से पूरे हॉल का निरीक्षण करने लगी। दीवारों पर केवल महापुरुषों के चित्र लगे हुए थे। हॉल के एक ओर धरती से कुछ ऊँचा और काफी लम्बा-चौड़ा चबूतरा बना हुआ था जो इस समय उजली चादर से ढँका हुआ था। वहाँ कुछ गाव-तकिये भी पड़े थे। मेहर बाबा के बैठने के स्थान पर फूलदार आसन बिछा हुआ था।

अनिता अपनी सखी से पूछना चाहती थी कि मेहर बाबा कब तक पधारेंगे, परन्तु फिर उसने सोचा कि इतनी उत्सुकता दिखाने से वह जल्दी आने से तो रहे, उन्हें तो जिस समय आना है उसी समय आयेंगे।

यूँ तो मेहर बाबा थोड़ी ही देर में पहुँच गये, परन्तु अपनी उत्सुकता के कारण अनिता को वह समय भी बहुत लम्बा लगा। जब मेहर बाबा आने को थे तो सारे हॉल में हल्की सी हलचल मच गई, कोई हिला नहीं, कोई बोला नहीं, फिर भी अनिता को लगा कि वे भी उसी की तरह मेहर बाबा के दर्शनों के लिए उत्सुक हो रहे थे।

एकाएक ही सबकी आँखें उठीं, और हॉल में घुसने वाले दरवाजे पर लग गईं। मेहर बाबा से पहले दो कर्मचारी आये, शायद उन्हीं के

आने से लोग समझ गये कि अब मेहर बाबा भी आने को हैं। हॉल में प्रवेश करने से पहले मेहर बाबा दरवाजे पर ही रुक गये। अनिता ने बड़े ध्यान से उनकी ओर देखा। उनका क़द ज़रा सा लम्बा ही था, और शरीर भरा-भरा परन्तु फूला हुआ नहीं था। उन्होंने गेरुवे रंग की धोती पहन रखी थी और गेरुवे रंग की ही एक चादर ओढ़ रखी थी। धोती उनके घुटनों तक पहुँचती थी, और चादर में से उनका दाँया कन्धा, और दानों बाज़ू दिखाई दे रहे थे। सिर पर गंज नहीं था, सभी बाल मौजूद थे परन्तु बिल्कुल सफेद और फैले-फैले। उनके माथे में एक खास प्रकार की चमक थी, और यूं लगता था जैसे उनकी आँखों से चाँदनी की फुहार हो रही हो। उनकी छोटी-छोटी सफेद दाढ़ी थी और कैंची से कटी हुई सफेद मूँछें थीं।

दरवाजे में खड़े-खड़े उन्होंने पूरे हॉल में एक दृष्टि दौड़ाई, और सब लोगों ने दोनों हाथ जोड़ कर प्रणाम किया। इस पर मेहर बाबा ने भी दोनों हाथ जोड़ दिये और पल भर रुकने के बाद वह नपे-तुले कदमों से आगे बढ़े और सहज ही अपने आसन पर विराजमान हो गये। जब वह बैठे तो चादर उनके बदन से खिसक कर नीचे आ गिरी और उनके दोनों कन्धे, सीना और बाजू नंगे हो गये। उनका रंग तपे हुए ताँबे की भांति था, और यूं लगता था जैसे उसमें भी एक प्रकार की दमक हो।

कुछ देर तक वह पालथी मारे चुपचाप बैठे रहे। उनके दोनों हाथ उनके दोनों घुटनों पर थे। कमर बिल्कुल सीधी, कन्धे एक सैनिक की तरह ज़रा पीछे को हटे हुए, और सीना ज़रा सा आगे को निकला हुआ। गर्दन सीधी और आँखें बन्द थीं। यूं लगता था जैसे वह मन ही मन में प्रार्थना कर रहे हों। धीरे से मेहर बाबा की आँखें

सुनीं। मेहर बाबा कुछ देर तक चुपचाप बैठे अपने सामने की ओर देखते रहे। वह किसी व्यक्ति या किसी वस्तु को नहीं देख रहे थे; बल्कि यूं लगता था जैसे वह दूर, बहुत दूर देख रहे हों। लोगों के कान, विशेषकर अनिता के कान, मेहर बाबा का स्वर सुनने के लिए बेचैन हो रहे थे। आखिर मेहर बाबा ने बोलना शुरू किया—

'मेरे प्यारे भाइयो, बहनों और पुत्रियो!

'आप सभी लोग जानते हैं कि अब देश के चुनाव में एक महीने से भी कम समय रह गया है। मुझे राजनीति से व्यक्तिगत रूप में कोई दिलचस्पी नहीं है। यह बात मैं पहले भी कई बार दोहरा चुका हूँ, परन्तु जब मैं देखता हूँ कि इसी चुनाव में जीतने वाले व्यक्ति कल जनता की किस्मत के मालिक बनेंगे, तो मैं यह सोचने पर मजबूर हो जाता हूँ कि हमारे देश की जनता की किस्मत कैसे लोगों के हाथ में होनी चाहिए, और कैसे लोगों के हाथ में नहीं होनी चाहिए।

'हर रोज की तरह आज भी इस हॉल में सदा आने वाले सज्जनों के अतिरिक्त कुछ सज्जन आज पहली बार आये होंगे। मेरी इस बात से उनके मन में प्रश्न उठेगा कि क्या मेहर बाबा ही अपने आपको सबसे अच्छा समझते हैं, और क्या मेहर बाबा अपने आपको ही इस योग्य समझते हैं कि उन्हें वोट दिये जायें? उनका यह सोचना स्वाभाविक ही है। न केवल उनको बल्कि देश के हर व्यक्ति को ऐसा प्रश्न उठाने का अधिकार है और इस बात का भी अधिकार है कि वे मुझसे इस प्रश्न का उत्तर भी माँगें। यदि मैं इसका उत्तर नहीं दे पाता तो इसका अर्थ यही हो सकता है कि मैं भी कोई गोलमाल कर रहा हूँ। मैं भी पद पाने का भूखा हूँ।

इस प्रश्न का, या इस आपत्ति का मेरे पास कोई उत्तर है भी या नहीं। उत्तर तो है, परन्तु मेरा यह उत्तर आपके मन को ठीक लगता है या नहीं इसका फैसला आप ही पर है। मेरा उत्तर यह है कि हमारे देश में लोकतन्त्र है। यहाँ का राज्य चलाने वाला मेहर बाबा नहीं, या मेहर बाबा की पार्टी नहीं। बल्कि कोई भी पार्टी नहीं और कोई भी नेता नहीं। यहाँ का राज्य चलाने वाले स्वयं आप हैं, यहाँ की जनता है।

'अब मैं फिर अपने प्रश्न की ओर आता हूँ। मेरे पास उसका उत्तर यह है कि इस बात का निर्णय आप करें कि वोट किसे मिलना चाहिए। मेहर बाबा और उसकी पार्टी को, या महान् पार्टी को, या बेड़ा-गर्क पार्टी को, या जनता उद्धार पार्टी को, या सत्ता पार्टी को। मैं केवल इतना कहता हूँ, और केवल इतना ही चाहता हूँ कि इस देश के शासन में ठीक प्रकार के लोग पहुँचें, और गलत लोग वहाँ जाकर देश को आगे बढ़ाने के बजाय पीछे की ओर न ढकेल दें। आप से बेहतर अपने नेताओं को कौन समझ सकता है? मेरा केवल आप से इतना ही अनुरोध है कि आप सही व्यक्तियों को चुनें, उन्हीं को वोट दें, उन्हीं के हाथ में देश की बागडोर दें और वे कौन व्यक्ति होने चाहिए; इसका निर्णय आप स्वयं ही कर सकते हैं। आप हर एक को ठोंक बजा कर देखिये। किसी की सूरत और किसी की बातों में मत आइये बल्कि अपनी बुद्धि से काम लीजिये। यह समस्या ऐसी नहीं है कि जिसमें आप किसी का भी लिहाज करें, चाहे वह मेहर बाबा हो या कोई और।

'जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूँ कि अब चुनाव सिर पर पहुँच चुके हैं, सभी पार्टियाँ अपना-अपना जोर लगायेंगी, सभी नेता दौरा करेंगे और अपनी-अपनी पार्टी का दृष्टिकोण बतायेंगे। यह सब कुछ

हमारी पार्टी भी करेगी, मैं भी करूँगा और मैं केवल आपसे एक ही बात कहूँगा —जागते रहो ! जागते रहो !! जागते रहो !!!'

इतना कह कर मेहर बाबा चुप हो गये, परन्तु उनका स्वर हॉल में अब भी गूँज रहा था, और लोगों के कानों में गूँज रहा था। उस स्वर में एक बड़ी नदी का सा बहाव था, और उनके एक-एक शब्द में तड़प थी। उनके चुप हो जाने पर भी उनके स्वर और शब्दों का जादू हॉल में बैठे हुए व्यक्तियों पर छाया रहा।

कुछ देर तक हॉल में से कुछ लोग उठ-उठ कर मेहर बाबा के पास जाते रहे, वे धीमे-धीमे कुछ बातें भी करते। धीरे-धीरे लोग विदा होते लगे, यहाँ तक कि सभी लोग चले गये। हॉल में केवल अनिता और उर्मिला बैठी रह गईं। मेहर बाबा उठकर जाने लगे तो बाईं तरफ उन्हें दो युवतियाँ दिखाई दीं। वह उर्मिला को पहचानते थे। देखते ही मुस्करा दिये और पूछने लगे—'कहो बेटी उर्मिला, तुम अभी गई नहीं ?'

उर्मिला उठ खड़ी हुई और हाथ जोड़ कर बोली—'मेहर बाबा, मैं तो शायद चली ही जाती, परन्तु मेरी सखी आज खास तौर पर आप के दर्शनों के लिए आई थी। उसकी बड़ी इच्छा है कि आप से दो बातें भी कर सके। इसीलिए हमने तय किया कि हम दोनों बैठी रहें, यदि आप का ध्यान हमारी ओर हुआ और आपने हमें बुला लिया तो बातें कर लेंगे, नहीं तो लौट जायेंगे।'

मेहर बाबा ने हँस कर कहा—'वाह ! इतनी लम्बी-चौड़ी बातें सोचने की क्या जरूरत थी ? जैसे तुम मेरी बेटी, वैसे ही यह भी······।'

उर्मिला ने जल्दी से सखी का नाम बताते हुए कहा—'इसका नाम अनिता है।'

मेहर बाबा—'हाँ तो अनिता भी हमारी ही बेटी है। किसी भी बेटी को पिता से मिलने में इतना संकोच करने की आवश्यकता नहीं।'

इतना कह कर मेहर बाबा उठते-उठते फिर बैठ गये। उर्मिला-अनिता भी उठकर चबूतरे पर उनके निकट जा बैठीं। मेहर बाबा के इशारे पर दूसरे कर्मचारी वहाँ से चले गये। चूँकि मेहर बाबा के पास कुछ लोग बिलकुल निजी समस्याएँ लेकर भी आ जाया करते थे, ताकि अनिता की भी यदि कोई निजी समस्या हो तो वह खोल कर बता सके।

उर्मिला इस बात को समझ गई। वह बोली—'मेहर बाबा! अनिता की कोई निजी समस्या नहीं है। आजकल यह ठाकुर साहब के पास ही रहती है, उन्हीं का काम करती है।'

मेहर बाबा—'कौन ठाकुर साहब? वही सत्ता पर्टी वाले ठाकुर मदन सिंह जी।'

उर्मिला—'जी हाँ ...... वही।'

इस तरह से उनकी बातचीत का सिलसिला आरम्भ हुआ। किसी खास विषय पर बात नहीं हुई, केवल इधर-उधर की बात होती रही। तब मेहर बाबा ने कहा—'अनिता बेटी, तुम दोनों आज मेरे साथ चाय पिये बिना नहीं जा सकती।'

कुछ ही देर में चमकते हुए छोटे-छोटे गिलासों में चाय आ गई। दोनों सखियों ने चाय भी पी और मेहर बाबा की मीठी-मीठी बातें भी सुनीं। फिर पन्द्रह-बीस मिनट की बैठक के बाद वे दोनों मेहर बाबा की आज्ञा लेकर वापस चली आईं।

## पाँच

जिस तरह कोई स्वादिष्ट वस्तु खा लेने के बाद कुछ देर तक उसी का मजा मुँह में रहता है, इसी तरह मेहर बाबा से मुलाकात समाप्त हो जाने के बाद भी अनिता ने यूँ महसूस किया कि जैसे अब भी वह उन्हीं के पास बैठी हो। मेहर बाबा से मुलाकात एक ऐसी घटना थी कि जिसे वह जीवन भर भुला नहीं सकती थी। न जाने मेहर बाबा में ऐसी क्या शक्ति थी कि वह सीधे उसके मन में उतर गये थे। हर एक को यही महसूस होता था कि पहली मुलाकात में मेहर बाबा उनके दिल में समा जाते थे। वैसे देखने में यों नहीं लगता था, क्योंकि मेहर बाबा किसी तरह भी दूसरों पर प्रभाव डालने की चेष्टा नहीं करते थे, फिर भी न जाने कैसे होता था कि जिससे मिलते उसके मन में अपना स्थान बना लेते।

अब तो भविष्य में बहुत जल्दी मेहर बाबा के दर्शन होने की आशा नहीं थी इसलिए अनिता उस मुलाकात को स्मरण करके अपना मन खुश कर लेती थी। बल्कि कहना चाहिए कि जब भी वह उस मुलाकात की कल्पना करती तभी उसे एक बहुत ही गहरा आनन्द प्राप्त होता।

दो ही दिन में ठाकुर साहब का अधूरा काम समाप्त करके अनिता

तो उनके पास पहुँचना था। चुनांचे उसने अपना सारा समय उसी काम को समाप्त करने में लगा दिया। इधर उसे फुर्सत हुई और उधर वह ठाकुर साहब के पास पहुँचने के लिए रेलगाड़ी में सवार हो गई। गाड़ी में बैठी चली जा रही थी। चार ही घण्टे में वह उस स्टेशन पर पहुँचने वाली थी, जहाँ पर उसे उतरना था। परन्तु उसका मन पीछे रह गया था, उसी आश्रम में जहाँ उसने मेहर बाबा के दर्शन किये थे।

आखिर जब वह भुलावाँ स्टेशन पर उतरी तो उसने देखा कि वहाँ रामू और गोपाल खड़े हैं। ज्यों ही वह अपने डिब्बे से उतरी उन दोनों ने हाथ जोड़कर नमस्ते की। अनिता ने आश्चर्य से पूछा—'अरे तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो?'

रामू अपने साथी की ओर देखते हुए बोला—'लो गोपाल! जिनकी सेवा के लिए हम यहाँ उपस्थित हुए हैं, वही पूछ रही हैं कि तुम यहाँ कैसे?'

'मेरी सेवा?'—अनिता ने आश्चर्य में आ पूछा।

'जी हाँ।' अबकी गोपाल ने उत्तर देते हुए कहा—'हमें ठाकुर साहब ने आपका स्वागत करने और साथ लिवाने के लिए भेजा है।'

'अच्छा···तो यह बात है?'

'जी हाँ।······यही बात है।'

अनिता यह तो भूल ही गई थी कि स्टेशन से उतर कर वह ठाकुर साहब तक कैसे पहुँचेगी। उसने यह तो अनुमान ही नहीं लगाया था कि भुलावाँ एक छोटा सा देहाती स्टेशन होगा। वह समझ बैठी थी कि भुलावाँ एक कस्बा तो होगा ही।

उसे इस तरह आश्चर्य में देखकर गोपाल उसके मन की दशा समझते हुए बोला—'अनिता जी यह शहर नहीं है, देहात है, देहात !'

अनिता उन्हें ज्यादा मुंह नहीं लगाया करती थी इसलिए उसने चुपचाप उँगली से अपने सामान की ओर इशारा किया और खुद टिकट लेकर फाटक की ओर बढ़ी। गोपाल और रामू उसका सामान उठाये उसके पीछे-पीछे चले। स्टेशन से बाहर निकल कर अनिता बहुत हैरान हुई, क्योंकि दूर तक कोई आबादी नहीं दिखाई दे रही थी। उसने पलट कर देखते हुए कहा—अरे गोपाल, यहाँ तो कोई गाँव भी नहीं दिखाई दे रहा है।'

'गाँव यहाँ से दूर है जी।''''''कम से कम छः सात मील !'

अनिता का दिमाग चक्कर खा गया, उसने हाथ मलते हुए कहा—'लेकिन हम वहाँ पहुँचेंगे कैसे ? यहाँ तो कोई सवारी भी नहीं दिखाई देती। न रिक्शा, न ताँगा, न इक्का।'

इस पर रामू ने हाथ उठाकर अंगुली से इशारा करते हुए कहा—'वह देखिये, उधर उस पेड़ के नीचे।'

अनिता ने सोचा कि ठाकुर साहब ने भी यह जोकर खूब पाल रखे हैं। उधर देखते हुए बोली—'क्या है वहाँ ?'

'ध्यान से देखिये जी ! वहाँ बैलगाड़ी खड़ी है।'

अनिता का जन्म देहात में ही हुआ था, परन्तु वह काफी समय से शहर में रहने की आदी हो चुकी थी। वह हैरान होकर बोली—'तो क्या हमें बैलगाड़ी में जाना होगा ?'

'जी हाँ। रास्ता ही ऐसा है कि उस पर बैलगाड़ी ही जा सकती है। यहाँ तो बड़े-बड़े नेता जो केवल कार में बैठने के आदी होते हैं, बैलगाड़ी में ही घूमते-फिरते हैं।'

अनिता को बड़ी उलझन हुई। वह जरा बिगड़े स्वर में बोली—'अच्छा-अच्छा, बेकार की बातें मत बनाओ। चलो, बैलगाड़ी में सामान रखो।'

अनिता के बिगड़े तेवर देखकर वे दोनों डर गये कि कहीं उसने ठाकुर साहब से शिकायत कर दी तो वे उन दोनों का भुर्ता बना देंगे।

जरा दूर पेड़ की छाँव में बैलगाड़ी खड़ी थी, वे तीनों उसी की ओर चल दिये।

रामू और गोपाल ने मिलकर उसका सामान बैलगाड़ी में रखा और उसके लिए एक गद्दा बिछा कर बोला—'आइये बैठिये।'

अनिता बिना कुछ बोले आकर बैठ गई। गोपाल बैलगाड़ी हाँकने के लिए आगे जा बैठा और रामू भी गोपाल की बगल में बैठ गया।

अनिता बहुत देर तक क्रोध में न रह सकी क्योंकि जब बैलगाड़ी ठुमुक-ठुमुक करती हुई खेतों के बीच में से चल निकली तो खुली हवा और खेतों की हरियाली देखकर अनिता की तबियत खुश हो गई। दिन ढल रहा था, यद्यपि सूरज के डूबने में काफी समय बाकी था। इधर-उधर के दृश्य देखकर अनिता को अपने बचपन की याद आ गई, जब वह ऐसे ही खेतों में घूमा करती थी। इसके साथ ही आगे बैठे हुए दोनों जोकर भी चुप रहने वाले कहाँ थे। रामू बोला—'क्यों अनिता जी, अब आपको बैलगाड़ी से उलझन तो नहीं हो रही?'

अनिता ने कुछ उत्तर नहीं दिया था कि गोपाल बोला—'अरे उलझन तो हम होने ही नहीं देंगे। अभी जरा समतल रास्ता आये तो मैं बैलगाड़ी को इस तेजी से भगाऊँगा कि अनिता जी कार की भी सवारी भूल जायँगी।'

हुआ भी यही। आगे जाकर रास्ता समतल हो गया तो गोपाल ने दोनों बैलों को ललकारा। वह सरपट भागे। उनके गले में बँधी हुई घंटियों का संगीत वातावरण में गूँज उठा। यह सब देखकर अनिता का मन भी नाचने लगा और उसके होंठों पर मुस्कराहट खेलने लगी।

इतने में रामू बोला—'अनिता जी यदि आपको प्यास लगे तो बताइयेगा।'

अनिता को आश्चर्य हुआ, बोली—'प्यास तो मुझे लगी है परन्तु मैंने यह सोच कर कि यहाँ पानी कहाँ मिलेगा कुछ नहीं कहा।'

रामू ने खिलखिला कर हँस दिया—'अजी यही तो आपकी भूल थी। ख्वामख्वाह इतनी देर से प्यासी बैठी हैं। अजी देखिये तो सही मैं आपको वह पानी पिलाऊँगा कि आप शहर का कोकोकोला भी भूल जायेंगी।'

अनिता ने सोचा कि यह भी इस जोकर का कोई मजाक ही है। परन्तु रामू मजाक नहीं कर रहा था। उसने खद्दर के उजले और गीले अँगोछे में लिपटी हुई एक सुराही निकाली जिसे देखते ही अनिता के कलेजे में ठंडक पड़ गई। कैसी गुलाबी-गुलाबी सी सुराही थी, लम्बी गर्दन वाली। रामू ने एक कोरा कुल्हड़ उठाया और उसे सुराही के पानी में अच्छी तरह धोकर भरा और अनिता की ओर बढ़ा दिया। अनिता ने कुल्हड़ हाथ में पकड़ा तो उसकी ठंडक से वह मस्त हो गई। जब उसने पहला घूंट पिया तो उसे वाकई बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि पानी बहुत ही ठंडा था। वह खुश होकर बोली—'अरे रामू तेरी सुराही के पानी ने तो सचमुच ही कोकोकोला भी मात कर दिया है।' और वह हँस पड़ी।

यह सुन कर रामू मारे खुशी के बगलें बजाने लगा। बोला—'तो आप क्या समझी थीं कि मैं झूठ बोल रहा हूं?'

'नहीं झूठ तो नहीं समझी थी, परन्तु तुम ठहरे जोकर। मैंने सोचा कि यूं ही मजाक न कर रहे हो।'

'ही-ही-ही', रामू ने हँसते हुए कहा—'अनिता जी, एक बात याद रखिये कि मेरी सूरत जोकरों वाली जरूर है परन्तु मैं मजाक नहीं करता।'

'अच्छा, तो यह बात है तो फिर एक और कुल्हड़ भर दो।'

यह कहते-कहते अनिता ने कुल्हड़ उसकी ओर बढ़ाया और उसने सुराही टेढ़ी करके उसमें फिर से पानी भर दिया। उस समय वह बड़ा खुश था, कहने लगा—'अनिता जी हमें तो ठाकुर साहब ने कल ही कह दिया था कि हमें आपको लाने के लिए स्टेशन पर जाना होगा। मैंने उसी समय इस कोरी सुराही को खूब अच्छी तरह से धो-धाकर इसमें पानी भर दिया, और ऊपर से एक साफ कपड़े का टुकड़ा ढांक दिया। रात भर सुराही खुली हवा में पड़ी रही। और जब हम स्टेशन को जाने लगे तो मैंने अँगोछा गीला करके इस पर लपेट दिया। रास्ते भर हवा खा-खा कर सुराही का पानी और ठंडा हो गया। इस समय मुझे कितना अच्छा लग रहा है कि मेरी यह सारी मेहनत अकारथ नहीं गई क्योंकि आपको सुराही का यह पानी पसंद आ गया।'

रामू की बात सुनकर वह सोचने लगी कि इन सीधे-सादे लोगों के मन में भी कितना सच्चा प्रेम है, सेवा-भाव है, जो आम तौर पर पढ़े-लिखे लोगों में दिखाई नहीं देता।

सारा रास्ता हँसी-खुशी और बात-चीत में कटा। बीच-बीच में अनिता ने फिर पानी पिया। जब दूर से उन्हें मंजिल दिखाई दी जहां

बड़े-बड़े शामियाने लगे हुए थे, तो अनिता ने रामू से पूछा—'क्यों रामू तुम्हारी सुराही के ठण्डे पानी से मैं जरा मुँह धो लूँ तो तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा ?'

यह सुन कर रामू गद-गद हो उठा। जीवन भर उसने अपना ऐसा महत्व नहीं महसूस किया था। आज उसे कितनी खुशी हो रही थी कि अनिता जैसी सुन्दरी युवती की वह कुछ न कुछ सेवा कर रहा है। चहक कर बोला—'अनिता जी, यह भी कोई पूछने की बात है। लाइये मैं सुराही से पानी उँडेलता हूँ, आप मुँह-हाथ धो लीजिये।'

यह कह कर रामू गाड़ी के पिछली ओर चला आया। उसने झुक कर खड़े होते हुए सुराही का पानी उँडेला। अनिता हाथ में पानी लेकर मुँह पर छींटे मारने लगी।

मुँह-हाथ धोकर अनिता ने अपने झोले में से प्लास्टिक की एक छोटी-सी कंघी निकाली और एक नन्हा-सा दर्पण ले कर बालों में कंघी करने लगी। बैलगाड़ी के हिलने-डुलने से दर्पण भी हिल जाता था। यह देखकर रामू ने गोपाल से कहा—'यार, थोड़ी देर के लिए गाड़ी रोक दो।'

गोपाल ने गाड़ी रोक दी, और अनिता ने बड़े इतमिनान से अपने बाल ठीक किये, गर्दन का पसीना पोंछा और तैयार हो कर बैठ गई।

बैलगाड़ी उन शामियानों के निकट पहुँची। जब अनिता के कानों में यह आवाज पड़ी कि अनिता जी आ गई तो उसे आश्चर्य हुआ। वह नहीं जानती थी कि यहाँ भी कई लोग उसके नाम से

यह सुन कर रामू मारे खुशी के वगलें वजाने लगा। बोला—'तो आप क्या समझी थीं कि मैं झूठ बोल रहा हूँ ?'

'नहीं झूठ तो नहीं समझी थी, परन्तु तुम ठहरे जोकर। मैंने सोचा कि यूँ ही मजाक न कर रहे हो।'

'खी-खी-खी', रामू ने हँसते हुए कहा—'अनिता जी, एक वात याद रखिये कि मेरी सूरत जोकरों वाली जरूर है परन्तु मैं मजाक नहीं करता।'

'अच्छा, तो यह वात है तो फिर एक और कुल्हड़ भर दो।'

यह कहते-कहते अनिता ने कुल्हड़ उसकी ओर वढ़ाया और उसने सुराही टेढ़ी करके उसमें फिर से पानी भर दिया। उस समय वह वड़ा खुश था, कहने लगा—'अनिता जी हमें तो ठाकुर साहव ने कल ही कह दिया था कि हमें आपको लाने के लिए स्टेशन पर जाना होगा। मैंने उसी समय इस कोरी सुराही को खूब अच्छी तरह से धो-धाकर इसमें पानी भर दिया, और ऊपर से एक साफ कपड़े का टुकड़ा ढाँक दिया। रात भर सुराही खुली हवा में पड़ी रही। और जव हम स्टेशन को जाने लगे तो मैंने अँगोछा गीला करके इस पर लपेट दिया। रास्ते भर हवा खा-खा कर सुराही का पानी और ठंडा हो गया। इस समय मुझे कितना अच्छा लग रहा है कि मेरी यह सारी मेहनत अकार[illegible] नहीं गई क्योंकि आपको सुराही का यह पानी पसंद आ गया।'

रामू की वात सुनकर वह सोचने लगी कि इन सीधे-सादे लोगों मन में भी कितना सच्चा प्रेम है, सेवा-भाव है, जो आम तौर पर प[illegible] लिखे लोगों में दिखाई नहीं देता।

सारा रास्ता हँसी-खुशी और वात-चीत में कटा। वीच-वी[illegible] अनिता ने फिर पानी पिया। जव दूर से उन्हें मंजिल दिखाई दी

बड़े-बड़े शामियाने लगे हुए थे, तो अनिता ने रामू से पूछा—'क्यों रामू तुम्हारी सुराही के ठण्डे पानी से मैं जरा मुँह धो लूँ तो तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा ?'

यह सुन कर रामू गद-गद हो उठा। जीवन भर उसने अपना ऐसा महत्व नहीं महसूस किया था। आज उसे कितनी खुशी हो रही थी कि अनिता जैसी सुन्दरी युवती की वह कुछ न कुछ सेवा कर रहा है। चहक कर बोला—'अनिता जी, यह भी कोई पूछने की बात है। लाइये मैं सुराही से पानी उँडेलता हूँ, आप मुँह-हाथ धो लीजिये।'

यह कह कर रामू गाड़ी के पिछली ओर चला आया। उसने झुक कर खड़े होते हुए सुराही का पानी उँडेला। अनिता हाथ में पानी लेकर मुँह पर छींटे मारने लगी।

मुँह-हाथ धोकर अनिता ने अपने झोले में से प्लास्टिक की एक छोटी-सी कंघी निकाली और एक नन्हा-सा दर्पण ले कर बालों में कंघी करने लगी। बैलगाड़ी के हिलने-डुलने से दर्पण भी हिल जाता था। यह देखकर रामू ने गोपाल से कहा—'यार, थोड़ी देर के लिए गाड़ी रोक दो।'

गोपाल ने गाड़ी रोक दी, और अनिता ने बड़े इतमिनान से अपने बाल ठीक किये, गर्दन का पसीना पोंछा और तैयार हो कर बैठ गई।

बैलगाड़ी उन शामियानों के निकट पहुँची। जब अनिता के कानों में यह आवाज पड़ी कि अनिता जी आ गई तो उसे आश्चर्य हुआ। वह नहीं जानती थी कि यहाँ भी कई लोग उसके नाम से

वाकिफ थे फिर उसने मन में सोचा कि चाहे ठाकुर साहब ने किसी से इस बात का जिकर न भी किया हो, परन्तु इन जोकरों ने तो जरूर उसे मशहूर कर दिया होगा।

वह बैलगाड़ी से उतरी तो उसका सामान रामू ने सम्भाला और गोपाल उसे लेकर उस तम्बू की ओर बढ़ा जहाँ ठाकुर साहब ने डेरा जमा रखा था।

वह तम्बू में घुसी तो ठाकुर साहब एक तख्तपोश पर बैठे कुछ कागज देख रहे थे। इसने दोनों हाथ जोड़ कर नमस्ते की। आवाज सुनकर ठाकुर साहब ने सिर ऊपर उठा कर उसकी ओर देखा—'ओ, तुम आ गई अनिता ?'

'जी।'

'रास्ते में कोई तकलीफ तो नहीं हुई ?'

'जी नहीं। केवल चार घंटे का तो सफर था।'

'नहीं मेरा मतलब यह है कि स्टेशन से यहाँ तक पहुँचने में तो कोई कष्ट नहीं हुआ ?'

'जी नहीं।'

'अच्छा जो काम मैं तुम्हें सौंप आया था, वह सब ठीक हो गया ?'

'जी हाँ।'

'क्या किया जाये, यहाँ से स्टेशन तक बैलगाड़ी के सिवा और कोई सवारी ही नहीं है।'

'जी मैं तो बड़े आराम से चली आई।'

'तब ठीक है। हाँ, देखो अनिता। मैंने तुम्हारे रहने का प्रवन्ध तम्बू में नहीं किया है। मैंने सोचा कि यहाँ खुले खेतों में तुम्हें शायद

आराम महसूस न हो। तुम्हारे रहने का प्रबन्ध गाँव के ही एक अच्छे बडे कमरे में कर दिया गया है। अभी तुम वहाँ जा कर नाश्ता-पानी करो। और फिर कुछ आराम भी कर लेना, ताकि रात के जलसे के लिए तुम ताजा-दम हो जाओ।'

अब एकाएक अनिता को ख्याल आया तो उसने दाँये-बाये देखते हुए कहा—'अरे, मेरा सामान कहाँ चला गया ?'

गोपाल ने तम्बू के अन्दर झाँकते हुए कहा—'वह तो रामू उस कमरे में ले गया है।'

ठाकुर साहब बोले—'ठीक है, गोपाल, इन्हें भी वहीं ले आओ।'

गोपाल मुँह से कुछ नहीं बोला, वह धीरे-धीरे आगे-आगे चला और अनिता उसके पीछे-पीछे बढी। पण्डाल से थोडी दूर पर गाँव के सिरे पर ही वह कमरा बना हुआ था। दीवारें मिट्टी की थी और उस पर खपरैल पड़ी हुई थी। आगे एक छोटा सा चबूतरा बना था जो धरती से एक फुट ऊँचा और डेढ फुट चौडा था।

अनिता दरवाजे में घुसी तो उसने देखा कि कमरा खासा बडा है और उसमे जरूरत के सामानो के अलावा और कुछ नही था। दीवार के एक तरफ छोटी-सी चारपाई थी जिस पर उजली चादर बिछी थी। साथ एक तकिया भी था। एक ओर पानी की सुराही थी। बहुत पुराने ढंग की एक लोहे की कुर्सी भी थी। कमरे का फर्श कच्चा था परन्तु उसमें चार खिड़कियाँ होने के कारण हवा खूब आती थी। खिडकियों के आगे कोई पर्दा नही लगा था, परन्तु धरती से खिडकियाँ ऊँची होने के कारण बाहर के लोग चलते-फिरते अन्दर झाँक नही सकते थे।

अनिता पहले ही मुँह-हाथ धो चुकी थी, इसलिए जब रामू ने पूछा—'आप हाथ-मुँह धोयेंगी क्या ?'

'नहीं, यह काम तो मैंने बैलगाड़ी में ही कर लिया था। हाँ कुछ देर रुक कर कपड़े बदल लूंगी, क्योंकि ठाकुर साहब ने कहा था कि मुझे रात के जलसे में भाग लेना पड़ेगा।'

'तो फिर आप नाश्ता करके कुछ देर चारपाई पर आराम कर लीजिये। जब ठाकुर साहब खुद ही हममें से किसी को भेजेंगे तो आप चली आइयेगा।'

अनिता ने दायें-बायें नजर दौड़ा कर देखा तो खाने-पीने की कोई वस्तु दिखाई नहीं दी, और न ही इसका कोई प्रबन्ध नजर आया। वह कुछ परेशान सी होकर बोली—'रामू नाश्ता-पानी कैसे होगा ? यहाँ तो कुछ भी नहीं दिखाई देता।'

'अजी यहाँ क्या दिखाई दे ? यह आपके रहने का कमरा है, कोई रसोई घर तो है नहीं।'

'सो तो ठीक है परन्तु यह चीजें आयेंगी कहाँ से ?'

'यहाँ तो लंगर लगा हुआ है। पण्डाल के एक ओर हलवाई बैठा है। मिठाई, नमकीन, पूरी, कचौड़ी, भाजी, चाय, सोडा आदि सभी चीजों का अच्छा-खाशा प्रबन्ध है। अच्छा छोड़िये इन बातों को आप बताइये तो सही कि आप लेमन पियेंगी या गर्म-गर्म चाय ? मिठाई और नमकीन तो मैं वैसे ही लेकर आऊँगा।'

'अच्छा तो चाय ही ले आना। बर्फ वाला लेमन पी कर तो और प्यास लगेगी। उससे तो तुम्हारी सुराही का पानी ही अच्छा था।'

'आपका यह विचार तो बिल्कुल ठीक है। इस समय नाश्ते के साथ पहले आप सुराही का पानी पी लीजियेगा और अन्त में गर्म-गर्म चाय का एक प्याला।'

'अच्छा यही ठीक रहेगा।'

'तो मैं जाता हूँ।'

इतनी देर तक गोपाल भी दरवाजे मे खड़ा रहा। जाते-जाते रामू ने उससे कहा—'यार कपड़ों का सूटकेस चारपाई के नीचे खिसका देना।'

रामू चला गया और गोपाल ने उसके कथनानुसार सूटकेस चारपाई के नीचे खिसका दिया। अनिता बोली—'गोपाल चारपाई पर बिछी हुई चादर और तकिया लपेटकर एक ओर रख दो, या उनको वापस कर देना जिनका यह सामान है और मेरा बिस्तर खोलकर चारपाई पर बिछा दो।'

इतना कह कर अनिता तो चारपाई से उठ कर एक ओर खड़ी हो गई और गोपाल ने तकिये को चादर में लपेटकर एक ओर डाल दिया। फिर अनिता का बिस्तर बिछाते समय वह सोचने लगा कि यह अच्छा मौका है। अनिता से दो-चार बातें कर लेनी चाहिए, वह कुछ देर सोचता रहा कि किस विषय पर बात शुरू करे, फिर बोला—'अनिता जी, आप तो दो दिन अलग रहीं, इतने में ही यहाँ बड़े-बड़े तमाशे हो गये।'

अनिता जानती थी कि उनमें से हर कोई उससे बातें करने के लिए कोई न कोई विषय ढूँढ निकालता था, वह मुस्कराकर बोली—'क्या-क्या हो गया गोपाल ?'

'आपने कुछ नहीं सुना क्या ?'

'नहीं तो।'

'अखबारों में तो पढ़ा होगा।'

'अखबार देखती तो रहती हूँ परन्तु न जाने तुम किसके बारे में कह रहे हो। कुछ बताओ तो पता चले।'

अब गोपाल ने खूब आँखें मटकाते हुए कहा—'अजी यहाँ तो फौजदारी हो गई, लड़ाई-दंगा हुआ। और कई जलसों में हुडदंग भी मची।'

अनिता को इस बात का तो पता था कि ठाकुर साहब और उनके आदमी इस प्रकार की खिचड़ी पकाया करते थे। परन्तु अभी तक उसे इस बात का पता नहीं चला था कि ऐसे दंगे हो भी चुके हैं। उसने दिलचस्पी लेते हुए पूछा—'क्या हमारे जलसे में भी हुड़दंग हुई ?'

'जी नहीं, भला हमारे जलसे में गड़बड़ कैसे हो सकती थी। ठाकुर साहब का ऐसा रोब है कि यहाँ पर एक चिड़िया भी नहीं फड़फड़ा सकती। वैसे तो हमारी पार्टी कोई गुण्डों की पार्टी तो नहीं है।'

'गुण्डों की पार्टियाँ कौन सी हैं ?'

'यही महान् पार्टी, बेड़ा गर्क पार्टी, जनता उद्धार पार्टी आदि। सच पूछिये तो यह सब की सब गुण्डा पार्टी हैं।'

'अच्छा !' अनिता ने जानबूझ कर बुद्धू बनते हुए कहा—'मुझे तो इस बात का कुछ ज्ञान ही नहीं था। अच्छा यह तो बताओ कि हुआ क्या ?'

'अजी क्या पूछती हैं, इन सब का एक जलसा भी सफल न हो पाया। जहाँ कहीं भी उन्होंने जलसे किये वहीं लोगों ने ईंटें-पत्थर फेंके। बेचारों को हर जगह भागते ही बना।'

यह बातें हो ही रही थीं कि रामू वहाँ आ पहुँचा। उसके साथ हलवाई का एक लड़का भी था। एक थाली में कुछ मिठाई, नमकीन और चाय आदि रखी थी और थाली साफ-सुथरे लाल अँगोछे से ढँकी हुई थी। कमरे में घुसते समय उसने गोपाल की बात सुन ली थी।

थाली को नीचे की कुर्सी पर रखवाते हुए उसने पूछा—'क्या बात चल रही थी भई ?'

गोपाल उसके इतने जल्दी आ जाने पर खुश नहीं था, धीरे से बोला—'कुछ नहीं, मैं इन्हें बता रहा था कि दूसरी सभी पार्टियों के जलसे असफल रहे।'

राजू खुश होकर बोला—'हाँ अनिता जी सभी का मुँह काला हो गया केवल हमारा ही जलसा सफल रहा। क्या यह सब खबरें अखबार में आपने नहीं पढ़ीं ?'

अनिता ने उत्तर दिया—'नहीं मैंने तो कुछ नहीं पढ़ा।'

'हो सकता है कि अभी कोई खबर प्रकाशित न हुई हो, परन्तु धीरे-धीरे सब खबरें अखबारों में आ जायेंगी।'

अनिता को वह सब प्रोग्राम याद आ गये जो ठाकुर साहब ने बाग सिंह के साथ मिलकर बनाये थे। पल भर को उसकी आँखों के आगे गुण्डों की लट्ठबाजी और खून-खराबे का चित्र घूम गया। उसका इतना जी खराब हुआ कि नाश्ता करने को मन नहीं हुआ। परन्तु भूख तो लगी ही थी और फिर उसने मन में यह भी सोचा कि राजनीति के क्षेत्र में यह सब कुछ तो होता ही रहेगा। यदि वह इतना घबराने लगी तो उसका खाना-पीना और सोना दूभर हो जायेगा। यह सब कुछ सोच-समझ कर उसने धीरे-धीरे नाश्ता किया। खाने की सब चीजें बिल्कुल ताजी और देसी घी में बनी थीं, इसलिए उसे खाने में बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। साथ-साथ वह सुराही का ठण्डा पानी भी पीती रही। राजू के सुझाव के अनुसार बिल्कुल अन्त में उसने गरमा-गरम चाय के दो प्याले भी पी डाले। अब वह ताजा-दम हो गई और उसकी थकान भी दूर हो गई। जितनी देर तक वह नाश्ता करती रही गोपाल

और रामू वहीं खड़े इधर-उधर की हाँकते रहे। अनिता ने सोच रखा था कि वह उनसे कह देगी कि अब वे चले जायें ताकि वह आराम कर सके। परन्तु यह कहने की जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि खाली बर्तन उठाते समय रामू ने खुद ही कह दिया—'अच्छा जी, हम जाते हैं, आप अन्दर से दरवाजा बन्द कर लीजिये, क्योंकि खिड़कियों में से यहाँ बहुत मजे की हवा आती है।'

'ठीक है; परन्तु इस बात का ख्याल रखना कि जब ठाकुर साहब बुलायें तो मुझे आकर बता देना।'

'जी हाँ, आप उसकी चिन्ता न कीजिये। अभी तो काफी देर है। जलसा कहीं आठ बजे शुरू होगा। ठाकुर साहब आपको अधिक से अधिक पन्द्रह-बीस मिनट पहले बुला लेंगे। अभी तो आप निश्चिन्त होकर आराम कीजिये।'

उनके बाहर निकल जाने पर अनिता ने अन्दर से कुण्डी चढ़ा ली। उसने चारपाई के निकट वाली खिड़की भी बन्द कर दी, ताकि खास तौर पर कोई झाँकना भी चाहे तो झाँक न पाये। वह बिस्तरे पर लेटी तो उसे पता भी नहीं चला कि कब उसकी आँख लग गई। एक तो वह सफर करके आई थी दूसरे ठण्डी-ठण्डी हवा के झोंकों ने उसे परियों के देश में पहुँचा दिया।

एकाएक ही वह हड़बड़ा कर जागी। वह समझ नहीं पाई कि वह कितनी देर तक पड़ी सोती रही, क्योंकि उस समय कमरे में अँधेरा छाया हुआ था; अलबत्ता खिड़कियों में से बाहर का प्रकाश दिखाई दे रहा था।

वह जल्दी से उठी और दरवाजा खोलकर देखा तो पण्डाल की ओर वही गरमा-गरमी दिखाई दी। गैस के हण्डे जगमग-जगमग कर रहे थे। लोगों के बोलने और चिल्लाने का शोर वहाँ तक पहुँच रहा था, यद्यपि कोई बात समझ में नहीं आती थी। यह देख कर वह लौटी, उसने अपने तकिये के नीचे से एक छोटी सी टार्च निकाली जिसे वह सदा अपने पास रखा करती थी। पहले उसने सोचा कि कमरे में रखी लालटेन को जला ले, परन्तु फिर उसने तय किया कि टार्च तो है ही, क्यों न पहले साड़ी निकालकर पहन ले।

यह सोच कर उसने चारपाई के नीचे रखे सूटकेस को घसीटकर बाहर निकाला और टार्च की रोशनी में खोल कर एक साड़ी और ब्लाउज निकालकर चारपाई पर रखा तब उसने टार्च बुझा दी। खुली खिड़कियों के कारण कमरे में घना अंधेरा नहीं था बल्कि बहुत ही फीका सा प्रकाश हो रहा था, परन्तु ऐसा नहीं कि बाहर वालों को अन्दर की चीज साफ तौर पर दिखाई दे सके। उसने एक बार फिर दरवाजा बन्द करके सुबह वाली साड़ी उतारी और फिर नया पेटी कोट, नई साड़ी और ब्लाउज पहनकर तैयार हो गई।

यह काम हो चुका तो उसने लालटेन जलाई और दरवाजा खोल दिया। पहले तो वह बिस्तर पर हाथ पर हाथ रख कर बैठ गई; फिर उसे एकाएक ख्याल आया कि ठाकुर साहब जब बुलायेंगे तो वह अपने कुछ कागज भी अवश्य देखेंगे, ताकि उनको तसल्ली हो जाय कि उसने सारा काम ठीक-ठीक किया है या नहीं।

यह ख्याल आते ही वह उठी, और सूटकेस में से प्लास्टिक का बैग निकाला। वह बैग लेकर बिस्तर पर बैठ गई और लालटेन अपने पास कुर्सी पर रख ली। बैग में से सब कागज निकाल कर उसने उनको

त्र पड़ताल की। इतने में ही रामू उसे लेने आ गया। उसने एक
ल रुक कर रामू की तरफ देखा और बोली—'बस दो मिनट ! हाँ
ह तो बताओ कि बाहर से दरवाजे को लगाने का कोई ताला भी है
ा नहीं, क्योंकि सूटकेस में मेरे कपड़ों के अतिरिक्त ठाकुर साहब के
जरूरी कागजात भी पड़े हैं ?'

इस पर रामू ने एक बड़ा सा पुराना ताला दिखाते हुए कहा—'ताले का प्रबन्ध मैंने कर दिया है। आप चिन्ता मत कीजिये। यह न समझिये कि ताला पुराना है; पुराना जरूर है परन्तु अलीगढ़ का बना हुआ है इस पर चाहे हथौड़े भी पड़ते रहें पर टूटने वाला नहीं।'

अनिता से रामू अक्सर यही कहता था कि 'चिन्ता मत कीजिये' अब तो फिर उसके मुँह से यही शब्द सुनकर वह अपने आप ही मुस्करा दी। उसने पुराने कागज एक फाइल में लगा कर फाइल सूटकेस में रख दी और नये कागज प्लास्टिक के बैग में डालकर चलने को तैयार हो गई।

दरवाजे से बाहर निकली तो पल भर को रुकी ताकि रामू ताला लगा ले। रामू ने ताला लगाकर प्लास्टिक के बैग की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा—'यह मुझे दे दीजिये।'

'नहीं रहने दो। बिल्कुल हल्का तो है ही।'

'नहीं, यह अच्छा नहीं लगता। कहीं ठाकुर साहब ने देख लिय
कि मैं आपके साथ खाली हाथ चला आ रहा हूँ, तो मुझे डाँट पड़ेगी।'

अब अनिता और कुछ नहीं बोली। उसने बैग रामू के हवाले किय
और खुद सहज भाव से चलती हुई ठाकुर साहब के तम्बू में पहुँची। उ
समय कुछ खास-खास लोग उनके पास बैठे थे। अनिता को देखते
ठाकुर साहब ने उन सज्जनों से कहा—'अच्छा, आपकी हमारी बात

समाप्त हो चुकी। अब आप जा सकते हैं। मुझे अनिता से भी बातचीत करनी है।'

वे सब उठ खड़े हुए। उनमें बाग सिंह भी था। चलते-चलते बाग सिंह ने घूम कर उनकी ओर देखा और बोला—'ठाकुर साहब अब जलसा आरम्भ होने में भी अधिक समय नहीं है। जलसा आप ही के भाषण से शुरू होगा, दूसरों को जो कुछ कहना है, वह तो वे बाद में कहेंगे।'

ठाकुर साहब ने तिपाई पर रखी हुई छोटी सी टाइम-पीस पर एक नजर डाली और बोले—'हाँ-हाँ, अधिक से अधिक मैं दस-पन्द्रह मिनट में फुर्सत पा जाऊँगा। जो कागज मैं अनिता के हवाले कर आया था अब उन्हीं की जाँच-पड़ताल करनी है।'

बाग सिंह ने फिर धीमे स्वर में पूछा—'अगर आप कहें तो कुछ देर में किसी को आपके पास भेज दें। कहीं काम में व्यस्त होकर आपको अधिक समय न लग जाय।'

'यह भी ठीक है, तो दस मिनट में किसी को भेज देना। परन्तु इतना याद रहे कि मेरे पहुँचने से पहले सब तैयारी हो जानी चाहिए। मुझे वहाँ बेकार बैठना न पड़े।'

'जी नहीं, भला यह कैसे हो सकता है।'

पल भर बाद वे दोनों अकेले रह गये। रामू भी थैला वहाँ रख कर जा चुका था। ठाकुर साहब ने दोनों हाथों की हथेलियाँ मलते हुए कहा—'हाँ तो लाओ मैं उन कागजों पर एक नजर डाल लूँ।'

अनिता ने बैग की जिप खोल कर खोला और कागज बाहर निकाल कर उन्हें बारी-बारी से ठाकुर साहब की ओर बढ़ाना शुरू कर दिया।

ठाकुर साहब को सदा ही अनिता का काम देखकर बड़ी खुशी होती थी। अधिक पढ़ी-लिखी न होने पर भी वह उनके जरूरी कागजों के महत्व को खूब समझती थी, और कभी ऐसा नहीं हुआ कि ठाकुर साहब ने कहा कुछ हो और अनिता ने कुछ और ही कर दिया हो। दफ्तर के दूसरे लोगों से उन्हें इस प्रकार की शिकायत अक्सर हो जाती थी, परन्तु अनिता के काम में आज तक वह कोई ऐसी गलती नहीं निकाल सके। अब भी उन कागजों को देखते-देखते उन्हें इस बात की बड़ी खुशी हुई। जब वह कागज देख रहे थे तो अनिता दबी नजरों से उनकी ओर देखती रही। बेशक ठाकुर साहब पहले वाले हीं ठाकुर साहब थे। उनका वही जाना-पहचाना नाक-नक्शा था परन्तु फिर भी अनिता को वह पहले की अपेक्षा कुछ बदले लगते थे। उनमें क्या परिवर्तन हुआ था यह वह नहीं कह सकती थी परन्तु वह सोच जरूर रही थी। फिर एकाएक उसे ख्याल आया कि कहीं उसकी आँखों में तो कोई फरक नहीं आ गया। इस ख्याल के आते ही सनसनीं की एक लहर उसके शरीर में दौड़ गई। हाँ, शायद यही बात थी। शायद यह मेहर बाबा से भेंट करने का नतीजा था।

मुस्कराते-मुस्कराते ठाकुर साहब बिना अनिता की ओर देखते हुए बोले—'अनिता।'

'जी'—अनिता अपने विचारों से चौंकी और हड़बड़ाकर बोली।

अब ठाकुर साहब ने सिर उठा कर उसकी ओर देखा और कहा—'मैं तुमसे बहुत खुश हूँ।'

यह सुनकर अनिता ने सुख की साँस ली क्योंकि वह तो घबरा ही गई थी। उसे यूँ लगा था जैसे ठाकुर साहब ने उसके मन के विचारों को भाँप लिया हो। ठाकुर साहब फिर बोले—'तुम्हारा काम बहुत ही

साफ-सुथरा होता है। दूसरों का काम देखकर कई बार मुझे उलझन होने लगती है। मैं बोलना जानता हूँ परन्तु तुमने आजतक मुझे शिकायत का मौका नहीं दिया।'

ठाकुर साहब के यह शब्द सुनकर अनिता को अपने मन में बड़ी शान्ति सी महसूस हुई। उसने सोचा कि ठाकुर साहब सचमुच ही बड़े अच्छे मनुष्य हैं। यह अलग बात थी कि राजनीति के कामों में उन्हें कभी उल्टी-सीधी हरकतें भी करनी पड़ जाती हैं। कम से कम उस पर तो वह बहुत ही मेहरबान थे।

इतने में ठाकुर साहब ने घड़ी की ओर देख कर कहा 'लो यह काम तो पाँच ही मिनट में खतम हो गया। मैंने दस-बारह मिनट का अनुमान लगाया था, परन्तु इतना कम समय इसलिए लगा क्योंकि यह काम तुम्हारा किया हुआ था।'

अनिता को और अधिक खुशी हुई क्योंकि बहुत कम लोग ठाकुर साहब की प्रशंसा प्राप्त कर पाते थे। ठाकुर साहब फिर बोले—'मेरे ख्याल में सभी लोग पण्डाल में पहुँच चुके होंगे क्योंकि उनका शोर यहाँ तक सुनाई दे रहा है।'

'जी हाँ, जब मैं आ रही थी तभी सारा पण्डाल खचाखच भरा हुआ दिखाई देता था।'

'अच्छा खैर, कोई बात नहीं, हमने उनसे कह तो दिया ही है। कोई न कोई बुलाने आ जायगा।'

इतना कहकर ठाकुर साहब उठे और दाँये-बाँये झाँकते हुए बोले—'मेरे ख्याल में यह टोपी कुछ मैली सी हो गई है क्यों, तुम्हें कैसी लगती है?'

अनिता ने टोपी को जरा ध्यान से देखते हुए उत्तर दिया—'यूं तो कुछ पता नहीं चलता परन्तु किनारे-किनारे पर हल्की सी चिकनाई दिखाई दे रही है। आप इतनी सोच में क्यों पड़ गये हैं? दूसरी टोपी पहन लीजिये न।'

'ठीक कहती हो अच्छा, तुम्हीं निकाल दो।'

अनिता ने उठकर ठाकुर साहब का सूटकेस खोला और उसमें रखी आधी दर्जन टोपियों में से देख-भाल के एक अच्छी टोपी निकाल दी। ठाकुर साहब ने तिपाई पर रखे शीशे में चेहरा देखते हुए टोपी को बड़े कायदे से सिर पर रखा। वह टोपी को आगे-पीछे से हिला-डुलाकर ठीक कर ही रहे थे कि इतने में बाग सिंह ने आकर कहा—'आइये ठाकुर साहब, समय हो गया।'

ठाकुर साहब ने शीशे में ही देखते हुए पूछा—'सब तैयारी हो गई? सब लोग मंच पर पहुँच गये?'

'जी हां। अब सिवा आपके किसी और की प्रतीक्षा नहीं हो रही है।'

'अच्छा तो तुम चलो मैं आ रहा हूँ।'

बाग सिंह चला गया।

ठाकुर साहब ने एक बड़ा सा कागज अनिता की ओर बढ़ाते हुए कहा—'लो अनिता इसे भी अपने बैग में रख लो जब मैं भाषण देने लगूं तो इसे निकालकर मेरे आगे रख देना। जो भाषण मैं आज देने जा रहा हूँ उसकी टिप्पणियां इसी पर लिखी हैं।'

अनिता ने चुपचाप वह कागज अपने बैग में रख लिया।

ठाकुर साहब ने शीशे में अन्तिम दृष्टि डालते हुए रुमाल से मुँह पोंछा और फिर अचकन के बटन दुरुस्त करते हुए वह तम्बू के बाहर निकले और अनिता उनके पीछे-पीछे हो ली।

सचमुच ही पण्डाल खचाखच भरा हुआ था। सब की आँखें उन्हीं की ओर लगी हुई थीं। जब ठाकुर साहब ने मंच पर पैर रखा तो पण्डाल तालियों से गूँज उठा, आधे से अधिक लोग उठकर खड़े हो गये। तालियाँ बजती ही चली गईं। ठाकुर साहब अच्छी तरह जानते थे कि इस भीड़ में काफी संख्या में उनके अपने पिट्ठू भी थे जो पहले बनाई हुई योजना के अनुसार जोर-जोर से तालियाँ पीटे जा रहे थे, उनकी तालियाँ समाप्त होने में नहीं आ रही थीं और उनके देखा-देखी दूसरे लोग भी तालियाँ बजाये जा रहे थे।

इतने समय तक ठाकुर साहब दोनों हाथ जोड़े और आँखें मूँद यूँ खड़े रहे, जैसे आकाश में देवता लोग उन पर फूलों की वर्षा कर रहे हों।

बाग सिंह को इतना तो मालूम था कि उसके डर के मारे किसी को किसी प्रकार की गड़बड़ करने का साहस नहीं हो सकता, फिर भी उसने कई लठ्ठबाज पण्डाल के आस-पास खड़े कर रखे थे।

आखिर तालियाँ समाप्त हुईं और फिर ठाकुर मदन सिंह की जय-जयकार से सारा पण्डाल गूँज उठा। ठाकुर साहब नहाते हुए बैल की तरह गदगद होकर नीचे को झुके और एक गाव-तकिये से पीठ लगा कर बैठ गये।

उनके बैठते ही उस इलाके के चौधरी साहब उठकर खड़े हो गये। उन्होंने खूब ढीली-ढाली उजली धोती पहन रखी थी और धुली-धुली मारकीनो वाला ढीला-ढाला कुर्ता पहन रखा था। सिर के बाल अधिकतर सफेद हो चुके थे और ठुड्डी के नीचे एक और ठुड्डी दिखाई दे रही थी। उनकी घनी और लम्बी मूंछें थीं जो कबूतर के परों की तरह फैली हुई उनके मुंह पर अपनी छत्र-छाया ताने हुए थीं। उनके

हाथ में मोटी लकड़ी का खूंटा था जिसे उन्होंने बाँह पर लटकाकर दोनों हाथ उठाये और जनता को चुप रहने का इशारा किया।

किसी कर्मचारी ने माइक्रोफोन की गर्दन ऊपर उठानी चाही तो उन्होंने उसे रोकते हुए कहा—'रहने दो भई मुझे दो मिनट तो बोलना ही है, जरा चिल्ला कर बोल लूंगा।'

उनकी इस बात पर आस-पास बैठे हुए सभी लोग हँस दिये। तालियाँ बजनी बन्द हुई तो उन्होंने कहना शुरू किया—'सज्जनो! आज तो बहुत ही सुन्दर, बहुत ही पवित्र और बहुत ही भाग्यवान दिन है कि जब हमारे बीच में ठाकुर मदन सिंह जी पधारे हैं। ठाकुर साहब की प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाने वाली बात है। आखिर इस देश में, खासकर हमारे इलाके में कौन ऐसा अभागा व्यक्ति होगा जिसने ठाकुर साहब का नाम न सुना हो; जो यह न जानता हो कि ठाकुर साहब ने अपने प्यारे देश को स्वतन्त्र कराने के लिए हँसी-खुशी जेल की मुसीबतें और दुःख सहन किये। उन्होंने अपना सब कुछ त्याग करके, अपनी जमींदारी, अपनी कोठियाँ, कहना चाहिए अपना सब कुछ देश को अर्पण कर दिया। आज उनका नाम बड़े गर्व से लिया जाता है। हमारे इलाके के एक-एक बच्चे के मन में उनके लिए गहरे आदर का भाव है। उनका नाम लेते ही हमारे सिर आदर से झुक जाते हैं और हमारे सीने गौरव से तन जाते हैं।

तो कहने का अर्थ यह है कि उनका परिचय देने की कोई जरूरत नहीं है। इस समय आप भी उनके मुख से कुछ शब्द सुनने के लिए उत्सुक हो रहे होंगे। मैं अपने महान् नेता और आप सज्जनों के बीच में अधिक समय तक दीवार बनकर खड़ा नहीं रहना चाहता।'

यहाँ पहुँच कर चौधरी साहब ने अपना हाथ आकाश की ओर उठाते हुए और भी ऊँचे गरजदार स्वर में कहा—'हाँ मैं आपको याद दिला दूँ कि चुनाव शुरू होने में अब ज्यादा दिन नहीं रह गये। शायद यह कहने की जरूरत नहीं कि हमारा वोट किस पार्टी और किस नेता को जायेगा। हाँ तो एक बार मेरे साथ ऊँचे स्वर में कहिये, ठाकुर मदन सिंह की······'

'जय'—सारी जनता ने गला फाड़ कर कहा।

चौधरी साहब फिर बोले—'हमारा वोट किस पार्टी को जायेगा ?'

'सत्ता पार्टी को'—जनता ने फिर ऊँचे ही स्वर में उत्तर दिया।

अब चौधरी साहब ने मुट्ठी कस कर हवा में लहराते हुए गरजदार आवाज में कहा—'हमारा वोट किस नेता को जायेगा ?'

'ठाकुर मदन सिंह जी को'—जनता ने तीसरी बार गला फाड़ कर उत्तर दिया।

अब चौधरी साहब ने नथने फुला कर दाँयें-बाँयें देखा और अपने भारी-भरकम शरीर को मञ्च पर गिरने से बाल-बाल बचाते हुए वे बैठ गये।

एक बार फिर वातावरण में तालियाँ गूँजने लगी। ठाकुर साहब खुश थे, बाग सिंह खुश था, क्योंकि वे जानते थे कि उनके पिट्ठू अपने प्रोग्राम में कितने सफल हो रहे हैं। तालियाँ बजाने और नारे लगाने में पहल वहीं करते थे और फिर भेडों की वहाँ कोई कमी भी नहीं थी। बहुत से लोगों को यह भी पता था कि यदि उनमें से किसी के गले से भरपूर आवाज न निकली तो बाद में उसके गले की अच्छी तरह मालिश कर दी जायगी।

यह सब कुछ हो चुका तो ठाकुर साहब बिल्कुल कबूतर बने जरा आगे को खिसक आये, किसी ने माइक्रोफोन को हिला-डुला कर उनके मुँह के निकट खिसका दिया। कुछ देर तक ठाकुर साहब आँखें मूँदे बैठे रहे। खुले खेतों की हवा आते-जाते उनकी मूँछों के बालों को हिला रही थी। उस समय उनके होंठों पर मुस्कराहट थी, और चेहरे पर इतना भोलापन दिखाई देता था जैसे खानदानी कबूतर की सन्तान हों। सारी जनता कान आगे को बढ़ाये उनकी बातें सुनने के लिए बेचैन हो रही थी और ठाकुर साहब अपने विचारों को एकत्रित कर रहे थे। आखिर उन्होंने बहुत ही मध्यम स्वर में बोलना शुरू किया। उनका बोलने का यही ढंग था। आरम्भ में बड़े धीमे और मध्यम स्वर में बात शुरू करते और थोड़ी देर बाद गरम हो जाने पर उनके गले में से भारी और ऊँचा स्वर निकलने लगता, गर्दन की नसें फूल जातीं, आँखें लाल हो जातीं, और मुँह से थूक उड़ने लगता। उन्होंने इतना धीमे-धीमे बोलना शुरू किया कि लोगों को अपने कानों के पीछे हाथ रख-रख कर उनके मुँह से निकले हुए शब्दों को पकड़ना पड़ा। वह बोले—

'भाइयो और बहनो! अभी-अभी मैं शर्म के मारे धरती में गड़ा जा रहा था। मैं सोच रहा था कि धरती फट जाये और मैं उसमें समा जाऊँ। शायद आपको आश्चर्य हो, कि मेरा इस तरह सोचने का कारण क्या था? इसका उत्तर बड़ा सीधा है। मैं अपने इन कानों से सुन रहा था कि चौधरी साहब किस तरह मेरी प्रशंसा कर रहे थे, और किस तरह आप तालियाँ बजा-बजा कर और नारे लगा-लगा कर उनकी हर बात का समर्थन कर रहे थे। मुझे इसी पर शर्म आ रही है। आप कहेंगे कि इसमें शर्म की क्या बात थी, क्योंकि चौधरी साहब ने तो एक बात भी गलत नहीं कही। यहाँ पर मैं आपका विरोध नहीं कर सकता।

मैं स्वीकार करता हूँ कि उन्होंने जो कुछ भी कहा उसका एक-एक शब्द बिल्कुल ठीक था। फिर भी मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि जिस मनुष्य ने अपने आपको उम्र भर अपने देश का तुच्छ सेवक, और उस देश की जनता का अपने आपको एक तुच्छ दास समझा हो, भला उसे अपनी प्रशंसा भरे शब्द सुन कर शर्म नहीं आयेगी तो और क्या होगा ? मैं आपसे पूछता हूँ कि मेरे लिए यह स्वाभाविक ही था या नहीं कि मैं सोचूं कि जमीन फट जाये और मैं उसमें समा जाऊं।'

अन्तिम शब्द कहते-कहते ठाकुर साहब का स्वर खूब ऊँचा उठ चुका था, और उनके गले की नसें कुछ-कुछ फूल आई थीं।

बाग सिंह पहले से ही समझे हुए था कि इस मौके पर क्या करना है। चुनांचे उसके इशारे पर सारे पिट्ठुओं ने जोर-जोर से तालियाँ बजानी शुरू कर दीं।

इतनी बातें तो ठाकुर साहब ने भूमिका के तौर पर जबानी ही कह दी थीं, अनिता ने उनकी आज्ञानुसार उनका दिया हुआ कागज चुपके से उनके आगे डेस्क पर रख दिया। ठाकुर साहब ने कन-खियों से उस कागज की ओर देखा और फिर सिर ऊपर उठा कर बोलना शुरू किया—'भो सज्जनो, जब हम जेल की काल-कोठरी में पड़े सड़ रहे थे, तब हमने स्वप्न में भी यह बात नहीं सोची थी कि आज जिस जनता की खातिर हमने अपने जीवन के हर सुख का बलिदान किया है, कल को वही जनता हमें देश के राज्य की बागडोर सम्भालने को कहेगी। देश ने स्वतन्त्रता प्राप्त की, जनता के उत्साह और हमारे बलिदान के फलस्वरूप विदेशी राज्य समाप्त हुआ, और सैकड़ों वर्ष के बाद हमारा देश गुलामी की जंजीरें तोड़ कर एक बार फिर दुनियाँ के स्वतन्त्र देशों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर खड़ा हो गया।

उन्होंने महसूस किया कि उनका यह जलसा सचमुच ही बहुत सफल रहा।

ठाकुर साहब के भाषण के बाद और भी छोटे-बड़े नेताओं ने भाषण दिये। परन्तु ठाकुर साहब और उनके खास-खास साथियों को बाद में होने वाले भाषणों में ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी, फिर भी उतनी देर तक ठाकुर साहब बैठे रहे ताकि उनके उठ जाने से जलसा उथल-पुथल न हो जाय। आखिरकार जलसा समाप्त हुआ।

पाँच-दस मिनट तक लोगों ने ठाकुर साहब को घेरे में लिये रखा। वह उनसे इधर-उधर की बात-चीत करते रहे। वास्तव में वह ठाकुर साहब का निकट से दर्शन करना चाहते थे। ठाकुर साहब की महानता किस बात में थी, इसका उन्हें कुछ ज्ञान नहीं था। इतना लम्बा भाषण हो जाने पर भी उनके पल्ले कुछ नहीं पड़ा था। यह सम्भव भी नहीं था, क्योंकि ठाकुर साहब और उनके साथी उन विषयों पर बात-चीत करते रहे जिनका उन सीधे-सादे लोगों को कुछ भी ज्ञान नहीं था। उनके लिए यह सब हवाई बातें थीं, जिनका कोई सिर-पैर उन्हें दिखाई नहीं देता था। वह तो केवल इतना जानते थे कि बड़ी जोरदार बातें हुई। ठाकुर साहब जेल में गये थे, इसलिए वह महान् थे। उनके कथनानुसार देश बड़ी उन्नति कर रहा था, इसलिए लोगों ने भी मान लिया कि देश सचमुच ही बड़ी उन्नति कर रहा है। परन्तु यदि उनसे पूछा जाता कि वह यह बतायें कि देश की उन्नति किस तरह हो रही थी, तो वह निश्चय ही बगलें झाँकने लगते। वह तो केवल भेड़-बकरी की तरह नेताओं के पीछे-पीछे चलने वाले लोग थे। आज एक नेता ने एक बात कही तो वह मान ली, कल दूसरे नेता ने दूसरी बात कही तो वह भी मान ली।

किसी तरह जनता के घेरे में से निकल कर ठाकुर साहब अपने तम्बू तक पहुँचे। उनके पिट्ठू भोली-भाली जनता को समझा रहे थे कि इस समय उनके महान् नेता उनकी सेवा करके थक गये हैं।

लोगों ने यह बातें मान लीं और उनसे पीछा छुड़ा कर याग सिंह और ठाकुर साहब के दूसरे खास-खास गुर्गे अन्दर घुसे और उन्होंने तारीफों के पुल बाँध दिये।

'ठाकुर साहब, बस गजब कर दिया आपने।'

'आपने तो कमाल कर दिया ठाकुर साहब।'

'क्या रंग जमाया है आपने।'

'बस जी, अब यहाँ किसी और का रंग जमने वाला नहीं है।'

'आपने भाषण की शुरूआत ऐसी की कि बस कुछ न पूछिये। आज तक हमने सैकड़ों भाषण सुने, परन्तु ऐसा सुन्दर भाषण कभी नहीं सुना था।'

'अजी शुरू से आखिर तक एक-एक शब्द मोतियों में तौलने लायक था।'

सब पिट्ठू ठाकुर साहब को घेरे में लिये एक से एक बढ़कर बातें बना रहे थे और ठाकुर साहब आराम-कुर्सी पर बैठे मुस्करा रहे थे। उनकी आँखें मुँदी हुई थीं। टाँगें अकड़ी हुई और बाजू फैलाये हुए वो लगते थे जैसे वह किसी अखाड़े में किसी बड़े पहलवान को चारों खाने चित करके आये हों।

आखिर खुशामद की बातें करके जब लोग थक हुये तो ठाकुर साहब ने मुँह फाड़ कर लम्बी सी जमुहाई ली और बोले—'अजी इतनी तारीफ भी किस काम की, जनता की सेवा करना तो हमारा कर्त्तव्य

उन्होंने महसूस किया कि उनका यह जलसा सचमुच ही बहुत सफल रहा ।

ठाकुर साहब के भाषण के बाद और भी छोटे-बड़े नेताओं ने भाषण दिये । परन्तु ठाकुर साहब और उनके खास-खास साथियों को बाद में होने वाले भाषणों से ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी, फिर भी उतनी देर तक ठाकुर साहब बैठे रहे ताकि उनके उठ जाने से जलसा उथल-पुथल न हो जाय । आखिरकार जलसा समाप्त हुआ ।

पाँच-दस मिनट तक लोगों ने ठाकुर साहब को घेरे में लिये रखा । वह उनसे इधर-उधर की बात-चीत करते रहे । वास्तव में वह ठाकुर साहब का निकट से दर्शन करना चाहते थे । ठाकुर साहब की महानता किस बात में थी, इसका उन्हें कुछ ज्ञान नहीं था । इतना लम्बा भाषण हो जाने पर भी उनके पल्ले कुछ नहीं पड़ा था । यह सम्भव भी नहीं था, क्योंकि ठाकुर साहब और उनके साथी उन विषयों पर बात-चीत करते रहे जिनका उन सीधे-सादे लोगों को कुछ भी ज्ञान नहीं था । उनके लिए यह सब हवाई बातें थीं, जिनका कोई सिर-पैर उन्हें दिखाई नहीं देता था । वह तो केवल इतना जानते थे कि बड़ी जोरदार बातें हुई । ठाकुर साहब जेल में गये थे, इसलिए वह महान् थे । उनके कथनानुसार देश बड़ी उन्नति कर रहा था, इसलिए लोगों ने भी मान लिया कि देश सचमुच ही बड़ी उन्नति कर रहा है । परन्तु यदि उनसे पूछा जाता कि वह यह बतायें कि देश की उन्नति किस तरह हो रही थी, तो वह निश्चय ही बगलें झाँकने लगते । वह तो केवल भेड़-बकरी की तरह नेताओं के पीछे-पीछे चलने वाले लोग थे । आज एक नेता ने एक बात कही तो वह मान ली, कल दूसरे नेता ने दूसरी बात कही तो वह भी मान ली ।

किसी तरह जनता के घेरे में से निकल कर ठाकुर साहब अपने तम्बू तक पहुँचे। उनके पिट्ठू सीधी-सादी जनता को समझा रहे थे कि इस समय उनके महान् नेता उनकी सेवा करके थक गये हैं।

लोगों ने यह बातें मान ली और उनसे पीछा छुड़ा कर बाग सिंह और ठाकुर साहब के दूसरे खास-खास गुर्गे अन्दर घुसे और उन्होंने तारीफों के पुल बाँध दिये।

'ठाकुर साहब, बस गजब कर दिया आपने।'

'आपने तो कमाल कर दिया ठाकुर साहब।'

'क्या रंग जमाया है आपने।'

'बस जी, अब यहाँ किसी और का रंग जमने वाला नहीं है।'

'आपने भाषण की शुरुआत ऐसी की कि बस कुछ न पूछिये। आज तक हमने सैकड़ों भाषण सुने, परन्तु ऐसा सुन्दर भाषण कभी नहीं सुना था।'

'अजी शुरू से आखिर तक एक-एक शब्द मोतियों में तोलने लायक था।'

तब पिट्ठू ठाकुर साहब को घेरे में लिये एक से एक बढ़कर बातें बना रहे थे और ठाकुर साहब आराम-कुर्सी पर बैठे मुस्करा रहे थे। उनकी आँखें मुँदी हुई थीं। टाँगें अकड़ी हुई और बाजू फैलाये हुए वो लगते थे जैसे वह किसी अखाड़े में किसी बड़े पहलवान को चारों खाने चित्त करके आये हों।

आखिर खुशामद की बातें करके जब लोग थक चुके तो ठाकुर साहब ने मुँह फाड़ कर लम्बी सी जमुहाई ली और बोले—'अजी इतनी तारीफ भी किस काम की, जनता की सेवा करना तो हमारा कर्त्तव्य

है । अब हमें खुशियाँ ही न मनाते रहना चाहिए बल्कि आगे की योजना भी तैयार करनी चाहिए हालाँकि मैं बहुत थक गया हूँ फिर भी काम तो करना ही होगा ।'

उनकी यह बात सुनते ही चार आदमी उठे । दो ने उनके बाजू और कन्धे दबाने शुरू कर दिये और दो ने उनकी एक-एक टाँग सहलानी शुरू कर दी । ठाकुर साहब आनन्द में आ बोले—'अनिता जरा लगे हाथों मेरे सिर पर तेल की मालिश भी कर दो ।



## छ:

कुछ ही दिनों में ठाकुर साहब अपना दौरा समाप्त करके वापस लौट आये। अपने हेड आफिस में बैठकर उन्होंने खास-खास सलाहकारों से राय-मशविरा किया और बोले—'मेरे विचार में तो हमारा दौरा बहुत ही सफल रहा।'

एक सलाहकार—हाँ जी, भला यह भी कोई कहने की बात है? आपके इलाके भर में डंके बज गये हैं।'

ठाकुर साहब—'यह तो ठीक है लेकिन मैं सोचता हूँ.........।'

दूसरा सलाहकार—'माफ कीजिये ठाकुर साहब यदि आप सोचते हैं कि अब कुली पार्टी या महान् पार्टी, या बेडा गर्क पार्टी, या जनता सुधार पार्टी आदि की दाल गल सकती है तो मैं आपसे सहमत नहीं हूँ।'

ठाकुर साहब—'वह तो मैं भी जानता हूँ, परन्तु सच्ची बात यह है कि मुझे मानवता पार्टी से थोडा डर है।'

तीसरा सलाहकार—'यदि आप कहें तो मेहर बाबा के जलसे में भी वह हुडदंग मचाई जाय कि वहाँ पर एक भी आदमी टिकने न पाये।'

ठाकुर साहव ने सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—'नहीं-नहीं ऐसा
दम उठाने से तो हमारा नाम ही वदनाम हो जायगा । हमें ऐसी भूल-
भी नहीं करनी चाहिए ।'

चौथा सलाहकार—'चलिये मैंने आपकी वातें मान ली परन्तु
इसका कोई उपाय भी तो होना चाहिए ।'

ठाकुर साहव तो कुछ नहीं वोले, अलवत्ता पाँचवें सलाहकार ने
सिर आगे वढ़ा कर कहा—'ठाकुर साहव मुझे एक वात सूझी है ।

ठाकुर साहव—'वह क्या ?'

पाँचवाँ सलाहकार—'मेरे विचार में मेहर वावा की पार्टी में अपना
एक जासूस घुसेड़ दिया जाय ।'

'जासूस ।' इतना कहकर ठाकुर साहव और भी जोर-जोर से सिर
खुजाने लगे । फिर उन्हें एकाएक अनिता का ख्याल आया तो वह जरा
सीधे होकर वैठ गये और वोले—'वात तो कुछ मन को भाती है ।
लेकिन सवाल तो यह है कि ऐसा कौन हो जिसे जासूस वनाकर वहाँ
भेजा जाय ?'

सव लोग सोच में पड़ गये । तव ठाकुर साहव वोले—'अच्छा यह
तो वताइये कि इस काम के लिए अनिता कैसी रहेगी ?'

यह सुन कर सवके चेहरे खिल उठे, उन सवों ने हामी भरी ।
ठाकुर साहव वोले—'अच्छा तो आप लोग चलिये, मैं अभी अनिता को
वुलाकर इस सम्वन्ध में वात-चीत करता हूँ ।'

सव लोगों ने उनकी इस राय को पसन्द किया और वहाँ से उठक
चले गये । ठाकुर साहव ने अनिता को वुला भेजा । जव अनिता
आकर नमस्ते की तो उन्होंने हाथ के इशारे से अपने निकट ही तख
पोश पर वैठने को कहा । वह वैठ गई तो ठाकुर साहव कुछ सोच

पड़ गये। अनिता समझदार थी, परन्तु इसके साथ ही वह कम-उमर और भोली थी। ठाकुर साहब को उससे यह तिकड़मबाजी की बातें करने में संकोच हो रहा था। उन्होंने इससे पहले कभी उससे ऐसी बातें नहीं की थी।

काफी सोच-विचार के बाद उन्हें कहना पड़ा, क्योंकि अनिता उनकी ओर टकटकी बांध देख रही थी। उन्होंने सोचा कि सीधी बात न कहकर जरा हेर-फेर से अपना प्रोग्राम बताया जाय। सुनांचे वह हँसकर बोले—'कोई खास बात नहीं थी, आज सारा दिन मैं इतना व्यस्त रहा कि तुमसे बात करने का मौका ही नहीं मिल सका। अब एकाएक ख्याल आया कि आज तुमसे तो कोई बात ही नहीं हुई।'

यह सुन कर अनिता बच्चों की तरह शरमा गयी। उसके दिल में ऐसा कोई शक नहीं हुआ कि ठाकुर साहब हेर-फेर करके उससे कुछ और कहने जा रहे हैं। दुनिया चाहे कुछ भी कहे परन्तु ठाकुर साहब का अनिता से वही सम्बन्ध था जो एक बुजुर्ग का अपने से छोटे के साथ होना चाहिए। अनिता ने भी आज तक उनके व्यवहार में कोई ऐसी-वैसी बात नहीं पाई थी। सुनांचे इस समय भी उनकी बात सुनकर अनिता को ऐसे ही लगा जैसे वह अपने पिता की प्यार भरी बात सुन रही हो। अनिता की आँखें झुक गईं और वह अपनी उँगलियों में साड़ी का कोना मसलने लगी। ठाकुर साहब फिर बोले—'अनिता, सभी लोग कहते हैं कि हमारा यह दौरा बहुत ही सफल रहा, क्यों तुम्हारा क्या ख्याल है?'

ठाकुर साहब का प्यार भरा व्यवहार देखकर अनिता यह बात भूल गई कि उन्हीं के पिट्ठुओं ने दूसरी पार्टियों के जलसों में हुड़दंग मचाकर उन्हें असफल बना दिया था। पिछले कुछ दिनों से उसने यह

सोचकर अपने मन को तसल्ली दे दी थी कि आखिर राजनीति की बातों को ठाकुर साहब उससे बेहतर समझते हैं। यदि वह किसी चीज को आवश्यक समझकर करें तो उसे इस बात का अधिकार नहीं था कि वह ख्वामख्वाह अपने मन में उल्टी-सीधी बातें सोचे। उसने खुश होकर उत्तर दिया—'लोग झूठ थोड़े ही बोलते हैं। जब सूर्य आकाश में चमकता है तो सारा संसार देख लेता है। मुझसे भी हर एक ने आपकी सफलता का जिकर किया।'

यह तो केवल ठाकुर साहब ही जानते थे कि इस सफलता को प्राप्त करने के लिए उन्हें क्या-क्या पापड़ बेलने पड़े, भला यह भोली-भाली लड़की उनके हथकण्डों की तह में कैसे पहुँच सकती थी। एक बार तो ठाकुर साहब के मन को यह सोचकर अच्छा नहीं लगा कि वह ऐसी सीधी-सादी लड़की के भोलेपन का नाजायज फायदा उठावें। परन्तु उन्हें फिर ख्याल आया कि उसका यह भोलापन ही तो उसका सबसे बड़ा हथियार था, क्योंकि यदि यह दूसरी पार्टी में भी घुस जाय तो इसके भोलेपन के कारण किसी को इस पर शक नहीं हो सकता। उन्होंने भी मन में सोच लिया कि राजनीति में सब कुछ चलता है। उन्हें अंग्रेजी की कहावत याद आ गई कि प्रेम और लड़ाई के क्षेत्र में किसी भी हथियार का प्रयोग अनुचित नहीं। ठाकुर साहब ने इधर-उधर की कुछ और बातें करने के बाद अनायास ही प्रश्न किया—'अनिता, तुमने मेहर बाबा का तो नाम सुना होगा ?'

अनिता चौंकी, फिर धीमे से बोली—'जी हाँ।'

'कभी उनसे मिली भी हो या नहीं ?'

यह सुनकर अनिता के हाथ-पांव फूल गये। उसने सोचा कि क्या कहीं वहाँ जाने की सूचना भी ठाकुर साहब तक पहुँच चुकी ?

ठाकुर साहब की शकल से ऐसा तो नहीं लग रहा था। जो भी हो, अनिता ने सोचा कि झूठ बोलना किसी तरह भी ठीक नहीं होगा। आखिर इसकी जरूरत भी क्या है ? ठाकुर साहब ने कभी उसे इस बात से मना तो नहीं किया था। वह धीमे से बोली—'जी हां! एक बार।'

'अच्छा, मैं समझा था शायद तुम कभी न मिली हो।'

'जी. मैं शायद कभी न मिलती लेकिन मौका ही ऐसा पड़ गया था।'

'अच्छा ?'

'जी हां, मेरी एक सखी है उर्मिला।'

'क्या वह उनकी पार्टी में काम करती है ?'

'जी यह तो मैं नहीं कह सकती। मुझे इससे कोई दिलचस्पी भी नहीं लेकिन एक रोज शाम के समय वह मुझे घसीटकर ले गई।'

'तो क्या हुआ ? इसमें कोई बुराई की बात तो नहीं।'

'जी हाँ, यही वह भी कह रही थी।'

'कैसे लगे मेहर बाबा ?'

'वह तो बिल्कुल साधु हैं।'

'तुमने ठीक कहा, उनके दो रूप है, एक साधु का और दूसरा राजनीतिज्ञ का। परन्तु इससे मेरा यह मतलब नहीं है कि वह बहुरुपिये हैं। नहीं, वह बड़े उच्च-कोटि के मनुष्य हैं, रही राजनीति की बात, तो यह एक अलग चीज है। अपने-अपने विचारों को फैलाने का हर एक को अधिकार है।'

ठाकुर साहब ने यह बातें इसलिए कही कि अनिता के मन में मेहर बाबा के प्रति जो आदर की भावना है उसको ठेस न लगे। उन्होंने फिर

हना शुरू किया—'अनिता तुम अभी बच्ची हो और राजनीति के
र-फेर को नहीं समझती । परन्तु तुम्हें इतना तो मालूम होना चाहिए
क हमारे देश में कई पार्टियाँ हैं जिनके अपने-अपने आदर्श और उद्देश्य
हैं, वह एक दूसरे का विरोध भी करती हैं; इसलिए कि यदि जनता
उनसे सहमत हो तो चुनाव में उन्हें वोट देकर देश का राज्य चलाने के
लिए गद्दियाँ प्राप्त कर सकें । अब यह जनता के हाथ में है कि वह किसे
चुने और किसको न चुने ।'

ठाकुर साहब ऊँचे स्तर की बातें कह तो रहे थे, परन्तु वह उन आदमियों में से थे जो अपना उल्लू सीधा करने के लिए कठोर से कठोर काम करने से भी बाज नहीं आते । परन्तु वह यह भी जानते थे कि अनिता जैसी भोली-भाली लड़की से काम लेने के लिए कुछ न कुछ हेर-फेर करना पड़ेगा । बातें करते समय वह अनिता के चेहरे को बड़े ध्यान से देखते रहे । वह चुप हुए तो अनिता ने कहा—'आप ठीक ही कहते हैं । बात यह है कि मैं राजनीति की समस्याओं को नहीं समझती । मेरा मतलब है कि मैं उनकी गहराई तक नहीं पहुँच पाती, क्योंकि मुझे इस विषय से कोई खास दिलचस्पी नहीं है ।'

'वह तो ठीक है परन्तु मेरे साथ रह कर तुमको कुछ न कुछ दिलचस्पी लेनी ही पड़ेगी, क्योंकि मैं तो राजनीति के क्षेत्र में हूँ ।'

अनिता ने झुकी आँखों को पल भर के लिए उठाया, वह ठाकुर साहब के चेहरे से अन्दाज लगाना चाहती थी कि कहीं उन्हें क्रोध तो नहीं आ रहा है । परन्तु ऐसी कोई बात नहीं थी । ठाकुर साहब का चेहरा शान्त था, वह उसी मीठे स्वर में बोले—'तुम मेरा मतलब समझ गई न ?'

'जी हाँ, मेरी तो यही कोशिश रहती है कि आप जो काम मुझे सौंपें उसे मैं ठीक ढंग से कर सकूँ।'

'हाँ-हाँ, वह तो मैं जानता हूँ और फिर मैं तुमसे कितनी बार कह भी चुका हूँ कि तुम्हारा काम मुझे सदा ही बहुत पसन्द आता है। हाँ, अनिता एक बात याद आ गई।'

'क्या?'

'अपने सलाहकारों की अनुमति से मैंने तुम्हारे लिए एक काम सोचा है।'

'आप कहिये मैं जरूर करूँगी।'

ठाकुर साहब पल भर को रुके और फिर बोले—'देखो अनिता, मेरे ख्याल से तुम मेहर बाबा के पास आना-जाना शुरू कर दो।'

अनिता ने चौंक कर सिर उठाया तो ठाकुर साहब बोले—'देखो, जहाँ तक मेहर बाबा के साधु होने का सम्बन्ध है मैं उनका बड़ा आदर करता हूँ और मेरी इच्छा है कि तुम भी उनका आदर करो। परन्तु जहाँ तक उनकी राजनीति का सम्बन्ध है वहाँ हमारा उनसे कुछ मत-भेद है, समझी?'

'जी हाँ।'

'मैं चाहता हूँ कि उनके इन विचारों और प्रोग्रामों के बारे में जानकारी प्राप्त करके तुम मुझे पूरी सूचना दे दिया करो। याद रखो कि राजनीति के क्षेत्र में मेहर बाबा साधु होते हुए भी हमारी आलोचना जरूर करते हैं, बहुत ही कड़ी आलोचना करते हैं, और वह हमें किसी प्रकार की छूट देने को तैयार नहीं। इसीलिए हमें राज-नीति के क्षेत्र में उनसे टक्कर लेनी ही पड़ेगी। तुम चूँकि मेरे साथ हो इसलिए तुम्हारा कर्तव्य है कि जो भी तुमसे बन सके वह हमारे लिए करो।'

ठाकुर साहव ने अपना सुझाव ऐसे ढंग से रखा था कि अनिता को पीछा छुड़ाना असंभव हो गया। यह ठीक है कि मेहर बाबा साधु थे, परन्तु इसके साथ-साथ वह राजनीतिज्ञ भी तो थे। सचमुच वह दूसरी पार्टियों की आलोचना करने से पीछे नहीं हटते थे। वह चुनाव जीतने के लिए जलसे भी कर रहे थे, और लोगों से वोटों की माँग भी कर रहे थे। अनिता ज्यादा गहराई तक नहीं सोच सकी, उसने उलझे हुए अन्दाज में पूछा—'मुझे क्या करना होगा ?'

'यही, कि तुम उनके जलसों में जाओ उनकी सब बातें सुनो, इधर-उधर से भी जो कुछ पता चले सब की रिपोर्ट तैयार करके मुझ तक पहुँचा दो।'

अनिता को यह काम कुछ कठिन नहीं लगा और न सरसरी नजर से उसे इसमें कोई बुराई दिखाई दी। आखिर ठाकुर साहब का भी तो उस पर बहुत अहसान था। वह उनके सिवा किसी और का सहारा भी तो नहीं ले सकती थी। ठाकुर साहब फिर बोले—'घबराने की कोई बात नहीं, अब कुछ ही दिनों में चुनाव होने वाले हैं, बस चुनाव तक तुम्हें यह काम करना होगा, उसके बाद इसकी कोई जरूरत नहीं रहेगी।'

अनिता ने कोई आपत्ति नहीं की, इसलिए कुछ देर तक ठाकुर साहब उसे कई और बातें समझाते रहे। अन्त में ठाकुर साहब से विदा होकर जब वह घर पर खाना खाकर लेटी तो यह सोच कर कि अब उसे मेहर बाबा के यहाँ जाने में आज्ञा नहीं लेनी पड़ेगी, वह खुश थी। इस खुशी में वह इस बात को भी भूल गई कि उनके यहाँ वह जासूसी करने जाया करेगी, जैसा कि ठाकुर साहब ने उससे कहा था। अनिता ने यह भी एक सरल सी बात समझी। आखिर मेहर बाबा जो कुछ कहते थे वह चोरी-छिपी तो नहीं कहते थे उनके यहाँ

जो बात होनी थी डंके की चोट होनी थी। राजनीति का अर्थ वह यह नहीं समझते थे कि दूसरों को धोखा दिया जाय या उनसे झूठ बोला जाय। इसलिए उनकी किसी बात को ठाकुर साहब तक पहुँचाना आसान बात है। अनिता अपने मन में यही समझी कि भगवान ने इसी बहाने से उसे मेहर बाबा के निकट रहने का मौका दिया है।

जब वह इसी तरह बिस्तर पर लेटी-लेटी अपने विचारों के बहावों में बहती जा रही थी तो अचानक ही किसी के दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनाई दी। उसने लेटे-लेटे ऊँचे स्वर में पूछा—'कौन है?'

'मैं हूँ। सो गई क्या?'

यह उर्मिला की आवाज थी। जब अनिता ने उसकी आवाज पहचानी तो उसे बड़ी खुशी हुई। उछल कर बिस्तर से उठी और झट से किवाड़े खोल दिये। उर्मिला अन्दर आई तो बड़े जोर के साथ उसके गले से लिपट गई।

उर्मिला को उसके इस तरह लिपटने से अचम्भा हुआ, बोली—'क्यों री आज तो बड़ी खुश दिखाई दे रही है। बता तो किस कारण इतना प्यार उमड़ आया है? कहीं किसी से प्रेम तो नहीं हो गया है?'

अनिता उसकी यह बात सुन कर कुछ झेंपी, और कहने लगी—'मुझे तो प्यार तुम्हीं से है। परन्तु खुशी इस बात की है कि आज तुम बड़े मौके पर आई हो।'

'क्यों, कैसा मौका? मैं कुछ समझी नहीं।'

'ऐसी कोई खास बात नहीं है जिसे समझाने की जरूरत पड़े। आज जरा मैं ऊबी हुई थी, समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ, क्या न करूँ? इतने में ही तुम्हारी आवाज सुनाई दी, जिसे सुन कर मुझे इतनी खुशी हुई कि तुम इसका अन्दाजा नहीं लगा सकती। अच्छा छोड़ो इन

तों को, श्राश्रो वैठो—वैठना क्या, श्राश्रो दोनों वहनें विस्तर पर लेट र वातें करें ।'

दूसरे ही पल दोनों एक दूसरे की श्रोर मुँह करके लेट गईं श्रौर वाँहें एक दूसरी के गले में डाल दीं । उर्मिला की समझ में तो कुछ नहीं श्राया कि श्रव श्रनिता इतना प्रेम क्यों जता रही है लेकिन फिर उसने मन में यही नतीजा निकाला कि हो सकता है कि श्राज श्रनिता का मूड ही ऐसा हो रहा हो । उसने यह भी सोचा कि चूंकि श्रनिता कुछ दिनों के लिए ठाकुर साहव के साथ वाहर चली गई थी, इसलिए श्राज सखी से मुलाकात होने पर उसे कुछ श्रधिक खुशी हो रही हो । पहले तो उर्मिला उसके दौरे के वारे में वातचीत करती रही, फिर एकाएक वोली—'श्ररी श्रनिता, मेहर वावा से मुलाकात के वाद तो तू एकदम ही वाहर चली गई थी, मैं तुझसे यह भी नहीं पूछ पाई कि मेहर वावा के यहाँ फिर कभी चलोगी या नहीं ।'

उर्मिला ने यह वात भी श्रनिता के मन की कही थी । चुनांचे श्रनिता चहक कर वोली—'क्यों नहीं चलेंगे जी । सच पूछो तो एक वार मिल कर वार-वार मिलने को जी चाहता है ।'

'परन्तु कहीं तुम्हारे ठाकुर साहव को कोई श्रापत्ति हुई तो ।'

'नहीं, मैंने उन्हें वता दिया है कि मैं श्रपनी एक सखी के सा मेहर वावा के दर्शन करने चली गई थी ।'

'श्रच्छा, तो फिर ठाकुर साहव विगड़े तो नहीं ? उन्होंने तुमसे क कहा तो नहीं ?'

'कुछ नहीं कहा, वस इतना ही वोले कि मेहर वावा वड़े महा हैं । उनके पास जाने में कोई हर्ज नहीं है ।'

उर्मिला की जगह कोई श्रौर होता तो शायद उसे इस वात प

शक हो जाता कि ठाकुर साहब जैसे खास नेता ने वनिता से यह बात यूं ही नहीं कह दी होगी, जरूर इसका कुछ कारण होगा। परन्तु उर्मिला भी आखिर सीधी-सादी लड़की थी इसलिए उसे कुछ शक नहीं हुआ। उसने केवल यही सोचा कि मेहर बाबा बूढ़े हैं और बिल्कुल साधु इसलिए उनके पास आने-जाने में ठाकुर साहब ने कोई आपत्ति नहीं उठाई होगी। वह खुश होकर बोली—'मैं तो पहले ही कहती थी, न जाने तुम क्यों मरी जा रही थी ?'

'अब क्या कहूं उर्मिला, ठाकुर साहब ने मेरे सिर पर हाथ रखा है, उन्होंने मुझे सहारा दिया है, उनका व्यवहार सदा ही एक पिता का सा रहा है, तुम्हीं बताओ मुझे उनसे डर के तो रहना ही चाहिए। या कम से कम ऐसी कोई हरकत नहीं करनी चाहिए कि जिससे उनके मन को दुःख हो।'

'वह सब तो ठीक है, परन्तु हम लड़कियों को राजनीति से क्या मतलब ? तुमसे जो काम वह करवाते हैं सो तुम कर ही देती हो बस, और तुम्हें क्या करना है ?'

'हां, यही मेरी भूल थी, जब तक मुझे ठाकुर साहब के विचारों का पता न चलता, तब तक मैं क्या कह सकती थी।'

'छोड़ो भी इन बातों को अब यह बताओ कि मेहर बाबा के पास चलने का कब प्रोग्राम है ?'

'जब तुम कहो।'

'तो कल ही चलो।'

'चलो।'

'पक्की बात ?'

'बिल्कुल पक्की बात।'

'यह न हो कि कल को तुम्हारा मन डोल जाय ।'

'नहीं जी मन कैसे डोलेगा, कल चलेंगे बल्कि मैं तो······।'

अनिता रुक गई, तो उर्मिला बोली—'तुम कुछ कहते-कहते रुक क्यों गई ?'

'नहीं, यूं ही ।'

'अच्छा तो अब हमसे भी छिपाने लगी ।'

अनिता ने प्यार से हल्की-सी चपत उर्मिला के मुँह पर लगाते हुए कहा—'भला तुमसे क्या छिपाना ? और फिर छिपाने की बात भी क्या है ?'

'मैं कहती हूं कि यह बात है तो फिर बगलें क्यों झांक रही हो ? मन की बात कह दो न ?'

'बात इतनी ही थी कि ठाकुर साहब के साथ दौरा करने में बड़ा मजा आया । मैं सोच रही थी कि मेहर बाबा भी तो चुनाव के सम्बन्ध में दौरे पर जायेंगे ।'

'हां-हां, मेरे ख्याल में वह शीघ्र ही जाने वाले हैं । तो क्या तुम्हारा मन हो रहा है कि तुम भी उनके साथ दौरे पर चलो ।'

'हां, जी तो यही चाहता है ।'

'परन्तु ?'

'अब क्या कहूं ?'

'शायद ठाकुर साहब का डर होगा ।'

'जी नहीं, अब उनका कोई डर नहीं । उन्होंने तो मुझे कह दिया है कि तुम काफी काम कर चुकी हो, इसलिए चाहो तो दस-पन्द्रह दिन की छुट्टी मना लो ।'

'अच्छा तो यह बात है। फिर अड़चन क्या है? मैं तो पहले से ही मेहर बाबा के साथ जाने का प्रोग्राम बनाये हुए हूँ।'

'तब तो और भी मजा आयेगा परन्तु......।' अनिता ने यह बात खूब उछल कर कही और फिर उसका सिर कुछ निराशा से झुक गया।

'यह परन्तु, परन्तु क्या लगा रखी है तुमने?'

'मेहर बाबा मुझे अपने साथ ले जाना स्वीकार करेंगे या नहीं?'

'उनकी बात छोड़ो। कल ही उनसे मिलने चलेंगे, तो मैं उनसे कह दूँगी कि मैं अपने साथ तुम्हें भी ले जा रही हूँ।'

'अगर कहीं उन्होंने मना किया कि यह तो ठाकुर साहब के पास रहती है तो?'

'अजी छोड़ो इन बातों को, तुम मेहर बाबा को समझी ही नहीं। उनके दिमाग में ऐसी बात आ ही नहीं सकती। उनके पास कई लोग ऐसे भी आते हैं जिनका ठाकुर साहब से भी सम्बन्ध है, लेकिन मेहर बाबा उनसे भी उसी स्नेह से मिलते हैं।'

इसके बाद दोनों सखियों का अच्छा सा प्रोग्राम बनता रहा, और वे यह सोच-सोच कर खुश होती रहीं कि जब वे मेहर बाबा के साथ दौरे पर जायेंगी तो कितना मजा आयेगा।

× × × ×

दूसरे दिन वे दोनों मेहर बाबा के यहाँ पहुँचीं। उस दिन वे जान-बूझ कर देर से गईं ताकि मेहर बाबा के पास कोई न रहे। अब तो अनिता को भी ठाकुर साहब के पास जाना जरूरी नहीं था, क्योंकि अब तो पहली ड्यूटी उसकी यही लगी थी कि वह मेहर बाबा के आस-पास मँडराती रहे।

जब वे पहुँचीं तो वाकई मेहर बाबा के पास कोई और नहीं था।

'यह न हो कि कल को तुम्हारा मन डोल जाय ।'

'नहीं जी मन कैसे डोलेगा, कल चलेंगे बल्कि मैं तो......।'

अनिता रुक गई, तो उर्मिला बोली—'तुम कुछ कहते-कहते रुक क्यों गई ?'

'नहीं, यूं ही ।'

'अच्छा तो अब हमसे भी छिपाने लगी ।'

अनिता ने प्यार से हल्की-सी चपत उर्मिला के मुँह पर लगाते हुए कहा—'भला तुमसे क्या छिपाना ? और फिर छिपाने की बात भी क्या है ?'

'मैं कहती हूँ कि यह बात है तो फिर बगलें क्यों झांक रही हो ? मन की बात कह दो न ?'

'बात इतनी ही थी कि ठाकुर साहब के साथ दौरा करने में बड़ा मजा आया । मैं सोच रही थी कि मेहर बाबा भी तो चुनाव के सम्बन्ध में दौरे पर जायेंगे ।'

'हां-हां, मेरे ख्याल में वह शीघ्र ही जाने वाले हैं । तो क्या तुम्हारा मन हो रहा है कि तुम भी उनके साथ दौरे पर चलो ।'

'हां, जी तो यही चाहता है ।'

'परन्तु ?'

'अब क्या कहूं ?'

'शायद ठाकुर साहब का डर होगा ।'

'जी नहीं, अब उनका कोई डर नहीं । उन्होंने तो मुझे कह दिया है कि तुम काफी काम कर चुकी हो, इसलिए चाहो तो दस-पन्द्रह दिन की छुट्टी मना लो ।'

'अच्छा तो यह बात है। फिर अड़चन क्या है ? मैं तो पहले से ही मेहर बाबा के साथ जाने का प्रोग्राम बनाये हुए हूँ।'

'तब तो और भी मजा आयेगा परन्तु''''''।' अनिता ने यह बात खूब उछल कर कही और फिर उसका सिर कुछ निराशा से झुक गया।

'यह परन्तु, परन्तु क्या लगा रखी है तुमने ?'

'मेहर बाबा मुझे अपने साथ ले जाना स्वीकार करेंगे या नहीं ?'

'उनकी बात छोड़ो। कल ही उनसे मिलने चलेंगे, तो मैं उनसे कह दूंगी कि मैं अपने साथ तुम्हें भी ले जा रही हूँ।'

'अगर कहीं उन्होंने मना किया कि यह तो ठाकुर साहब के पास रहती है तो ?'

'अजी छोड़ो इन बातों को, तुम मेहर बाबा को समझी ही नहीं। उनके दिमाग में ऐसी बात आ ही नहीं सकती। उनके पास कई लोग ऐसे भी आते हैं जिनका ठाकुर साहब से भी सम्बन्ध है, लेकिन मेहर बाबा उनसे भी उसी स्नेह से मिलते हैं।'

इसके बाद दोनों सखियों का अच्छा सा प्रोग्राम बनता रहा, और वे यह सोच-सोच कर खुश होती रहीं कि जब वे मेहर बाबा के साथ दौरे पर जायेंगी तो कितना मजा आयेगा।

× × × ×

दूसरे दिन वे दोनों मेहर बाबा के यहाँ पहुँचीं। उस दिन वे जान-बूझ कर देर से गईं ताकि मेहर बाबा के पास कोई न रहे। अब तो अनिता को भी ठाकुर साहब के पास जाना जरूरी नहीं था, क्योंकि अब तो पहली ड्यूटी उसकी यही लगी थी कि वह मेहर बाबा के आस-पास मँडराती रहे।

जब वे पहुँचीं तो वाकई मेहर बाबा के पास कोई और नहीं था।

वे दोनों उनके निकट जा बैठीं और उन्हें देखते ही मेहर बाबा बोले—'यह अनिता बेटी ही है न ?'

उर्मिला—'जी हां, पहले भी तो एक बार आ चुकी है।'

मेहर बाबा—'हाँ वह तो मुझे याद है लेकिन फिर भी मैंने पूछ ही लिया।'

अनिता को मेहर बाबा के साथ बैठकर उसी अनोखी शान्ति का अनुभव हुआ जो कि पहली बार हुआ था। मेहर बाबा के बात करने के ढंग में किसी प्रकार का संकोच नहीं था। न कोई हेर-फेर दिखाई देता था। यूं लगता था जैसे वह उन दोनों को अपनी बेटियां ही समझते हों। बातों-बातों में मेहर बाबा बोले—'बेटी संजोग की बात है, मैंने अभी तक चाय नहीं पी है, आज फिर हम लोग इकट्ठे ही चाय पियेंगे।'

अनिता ने चुपके से उर्मिला के कान में कुछ कहा तो मेहर बाबा ने उसे यह हरकत करते देख लिया, मुस्कराकर बोले—'यह हमारी बेटी क्या कह रही है तुम्हारे कान में उर्मिला ?'

उर्मिला खिलखिला कर हँसते हुए बोली—'कह रही है कि आज मेहर बाबा को हम खुद चाय बनाकर पिलायेंगे।'

मेहर बाबा ने पीछे को सिर फेर कर जोर का कहकहा लगाया और बोले—'क्यों नहीं, क्यों नहीं ? लेकिन बेटी चाय के पानी में तुलसी की कुछ पत्ती जरूर डाल देना।'

दोनों सखियां उठकर थोड़ी दूर बने रसोई घर में चली गईं और दस मिनट बाद चाय तैयार करके ले आईं। मेहर बाबा ने पहला घूंट भरते ही कहा—'आ हा-हा ! मेरी बेटी अनिता ने कैसी स्वादिष्ट चाय बनायी है। जी चाहता है कि हर रोज इसी बिटिया के

हाथ की बनी हुई चाय पिया करूं । परन्तु यह कैसे हो सकता है ? यदि मुझे यहां रहना होता तो शायद मेरे मन की यह इच्छा पूरी हो जाती, लेकिन मैं तो शीघ्र ही दौरे पर जाने वाला हूं ।'

उर्मिला ने अनिता को चुपके से कोहनी मारकर इशारे ही इशारे में समझा दिया कि अपना सुझाव रखने का यही सुनहरा मौका है । तब वह उनकी ओर देखते हुए बोली—'मेहर बाबा, यह काम इतना असम्भव नहीं जितना आप समझते हैं । आपको मैंने बताया नहीं कि अनिता भी हमारे साथ चल रही है । मैं इसे अपने साथ ले जा रही हूं ।'

'सच ?'—मेहर बाबा ने खुशी और आश्चर्य के मिले-जुले स्वर में पूछा ।

उर्मिला बोली—'केवल आपकी आज्ञा लेना चाहती है ।'

मेहर बाबा—'वाह बेटी इसमें आज्ञा की क्या जरूरत है ? जैसे तुम मेरी बेटी, वैसी ही अनिता भी मेरी बेटी है ।'

कुछ देर बातचीत करने के बाद दोनों सखियां वहां से बहुत खुश-खुश वापस लौटीं और फिर उन्होंने दौरे पर जाने की तैयारी शुरू कर दी ।

× × × ×

दूसरे ही रोज सुबह अनिता ने ठाकुर साहब को यह खबर सुनाई तो वह मारे खुशी के उछल पड़े बोले—'अरी अनिता, तुमने इतनी जल्दी काम बना लिया ? मेहर बाबा ने तुम्हें साथ ले जाने में कोई आपत्ति नहीं उठाई ?'

'जी नहीं ।'

ठाकुर साहब ने सोचा कि उनका अन्दाजा ठीक ही था । अनिता इतनी भोली-भाली दिखाई देती है कि इस पर मेहर बाबा को कोई शक हो भी नहीं सकता ।

अनिता बोली—'असल में मुझे अपनी सहेली उर्मिला की बड़ी सहायता मिली। यदि उसका साथ न मिलता तो मैं इतनी सरलता से यह काम न कर पाती।'

यह कहते-कहते अनिता की आत्मा ने उसे धीमे से डांटा, परन्तु असल बात यही थी कि उसे मेहर बाबा के निकट रहने का शौक था। उनके पास रह कर उसे अजीब सी शान्ति मिलती थी। इस समय उनके पास रहने का और कोई तरीका भी तो नहीं था। अभी तक अनिता का मन बँटा हुआ था, एक ओर ठाकुर साहब थे जो इस संसार में उसके सब कुछ थे और दूसरी ओर मेहर बाबा थे जो साक्षात शान्ति के अवतार थे। अनिता के मन में कोई पाप नहीं था, वह मेहर बाबा को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाना चाहती थी।

अब ठाकुर साहब उसे कुछ और गुर भी समझाते रहे। ठाकुर साहब का भी बात करने का ढंग ऐसा था कि जिससे अनिता यह महसूस न करे कि वह मेहर बाबा के विरुद्ध थे, बल्कि यह समझे कि व्यक्तिगत रूप में उनके मन में मेहर बाबा का बड़ा सम्मान हो। वह तो केवल राजनीति के क्षेत्र में ही अलग विचार रखते हों।

× × ×

आखिर एक रोज अनिता और उर्मिला मेहर बाबा के साथ दौरे पर रवाना हो गईं। इस दौरे के सिलसिले में वे सब उस स्थान पर भी पहुँचे जहाँ ठाकुर साहब कुछ दिन पहले भाषण दे चुके थे। अनिता तो जानती ही थी कि ठाकुर साहब के जलसे में उनके पिट्ठू भी बहुत बड़ी संख्या में थे जो देहातियों को घेर-घार कर वहाँ ले आये थे, परन्तु मेहर बाबा के बारे में इस बात की कल्पना नहीं की जा सकती थी। फिर भी अनिता ने देखा कि उस रोज वहाँ आने वालों की संख्या ठाकुर साहब

के जल्से से दुगुनी थी। जिसका नतीजा यह निकला कि शामियानों के बाहर खेतों में बाँस गाड़ दिये गये और उनके ऊपर लाउड स्पीकर बाँध दिये गये, ताकि जो लोग पण्डाल में न समा सकें वह खेतों में भी मेहर बाबा का भाषण सुन सकें।

आज फिर वैसे ही गैस की हण्डियाँ जल रही थीं, जंगल में मंगल हो रहा था और वहाँ एक भी सट्टेबाज नहीं खड़ा था।

आखिर मेहर बाबा के भाषण का समय आ पहुँचा। उन्होंने किसी को इस बात की आज्ञा नहीं दी कि वह खुशामद भरे शब्दों में उनका परिचय कराये। वह स्वयं ही यूँ भाषण देने लगे—

'भाइयो बेटो और बेटियो,

'मुझे बहुत खुशी है कि मैं आज आपके सम्मुख अपना दृष्टि-कोण रखने जा रहा हूँ। हो सकता है मेरा इस तरह भाषण देना आपको कुछ अजीब सा लगे क्योंकि मैं आपसे यह नहीं कहूँगा कि मैं आपका तुच्छ सेवक हूँ और सिर्फ आपकी सेवा के ख्याल से त्याग का जीवन बिता रहा हूँ क्योंकि ऐसा कहना महान् झूठ होगा। सही बात तो यह है कि मैं अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए ऐसा जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। मैं हमेशा गरीब था और हूँ। न मैंने आप लोगों की सेवा के लिए अपनी जायदाद ही बेची है और न आपकी खातिर जेल ही गया हूँ। एक बार जेल अवश्य जाना पड़ा था, वह भी अपने देश को गुलामी की जंजीरों से आजाद कराने के हेतु। यह तो मनुष्य होने के नाते मेरा कर्तव्य था। शायद आप में से भी बहुत सारे पुरुष जेल गये होंगे।'

वह यहीं तक पहुँचे थे कि सारा पण्डाल तालियों की आवाज से गूँज उठा। मेहर बाबा ने अपने दोनों बाजू उठाकर हाथ फैला दिये और जनता से अनुरोध करने लगे कि वह चुप हो जाय। सारी जनता

उनके अनुरोध पर चुप हो गई, तब वह बोले—'देखिए मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि यदि अब किसी व्यक्ति ने तालियाँ बजाईं तो मैं अपना भाषण बिना पूरा किये ही चला जाऊँगा।'

उनकी यह चेतावनी सुनकर सारी जनता में खामोशी छा गई। मेहर बाबा कुछ देर मौन रहने के बाद फिर यूँ भाषण देने लगे—'आप जानते ही होंगे कि हमारे महान् नेता हर बात कल पर टाल देते हैं। मेरा कहने का अर्थ यह है कि इतना समय बीत जाने पर अनाज की देश में कोई कमी नहीं होगी, इस पंचवर्षीय योजना के बाद सब चीजें सस्ती हो जायेंगी। अगली पंचवर्षीय योजना के बाद देश के हर नागरिक के पास अपना घर होगा। इतना समय गुजर जाने पर देश के हर प्राणी को पहनने के लिए कपड़े मिल सकेंगे। इस तरह से हर काम कल पर टलता जा रहा है। महीनों गुजरे, वर्षों गुजर गये। परन्तु इनका कल अभी तक नहीं आया, और न आयेगा।

'अब मैं अपने दूसरे देशवासियों के साथ मिलकर यह पूछना चाहता हूँ कि वह कल आयेगा भी या नहीं। मैं दावे से कहता हूँ इन महान् नेताओं का कोई उद्देश्य नहीं है। मैं पूछता हूँ कि यदि वे सच्चे देश-भक्त हैं तो अपना दृष्टिकोण जनता के आगे रखें और फिर बिना किसी अनुचित दबाव के उन्हीं पर यह बात छोड़ दें कि वह उनकी पार्टी को वोट दे। इन लोभियों को इतना भी नहीं मालूम है कि जब पूरे का पूरा देश आगे बढ़ेगा तो वे भी सब के साथ आगे बढ़ जायेंगे। बड़े दुःख से कहना पड़ता है कि ऐसा होता नहीं। जब अपने आपको सेवक कहलाने वाले ये नेता अपना उल्लू सीधा करते हैं तो उन्हें अपने नीचे वालों को साथ मिलाना पड़ता है। जनता का सारा रुपया जो योजनाओं पर खर्च होना चाहिए उस धन का काफी बड़ा हिस्सा नेता

और इनके पिट्ठू आपस में बाँट लेते हैं। शिकायत करें तो किससे करे दुखड़ा रोये तो किसके आगे रोयें। सोचने की बात है। जिनके पास आप शिकायत ले कर जायेंगे वह पहले से आपका माल हजम किये बैठा होगा। आप चीखेंगे, चिल्लायेंगे, वह आपसे उल्टी-सीधी बातें बना कर आपको शान्त कर देगा। आप शान्त होकर घर बैठ रहेंगे और देश में उल्टी गंगा ज्यों की त्यों बहती रहेगी। हमारे इन देश भक्तों की महान् कला है बातें बनाना। आप उनकी बातें सुनकर गद्‌गद् हो उठते हैं। आप समझते हैं कि इस संसार में आप से अधिक कोई भी भाग्यवान नहीं क्योंकि आपको ऐसे उच्चकोटि के नेता मिले हैं जो दिन-रात आपके गम में घुले जा रहे हैं। मजे की बात तो यह है कि ऐसे नेता अपने जेल जाने का भी खूब प्रचार करते है और उसका पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं। जैसे जेल जाना भी कोई डिप्लोमा प्राप्त करना है। दो-चार साल बड़े आराम से जेल में काट आये तो गोया बहुत बड़ा तीर्थ कर आये। अब वे अपने देश से, अपनी जनता से, जेल जाने की कीमत वसूल कर रहे हैं। जेल जाने के नाम पर अपने गरीब देशवासियों को निचोड़कर उनका खून चूस रहे हैं। मैं पूछता हूँ कि क्या विदेशियों ने जेल में कोई ऐसा स्कूल या कोई ऐसा कालेज खोला था जिसमें इस बात की शिक्षा दी जाती थी कि एक स्वतन्त्र देश की समस्याएँ कैसे हल की जाती हैं, या राज्य का शासन कैसे किया जाता है ? न जाने जेल से लौट कर आने वाला हमारा हर नेता अपने आपको देश का शासन चलाने में निपुण क्यों समझता है। आज हर बड़ा नेता चाहता है कि वह कार की सवारी करता रहे, उसके घरों मे रेशमी परदे लटकते रहें, लोग उसे झुक-झुक कर सलाम करते रहें और वह देश का सेवक कहलाता रहे। यही कारण है कि जो एक बार गद्दी पर बैठने का मजा ले लेता है वह उमर

भर उसे छोड़ना नहीं चाहता। चाहे इसके लिए उसे कैसे-कैसे पापड़ बेलने पड़ें। चाहे गुण्डों का सहारा लेना पड़े चाहे देश की लुटिया डुबोनी पड़े। इसका नतीजा यह है कि देश में गुण्डों की संख्या बढ़ती जा रही है। वे गुण्डे भले लोगों की पगड़ियाँ उछालते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि 'सइयाँ भये कोतवाल अब डर काहे का'। यदि पुलिस उन्हें पकड़ कर जेल में बन्द भी कर दे तो उनके सेवक यही महान् नेता फौरन ही उन्हें जेलखाने से निकलवा लेंगे।

'जहाँ तक भाषणों का सम्बन्ध है, दिन रात पूंजी-पतियों को गालियाँ दी जा रही हैं। समाजवाद का आदर्श आपके सामने रखा जा रहा है। परन्तु राज पूंजीपतियों का ही है। मैं देख रहा हूँ, और मेरे साथ आप देख रहे हैं कि जब से देश स्वतन्त्र हुआ है तब से अमीर, और अमीर हो गये हैं, तथा गरीब, और गरीब हो गये हैं। देखा आपने, यह है हमारे समाजवाद का चमत्कार।'

वैसे इन महान् नेताओं की बातें सुनो तो हैरानी होती है। संसार के ऊँचे से ऊँचे आदर्शों पर भाषण देने में शेर हैं। एक कहावत है कि मनुष्य का जीवन साधारण होना चाहिए, परन्तु उसके विचार ऊँचे होने चाहिए। लेकिन यहाँ पर उल्टी बात है। देश के इन सेवकों को बड़े आराम का जीवन व्यतीत करने की जरूरत महसूस होती है, और उसी हिसाब से उनके विचार बहुत ही गिरे हुए होते हैं। सारी शिक्षा दूसरों के लिये हैं। वे इस देश के रहने वालों से इस बात की आशा रखते हैं कि वे देश के हित के लिये जीवन के हर सुख और हर आराम का बलिदान कर दें। आप से वादा किया जाता है कि आपके बच्चों का भविष्य बहुत उज्जवल होगा। फिर उन बच्चों से वादा किया जायगा कि उनके बच्चों का भविष्य बहुत उज्जवल होगा। बस

इसी तरह यह चक्कर चलता रहेगा। दूसरे लोग नेताओं के भाषण सुन-सुनकर खुश होते रहेंगे और यह नेता—देश के हित में घुलने वाले सेवक—दुनियाँ भर की ऐश करते रहेंगे। मतलब यह कि सारी शिक्षा केवल दूसरों के लिए है और नेता लोगों को इस शिक्षा की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि उन्होंने तो पहले ही त्याग का जीवन व्यतीत किया है।

'आप ऐसे स्वार्थी नेताओं से क्या इस बात की आशा रखते हैं कि आप का देश आगे बढ़ेगा और आप सुखी होंगे? अब मैं आपसे अन्तिम बात यह कहना चाहता हूँ कि अगर आप सच्चे देश-भक्त हैं और आप चाहते हैं कि आपका देश आगे बढ़े, दुनियाँ में नाम पैदा करे, आपके बच्चे सुखी हों, उनका भविष्य उज्ज्वल हो, तो आज से आप मेरे साथ इस बात की कसम खायें कि आप अब झूठे भाषणों के चक्कर में या सिर्फ अपनी लालच के चक्कर में अपना या अपने साथियों का वोट हरगिज ऐसी पार्टियों को नहीं देंगे जिनका जिक्र मैं अभी कर चुका हूँ। और आज से इस बात के लिए प्रयत्नशील होंगे कि आपका वोट सही व्यक्ति को मिले चाहे वह किसी भी पार्टी का हो। अगर आपने मेरे कहे अनुसार ऐसा किया तो एक दिन ऐसा जरूर आयेगा जब हम सुखी होंगे। अब आप मुझसे कह सकते हैं कि बहुत से अच्छे नेता दूसरी पार्टियों में भी हैं जो इस काबिल हैं कि उन्हें वोट देना चाहिए। मैं आपकी इस बात से सह-मत हूँ, आप उन्हें अवश्य वोट दें। साथ ही उनसे प्रार्थना करें कि वह सब मिलकर एक आदर्श पार्टी को जन्म दें और उसका नाम 'मानवता पार्टी' रक्खें। जिसका उद्देश्य ही जनता की मदद करना, अपने देश को आगे बढ़ाना है। अच्छा अब मैं आपसे विदा होता हूँ। जय हिन्द।'

मेहर बाबा का भाषण समाप्त हुआ। जितनी देर तक वह बोलते रहे सब लोगों पर मौन छाया रहा। भाषण समाप्त होने पर लोगों ने

खूब तालियां बजाईं और बाद में मेहर बाबा की जय के नारे गूंजते रहे।

मेहर बाबा का दौरा बहुत सफल रहा। जब वह लौट कर वापस आये तो उनकी धूम मच गई और उनकी शोहरत उनके आने से पहले ही वहां पहुँच गई। ठाकुर साहब यह सब बातें सुनते रहे, मन ही मन में उन्हें बुरा तो लगता रहा परन्तु उन्होंने अपने चेहरे से कोई बात जाहिर नहीं होने दी। वह अनिता के लौटने की प्रतीक्षा करते रहे ताकि उनको पूरी रिपोर्ट मिल जाये और आंखों-देखा हाल मालूम हो सके।

आखिर जब मेहर बाबा वापस पहुँच गये तो अनिता अपनी पूरी रिपोर्ट देने के लिए ठाकुर साहब के पास पहुँची। सुबह का समय था, हवा में ठण्डक थी, और ठाकुर साहब अपने मकान के ऊपर वाले कमरे में बैठे हुए थे। उस कमरे में बहुत सी खिड़कियाँ होने से कमरा काफी हवादार था। सफेद साड़ी और सफेद चोली पहने, माथे पर छोटी सी लाल बिन्दिया लगाये जब अनिता ने ठाकुर साहब को दोनों हाथ जोड़ कर नमस्ते की तो ठाकुर साहब ने लिखते-लिखते सिर ऊपर उठाकर देखा। अनिता को अपने सामने पाकर ठाकुर साहब का चेहरा खिल उठा। अपने फाउण्टेन पेन से ठुड्डी बजाते हुए बोले—'अनिता, तुम कब लौटीं?'

'कल रात ही वापस आई हूं।'

'कहो, इतने दिन अच्छी तो रहीं?'

'जी हां।'

'छुट्टियाँ मजे में बीत गईं न?'

कुछ लोग पास बैठे हुए थे, ठाकुर साहब ने उन्हीं को सुनाने के

लिए यह बात कही थी। अनिता भी उसका मतलब समझ गई, बोली—'जी हाँ, काफी आराम मिल गया मुझे।'

'इसीलिए तो मैंने तुमसे कहा था। मेरे साथ दौरे में तुमने काफी मेहनत की थी, इसलिए तुम्हें कुछ दिनों तक आराम करना चाहिए। अच्छा, अब तुम बगल वाले कमरे में बैठो, मुझे इन सज्जनों से कुछ बातचीत करनी है, फिर फुर्सत से तुम्हें आज का काम बताऊँगा।'

'बहुत अच्छा', कह कर अनिता दूसरे कमरे में चली गई।

अब ठाकुर साहब ने जल्दी-जल्दी वहाँ पर बैठे लोगों को निपटाया, क्योंकि वह जानते थे कि आज अनिता उन्हें अपनी पूरी रिपोर्ट देगी और वह स्वयं भी सब कुछ जानने के लिए उत्सुक हो रहे थे।

दूसरे कमरे में अनिता अपनी लिखी हुई रिपोर्ट को कहीं-कहीं से उलटा-पुलटा कर पढ़ने लगी। उसने कई कागजों पर रिपोर्ट लिख कर सारे कागज एक फाइल में रख लिये थे। उसने सब मामलों का सार काफी विस्तार के साथ लिखा था। वह थोड़ी देर तक सरसरी नजर से उस रिपोर्ट को देखती रही यहाँ तक कि ठाकुर साहब ने उसे आवाज दी। वह जल्दी से उठी और साड़ी का पल्लू सम्भालते हुए ठाकुर साहब के पास पहुँची। उस समय वह अकेले थे। ठाकुर साहब ने उसे बैठने का इशारा करते हुए कहा—'हाँ अनिता, बैठ जाओ, मैं सारी रिपोर्ट सुनने के लिए बेचैन हूँ।'

अनिता ने वह फाइल आगे बढ़ाते हुए कहा—'मैंने सारी रिपोर्ट लिख दी है और वह सब इस फाइल में है। मैंने सोचा कि जबानी मुझे सब कुछ याद नहीं रहेगा इसीलिए हर रोज की पूरी रिपोर्ट लिखकर इस फाइल में जमा कर दी है।'

ठाकुर साहब ने हाथ बढ़ा कर फाइल ले ली और उसे खोल कर

र-उधर से पढ़ते रहे। उसमें हर भाषण की तारीख लिखी थी और सके नीचे पूरा भाषण लिखा था। यह भाषण मेहर बाबा के भाषणों ा एक-एक शब्द तो नहीं पेश करता था, परन्तु उनका कोई ऐसा विचार नहीं था जो अनिता ने लिख न लिया हो। थोड़ा बहुत पढ़ने से ठाकुर साहब को इस बात का अन्दाजा हो गया कि यह रिपोर्ट बड़े काम की चीज थी। उन्होंने फाइल बन्द करके एक ओर रख दी और फिर कहने लगे—'यह तो तुमने बहुत अच्छा किया जो तुमने यह रिपोर्ट तैयार कर दी। इसे मैं इत्मिनान से पढ़ सकता हूँ। इसे पढ़ लेने के बाद तुमसे बातें तो होंगी ही, परन्तु इस समय भी मैं तुमसे कुछ जबानी बातें करना चाहता हूँ।'

'बहुत अच्छा। आप जो पूछना चाहें पूछ लें।'

'अनिता पहले यह तो बताओ कि तुम्हारे विचार में मेहर बाबा के जलसे हमसे ज्यादा सफल रहे या कम।'

अनिता जल्दी से इस बात का कोई उत्तर न दे सकी। उसके पास इसका उत्तर था, परन्तु वह कुछ झिझक गई। ठाकुर साहब शायद उसके मन की बात भांप गये। उन्होंने दूसरे ढंग से बात शुरू की—'अच्छा यह बताओ कि तुम्हारे ख्याल में मेहर बाबा के जलसे सफल रहे या नहीं।'

'जी हाँ, बहुत सफल रहे।'

'तुमने शब्द 'बहुत' का प्रयोग किया है जिसका मतलब यह हुआ कि उनके जलसे सफल नहीं, बहुत सफल रहे। क्यों, यही बात है न?'

'जी हाँ। आप बुरा न मानियेगा, क्योंकि मेरा तो यही कर्त्तव्य कि आपको बिल्कुल सही रिपोर्ट दूं।'

'बिल्कुल-बिल्कुल, इसमें बुरा मानने की क्या बात है? तु

बिल्कुल ठीक बात कही। यदि तुम मुझे गलत रिपोर्ट दोगी तो मैं अंधेरे मे रह जाऊँगा। अगर तुम सब बाते ठीक-ठीक कह दोगी तो मुझे उससे नई राह मिलेगी तभी मैं अपना अगला कदम ठीक से उठा सकूँगा। मेरे पास मेरी खुशामद करने वालों की कोई कमी नहीं है, फिर भी मैंने उन्हे यह काम नही सौंपा क्योंकि मुझे इस बात का डर था कि वही मुझे खुश करने को उन्होंने झूठ-मूठ की बातें कह दी तो मेरा सारा काम ही बिगड़ जायगा।। सच्ची रिपोर्ट के लिए ही तो मैंने तुम्हे इस काम पर लगाया था।'

'फिर तो ठाकुर साहब मैं यह बता देना चाहती हूँ कि उनके जलसों मे हमारे जलसो की अपेक्षा दुगुने या इससे भी अधिक लोग आते थे।'

'अच्छा ! इसका मतलब यह हुआ कि मेहर बाबा हमसे ज्यादा सफल रहे।'

'जी हाँ, लगता तो ऐसे ही है।'

अब ठाकुर साहब इधर-उधर की कुछ और बातें पूछते रहे, फिर वह अनिता की पीठ पर प्यार से हल्की सी थपकी देते हुए बोले—'अच्छा अब तुम जाकर आराम करो। अब सारा दिन कोई और काम नहीं होगा। रात को खाना खाने के बाद आ जाना, उस समय तक मैं तुम्हारी यह पूरी रिपोर्ट भी पढ़ लूंगा। फिर और जो बातें पूछनी होंगी पूछ लूँगा।'

अनिता जाने लगी तो ठाकुर साहब ने फिर आवाज दी। अनिता दरवाजे के निकट ही रुक गई। उसने घूमकर देखा तो ठाकुर साहब बोले—'शायद कहने की जरूरत तो नहीं, परन्तु इस बात का खास ख्याल रखना कि और किसी से इस रिपोर्ट का पता न हो और न तुम इस विषय मे किसी से बात-चीत ही करना।'

'जी अच्छा।'

अनिता तो चली गई और ठाकुर साहब काफी परेशान से होकर जिस तख्तपोश पर बैठे थे उसी पर लेट गये। एक गाव-तकिया उन्होंने सिर के नीचे रख लिया और दूसरा बगल में दबा लिया और छत की ओर देखते हुए अपने विचारों में डूब गये।

इतने में ही एक कर्मचारी ने आकर बताया—'नीचे शुक्ल जी आये हैं।'

शुक्ल जी उन्हीं के पार्टी के आदमी थे और उनके बड़े ही गहरे मित्र भी थे। यह सुनकर ठाकुर साहब जरा ऊपर को उठे और गाव-तकिया पीठ के नीचे खिसका कर अधलेटे से हो गये। उन्होंने अपनी आँखें ऊपर को उठाकर कहा—'अरे तो तुम उन्हें अपने साथ ही ले आते।'

'जी······जी वह खुद ही नहीं आये। उन्होंने कहा कि पहले देख लो कि कहीं ठाकुर साहब सो न रहे हों।'

ठाकुर साहब जरा बिगड़ कर बोले—'अरे मूर्ख, यह सोने का कौन सा वक्त है? जाओ उन्हें फौरन ऊपर ले आओ।'

थोड़ी ही देर में शुक्ल जी पान चबाते हुए ऊपर आ गये। ठाकुर साहब ने उसी तरह अधलेटे में ही हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा—'आओ शुक्ल बाबू। तुमने कमाल कर दिया, नीचे क्यों रुके रहे?'

'भई मैंने सोचा कि आजकल तो आपको रात में भी काम करना पड़ता है, इसलिए जब भी मौका मिलता होगा थोड़ा सो लेते होंगे?'

'नहीं, मैं कुछ देर के लिए लेटा जरूर था, शायद इसी से उस

आदमी को धोखा हो गया । वह समझा मैं पड़ा सो रहा हूँ । मेरे छोड़ो इन बातों को । कहो कैसे आना हुआ ? क्या कोई नई खबर है ?'

शुक्ल जी वहीं तख्त पर बेतकल्लुफी से बैठते हुए बोले—'नई हमारे पास तो कोई नई खबर नहीं है, परन्तु लगता है कि तुमने कोई नई खबर जरूर सुनी है ।'

'मैंने ?'—ठाकुर साहब ने अपनी ओर इशारा करते हुए पूछा । फिर हँस कर रह गये ।

'ठाकुर साहब, मुझे झाँसा मत दीजिये । हम आपकी शकल से ही मन का अन्दाजा लगा लेते हैं । सच बताओ न आखिर बात क्या है ?'

ठाकुर साहब कोई बात छिपाना नहीं चाहते थे परन्तु उन्हें इस बात का ख्याल ही नहीं रहा था कि कुछ देर पहले उनकी जो बातें अनिता से हुई थी, उसका प्रभाव अभी तक उनके चेहरे पर है । अब उन्हें याद आ गया तो बोले—'अच्छा तो क्या सचमुच मेरे चेहरे से उदासी की झलक दिखाई देती है ?'

'हाँ भई भला मुझे मजाक करने की क्या जरूरत है ?'

ठाकुर साहब ने हाथ उठाकर अपने सिर पर फेरते हुए कहा—'हो सकता है ।'

'इसका कारण ?'

'भई कारण क्या बताऊँ, अभी तुम्हारे आने से पहले कुछ सज्जनों से बातचीत हो रही थी । पता चला कि मेहर बाबा को अपने दौरे में बड़ी सफलता प्राप्त हुई ।'

'इसका सबूत ?'

'सबूत तो यही है कि उनके हर जलसे अपने से ज्यादा सफल रहे ।'

'बस ?'

ठाकुर साहब ने ज़रा आश्चर्य से मित्र की ओर देखा और फिर बोले—'क्यों, इससे बड़ा और क्या सबूत हो सकता है?'

यह सुनकर शुक्ल जी हँस दिये और फिर मित्र की पीठ पर हाथ मारते हुए बोले—'ठाकुर, कभी-कभी तो तुम बड़ी भोली बातें करने लगते हो?'

'तो क्या तुम समझते हो कि मैं झूठ बोल रहा हूँ?'

'नहीं भई, मैं कब कहता हूँ।'

'या तुम यह समझते होगे कि मैं यूं ही सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास कर रहा हूँ। नहीं, यह बात नहीं है। अब तुमसे क्या छिपाना? मैंने एक खास आदमी मेहर बाबा के पीछे लगा रखा है जिसने उनके हर जलसे में भाग लिया और हर बात को बड़े ध्यान से सुना और जलसे के हर पहलू को गौर से देखा। यह देखो उसी की रिपोर्ट है।'

'भई मुझे इस रिपोर्ट से इन्कार तो नहीं।'

'तो फिर?'

'सीधी सी बात है।'

'वह क्या?'

'वह यह कि ठाकुर केवल राजनीतिज्ञ हैं, और मेहर बाबा साधु।'

'मैं समझा नहीं। वह साधु ही सही परन्तु राजनीति के क्षेत्र में तो मुझसे टक्कर ले रहे हैं।'

'तुम मुझे यह बताओ कि इस क्षेत्र में क्या तुमसे कोई और टक्कर नहीं ले रहा है? क्या तुम्हारे लिए यह कोई नई बात है?'

'हाँ, वह तो सब ठीक है परन्तु सोचने की बात तो यह है कि...।'

शुक्ल जी ने बात काटते हुए कहा—'तुम्हारा अर्थ यह है कि मेहर बाबा के जलसे में तुमसे दुगुनी संख्या में लोग आये थे। मैं यह

भी मानने को तैयार हूँ कि वे दुगुनी नहीं बल्कि तिगुनी, चौगुनी संख्या में आये थे। परन्तु इससे होता क्या है ?'

ठाकुर साहब चकित रह गये, बोले—'अजीब बात करते हो, तुम्हारा मतलब है इसमें कोई फर्क ही नहीं पड़ता ?'

'बिल्कुल नहीं।'

'वह कैसे ?'

'इसलिए कि हमारे देश में साधुओं और संन्यासियों की पूजा करने वालों की संख्या कुछ कम नहीं है। तुम अच्छी तरह समझ लो कि दस में से नौ आदमी तो केवल साधु बाबा के दर्शन करने ही आये होंगे। न जाने उनमें कितनी संख्या तो औरतों की ही रही होगी। बस वह साधु महाराज के दर्शन करने चले आये और दर्शन पाकर लौट गये।'

ठाकुर साहब को शुक्ल जी की बातों में कुछ सार तो दिखाई दिया फिर भी उनका संदेह पूरे तौर पर दूर नहीं हुआ। कहने लगे—'तुम्हारी बात को झुठला तो नहीं सकता।'

'अरे तुम झुठलाओगे क्या ? मैंने तुम्हें सारी असलियत बता दी है।'

'वह तो ठीक है परन्तु वही साधु जब वोट माँगेगा तो क्या जनता······?'

'इसका मतलब यह है ठाकुर, कि तुम्हें इतना भी नहीं मालूम कि एक राजनीतिज्ञ के नाते तुम्हारा जनता में क्या स्थान है, इस इलाके में क्या स्थान है। वैसे भी लोगों के दिलों पर तुम्हारा दबदबा है। वे जानते हैं कि वे बेशक मेहर बाबा के पाँव छूते रहें परन्तु उन्हें वोट ठाकुर साहब को ही देना होगा।'

यह सुनकर ठाकुर साहब की टूटी हुई आशाएँ फिर से बँध गईं। वह समझ गये कि शुक्ल जी ने काफी गहरी बात कही है जो सारहीन नहीं

व लोग वन्द कमरे में वैठ गये और ठाकुर साहब ने सबके सामने छोटा
ा भाषण देते हुए कहा—'देखिये मेहर बाबा के दौरा करने से हमारी
काफी निन्दा हुई है। मुझे यह भी खबर मिली है कि मेहर बाबा के
जलसों में भाग लेने वालों की संख्या हमारे जलसों से कहीं ज्यादा थी।
मैं तो इस सोच में पड़ गया हूँ कि मेहर बाबा ज्यादा लोकप्रिय हैं और
उन्हें वोट भी हमसे अधिक मिलेंगे परन्तु मेरे एक मित्र ने मुझसे सहमत
न होकर कहा कि मेहर बाबा एक साधु के तौर पर लोगों में बहुत
लोकप्रिय चाहे अवश्य हों, परन्तु एक राजनीतिज्ञ के रूप में उनको लोग
इतना नहीं मानते जितना मुझे मानते हैं। ख़ैर, वह तो जो हैं सो हैं, अब
एक नई मुसीवत हमारे लिए यह खड़ी हो गई है कि मेहर बाबा की
कड़ी आलोचना के कारण ऊपर से नीचे तक यह बात फैल गई है कि
हम पैसे के जोर से वोट लेने की कोशिश कर रहे हैं। इस समय चुनाव
सिर पर पहुँच चुका है। हमारी पार्टी की यह वदनामी हमें ले डूबेगी।
मुश्किल तो यह आ खड़ी हुई है कि अब हम इस वदनामी के धब्बे को
कैसे धोयें?'

वाग सिंह ने मूँछों को ताव देते हुए कहा—'ठाकुर साहब, मेरी राय
तो यह है कि जो लोग मेहर बाबा के कहने में आकर हमारी वदना
कर रहे हैं उन्हें इस वात का अच्छी तरह मज़ा चखाया जाय।'

ठाकुर साहब उसकी वात काटते हुए वोले—'नहीं वाग सिंह,
इसका मौक़ा नहीं है।'

एक दूसरे अधेड़ उमर के सज्जन वोले—'ठाकुर साहब हम य
तो देख रहे हैं कि अब कुली पार्टी और वेड़ा गर्क पार्टी आदि क
काफी हिम्मत वढ़ गई है। वह देहातों में जाकर हमारी व

कर रहे हैं। पहले जो काम वह अपनी सभाओं में नहीं कर पाये, वही काम अब कर रहे हैं।'

ठाकुर साहब बोले—'आपका कहना बिल्कुल ठीक है। हाँ मुश्किल तो यह है कि अब हम इन पार्टियों का दिमाग दुरुस्त करने की कोशिश करें, तो उसका बहुत ही बुरा असर चुनाव पर पड़ेगा। लेकिन मुझे इन छोटी-छोटी पार्टियों की इतनी चिन्ता नहीं है क्योंकि ये चाहे कुछ भी करें, चुनाव में हमें नहीं हरा सकतें। चिन्ता तो केवल इस बात की है कि हमारी इतनी बदनामी हो जाने के कारण वही मानवता पार्टी हमसे अधिक वोट न ले जाये। मैंने आप सब को इसीलिए बुलाया है कि आप लोगों के सलाह-मशविरे से इस बिगड़ती हुई समस्या को बिचाने की कोशिश की जाय। इसलिए आप कृपया मुझे सुझाव दीजिये कि मुझको कौन सा कदम उठाना चाहिए और कौन सा नहीं।'

एक बूढ़े सज्जन बोले—'मेरे विचार से हमें कुछ परचे छपवाने चाहिए। उसमें इस बात का जिक्र होना चाहिए कि हमारे शत्रु हमें ख्वामख्वाह बदनाम कर रहे हैं। उनकी इस तोहमत में न तो कोई सार है, न सच्चाई। सत्ता पार्टी का कभी भी यह उद्देश्य नहीं रहा कि वह जबरन दबाव डालकर जनता से वोट प्राप्त करे। इसके बाद काफी विस्तार से अपने उद्देश्यों और नीतियों का जिक्र होना चाहिए। अन्त में फिर इसी बात पर जोर देना चाहिए कि जनता को चाहिए कि हमारे शत्रुओं से होशियार रहे और उनके गलत प्रचार पर बिल्कुल ध्यान न दे।'

ठाकुर साहब—'सुझाव तो अच्छा है। मेरे विचार में आज ही यह परचा लिखकर शाम तक प्रेस में दे देना चाहिए ताकि कल तक हजारों परचे छप कर तैयार हो जायें और परसों तक पूरे क्षेत्र

में बाँट दिये जायँ। अच्छा यह बात तो तय हो गई, अब कोई सज्जन और कोई सुझाव देना चाहें तो दे दें।'

एक सज्जन ने फिर कहा—'ठाकुर साहब, है तो जरा झंझट का काम, परन्तु यदि आप करने को तैयार हों तो मैं भी अपना सुझाव दे दूं?'

ठाकुर साहब—'जरूर-जरूर,……मैं झंझट से नहीं डरता, यदि आपका सुझाव अच्छा हुआ तो मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ।'

वही सज्जन—'तो मेरी राय यह है कि आप फिर एक बार गाँव-गाँव में जाकर चक्कर लगायें। कोई जलसा न करें, बल्कि घर-घर जाकर लोगों से मिलकर बड़ी नम्रता से समझायें कि दूसरी पार्टी वाले आप पर झूठी तोहमतें लगा रहे हैं।'

एक और सज्जन बोले—'मैं इस सुझाव का समर्थन करता हूँ। जब लोग अपने महान् नेता को अपने घर में आया देखेंगे तो उनके मन पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ेगा।'

एक तीसरे सज्जन बोले—'सुझाव तो अच्छा ही है, परन्तु ठाकुर साहब आप एक बार पूरे क्षेत्र का दौरा तो कर ही चुके हैं, अब फिर आपको मेहनत करनी पड़ेगी। यदि आप ऐसा कर सकें तो मेरे ख्याल में इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ सकता है।'

ठाकुर साहब ने पल भर सोच कर कहा—'सुझाव तो मुझे भी पसन्द है। रही मेहनत की बात, उससे मैं नहीं घबराता। मेरे ख्याल में पहले इश्तहार छपवा कर बाँट दिये जायें, और फिर मैं अपने दौरे शुरू कर दूं। क्यों, ठीक है न?'

सबने हाँ में हाँ मिलाई।

अब बाग सिंह को एक सुझाव सूझा, वह बोला—'ठाकुर साहब, एक बात मेरे मन में भी आई है।'

ठाकुर साहब मुस्करा कर बोले—'तुम भी कह दो, परन्तु इस बात का ख्याल रखना कि कोई लट्टू घुमाने का प्रोग्राम न बता देना।'

'जी नहीं।' बाग सिंह ने कुछ झेंप कर कहा।

'हाँ तो बताओ तुम्हारा क्या सुझाव है?'

'मेरा सुझाव यह है कि जब तक परचे छप रहे हैं और जब तक आप बाहर नहीं जाते, उससे पहले ही अपने क्षेत्र के खास-खास लोगों को यहाँ बुला लिया जाय और उनके वोटरों के हिसाब से रुपया नगद दे दिया जाय।'

यह सुन कर सबने कहकहा लगाया और उनमें से दो-तीन शख्सों ने कहा—'बात तो मोटी सी है परन्तु यह मानना पड़ेगा कि योजना बुरी नहीं। राजनीति के काम में हर ढंग से अपना उल्लू सीधा करने की कोशिश करनी चाहिए।'

ठाकुर साहब ने बाग सिंह से कहा—'परन्तु यह तो तभी हो सकता है कि परसों तक पूरे क्षेत्र के खास-खास लोग पहुँच जायँ।'

बाग सिंह—'आप कहिये तो मैं कल ही सबको घेर-घार कर ले आऊँ।'

सबकी राय से तीनो योजनाएँ स्वीकार कर ली गईं।

सब लोग चले गये तो ठाकुर साहब ने फौरन अनिता को बुला कर परचे का मजमून बनवाया और प्रेस वाले को बुला कर ताकीद कर दी कि कल शाम तक सब परचे छप जाने चाहिए।

अब क्या था, फिर एक बार गरमा-गरमी शुरू हो गई। दूसरे दिन परचे छप गये और रातों-रात उन्हें बाँटने के लिए देहातों में भिजवा दिया गया। तीसरे दिन प्रीति-भोज भी हुआ, जो काफी सफल रहा। चौथे दिन ठाकुर साहब फिर दौरे पर निकल गये।

## आठ

चुनाव शुरू हो गये थे ठाकुर साहब ने इतनी मेहनत की कि थकान के कारण थोड़े से बीमार पड़ गये। डाक्टरों ने उन्हें आराम करने की सलाह दी। मजबूरन ठाकुर साहब दो दिन विस्तर पर लेटे रहे। उनका शरीर शक्तिशाली था। इसलिए दो दिन ही आराम करने से वह ठीक हो गये और एक बार फिर उठ खड़े हुए।

ठाकुर साहब के यहाँ तो अफरा-तफरी मची रहती थी। चौबीसों घण्टे उनका मूड बिगड़ा रहता था, जैसे इस चुनाव से उनके लिये जिन्दगी और मौत का सवाल पैदा हो गया हो। परन्तु मेहर बाबा के आश्रम में ऐसी कोई बात नहीं दिखाई देती थी। अब अनिता वहाँ जाती तो मेहर बाबा के चरण छू लेती। मेहर बाबा प्यार से उसके सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद देते और अक्सर पूछते—'कहो बेटी, तुम्हारा स्वास्थ्य तो ठीक है ना ?'

'जी बिल्कुल ठीक है।'

यहाँ पर मेहर बाबा के चरित्र का एक और उज्जवल पहलू दिखाई देता है। वह अनिता से कभी सत्ता पार्टी या उसके प्रोग्रामों के बारे में नहीं पूछते थे। यदि उसका जिक्र आ भी जाता तो वह बात

पलट कर किसी और ही विषय पर बोलने लगते और पूछते—'क्यों अनिता बेटी, आज मेहर बाबा को अपने हाथ से चाय बनाकर नहीं पिलाओगी ?'

अनिता उठ कर चाय बनाने चली जाती। इधर मेहर बाबा के आश्रम का तो यह वातावरण था और उधर ठाकुर साहब के यहाँ बिल्कुल ही भिन्न वातावरण था। यूँ तो ठाकुर साहब वैसे ही काफी गुस्सेवर आदमी थे, परन्तु आजकल तो उनका पारा हर समय ही चढा रहता था। शायद रात को नींद भी नहीं आती थी तभी तो उनकी आँखों में लाली सी झलकती रहती थी। किसी से बात करते तो काट खाने को दौडते। ऐसी हालत में अनिता यह सोचने पर मजबूर हो जाती कि मेहर बाबा और ठाकुर साहब के दृष्टिकोण में कितना अन्तर है। मेहर बाबा की दृष्टि में जो फैलाव था, जो विशालता थी वह ठाकुर साहब के पास नहीं थी। इसीलिए तो उनका इतना बुरा हाल हो रहा था।

पूरे देश में हर पार्टी अपना-अपना प्रचार कर रही थी। ठाकुर साहब ने भी कोई कसर नहीं छोडी। वह पागलों की तरह अपने इलाके में भागते रहे। वह बार-बार अपने साथियों से कहते कि इस चुनाव में हमारी जीत होनी ही चाहिए। उधर मेहर बाबा को हार-जीत से कोई दिलचस्पी ही नहीं थी। उनका तो बार-बार यही कहना था कि किसी एक व्यक्ति की न हार होगी न जीत, जो हार-जीत होगी वह जनता की होगी। वह अनिता से कहते कि आज-कल जिन नेताओं ने गद्दियाँ सम्भाल रखी हैं, न जाने वह इन गद्दियों से क्यों चिपके रहना चाहते हैं ? यह तो लोकतन्त्र है, यदि जनता

किसी को गद्दी पर न रखना चाहे तो उसे जबरदस्ती चिपके रहने की क्या जरूरत है ? यदि वे सच्चे सेवक हैं, तो वे हर हालत में सेवा कर सकते हैं, गद्दी पर रह कर भी और गद्दी छोड़ कर भी।

× × ×

आखिर बड़े शोर-शराबे, धींगा-मुश्ती, खींच-तान और लड़न्त-भिड़न्त के बाद चुनाव समाप्त हुए और अब लोग चुनाव के नतीजे का इन्तजार कर रहे थे।

आखिर एक रोज यह खबर फैल गई कि उनके इलाके में मेहर बाबा की जीत हुई है।

## नौ

पहले तो ठाकुर साहब को विश्वास ही नही हुआ, परन्तु दूसरे दिन जब अखबारो में यह खबर पहले पेज पर छपी तो ठाकुर साहब मारे गुस्से के बिल्कुल पागल से हो गये और उन्होंने अपने खास-खास नौकरो और गुण्डो को बुलाकर बन्द कमरे मे उनसे बातचीत की।

उनमे बाग सिंह तो था ही, उसके अतिरिक्त हर गाँव के चुने हुए गुण्डे वहाँ मौजूद थे। इस मीटिंग मे उन्होने अपने समझदार मित्रो में से किसी को भी नही बुलाया था। वहाँ एक भी ऐसा आदमी नही था जो उन्हे अच्छी राय दे सके। वहाँ तो केवल वही कर्ता-धर्ता थे, बाकी जितने लोग थे उनका केवल यही काम था कि वह ठाकुर साहब की हाँ मे हाँ मिलायें।

कमरे के सब दरवाजे बन्द कर लिये गये और जितने लोग वहाँ बैठे थे उन्हें ठाकुर साहब की शक्ल से ही अन्दाजा हो गया कि आज उनकी खैरियत नहीं।

ठाकुर साहब खद्दर का उजला कुर्ता और उजली धोती पहने, माथे पर तिलक लगाये, तख्तपोश पर चार-पाँच गाव-तकियों के सहारे बैठे हुए थे। किसी तकिये के साथ उन्होंने पीठ लगा रखी थी, किसी पर

कोहनी जमा रखी थी और किसी पर टाँग फैला रख रखी थी। उस समय उनकी आँखें अंगारों की तरह दहक रही थीं। इसी मौके पर उन्हें खबर दी गई कि अनिता आई है। उन्होंने उसे अन्दर बुलवा लिया और उसे घूर कर देखते हुए पूछा—'क्या बात है ?'

अनिता यह प्रश्न सुनकर हैरान रह गई और उनकी शकल देखकर कुछ सहम गई। यूँ तो वहाँ बैठे हुए हर गुण्डे की ऐसी शकल थी कि कहीं अकेले में भेंट हो जाती तो अनिता का दम ही निकल जाता। ठाकुर साहब की बात भी उसे अजीब लगी, क्योंकि वह तो हर-रोज की तरह अपनी ड्यूटी पर पहुँची थी, वह समझती थी कि ठाकुर साहब हर-रोज की तरह उसे कुछ काम बता देंगे।

ठाकुर साहब अपने प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे। अनिता डरते-डरते बोली—'जी मैं काम पर आई हूँ। मैंने सोचा आपके दर्शन कर लूँ, यदि कोई काम हो तो मैं कर दूँ। यदि आप अभी व्यस्त हों तो मैं दूसरे कमरे में बैठ जाती हूँ।'

ठाकुर साहब कुछ देर तक उसकी ओर देखते रहे और फिर बोले—'आज कोई काम नहीं है। इन्तजार करने की भी जरूरत नहीं। तुम घर जा सकती हो।'

अनिता चुपचाप लौटने लगी, तो फिर उसने डरते-डरते दुबारा पूछा—'रात को खाना खाने के बाद आ जाऊँगी।'

'आ जाना।'

यूँ लगता था जैसे ठाकुर साहब उससे पीछा छुड़ाना चाहते थे। वह चुपचाप चली आई और उसके निकलते ही दरवाजा फिर बन्द हो गया।

सब लोग बिल्कुल खामोश थे और ठाकुर साहब के मुँह से कुछ

सुनना चाहते थे। आखिर ठाकुर साहब ने बड़े क्रोध भरे स्वर में कहा—'तुम सब उल्लू के पट्ठे हो।'

सब लोग ठाकुर साहब की ओर देखते रहे। किसी ने आंख उठाने का साहस नहीं किया। यों लगता था जैसे वे ठाकुर साहब की बात से सहमत हों। जैसे वे सचमुच ही खानदानी उल्लू के पट्ठे हों।

ठाकुर साहब फिर बोले—'बाग सिंह इस मेहर बाबा ने तो हमारी लोटिया डुबो दी और हमें कहीं का नहीं रक्खा।'

बाग सिंह—'ठाकुर साहब आप देखते रहिये अगर हम न रहे तो मेहर बाबा भी न……।'

ठाकुर साहब बोले—'जैसा चाहो करो। मैं तो बरबाद हो गया हूँ। तुम सब निकम्मे हो।'

इसी तरह के वाद-विवाद के बाद उन लोफरों की सभा समाप्त हुई।

× × ×

रात जब अनिता ठाकुर साहब के पास पहुँची तो उसने देखा कि उनका चेहरा बिल्कुल पत्थर की भांति हो रहा था। उनकी शक्ल से किसी भी भाव का पता नहीं चलता था। यूँ लगता था जैसे अब उनके मन में कोई भी भावना नहीं है। या यूँ कहना ज्यादा ठीक होगा कि अब उनके मन में केवल एक ही भावना थी, एक ही दृढ़ निश्चय था जिसके बारे में वह कुछ नहीं जानती थी।

उस रात ठाकुर साहब ने फिर कह दिया कि आज कोई काम नहीं है। अनिता लौट आई और बिस्तर पर लेट कर बहुत देर तक सोचती रही कि चुनाव में हार जाने से ठाकुर साहब इतने निराश क्यों हो गये थे। वह नहीं जानती थी कि ठाकुर साहब इतने निराश नहीं हुए थे जितने कि बौखला गये थे। वह सोचने लगी कि ठाकुर साहब और मेहर बाबा में कितना अन्तर है। मेहर बाबा को अपनी जीत को कोई

खुशी नहीं थी। वह बड़े गम्भीर हो गये थे, कहते थे—'जनता ने मुझे चुनकर मुझ पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी डाल दी है। मैं महसूस करता हूँ कि अब तक तो मैं केवल बातें करता रहा हूँ, अब कुछ काम करने का मौका आया है। भगवान ही अब मेरी इज्जत रख सकता है।'

× × × ×

आज उनके स्वागत के लिए बहुत बड़े जलसे की तैयारियाँ हो रही थीं। एक खुले मैदान में जिसके चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पेड़ थे वहीं इस सम्मेलन का प्रबन्ध किया गया था। उस मैदान के बीच में एक ऊँचा सा चबूतरा था, उसी पर गद्दे और चादरें बिछाकर खास-खास नेताओं के बैठने का प्रबन्ध किया गया था। शामियाने लगाने की जरूरत नहीं समझी गई, क्योंकि मौसम अच्छा था, न बहुत गर्मी न सर्दी। आकाश पर तारे चमक रहे थे। चबूतरे के आगे काफी दूर तक धरती में बाँस गाड़ दिये गये थे, उन पर बिजली के बल्ब और लाउड स्पीकर लगे हुए थे। धीरे-धीरे जनता आनी शुरू हो गई और लगभग एक घण्टे तक मैदान में लाखों लोग जमा हो गये। अन्त में नेता लोग आये उनमें मेहर बाबा भी थे।

अनिता भी वहाँ पहुँची, क्योंकि अभी तक ठाकुर साहब ने उसे उनके यहाँ आने-जाने को मना नहीं किया था। वास्तव में तो उसका अपना ही मन चाहता था कि वह उस जलसे में जरूर भाग ले। इसके साथ ही उसने अपने मन को यह तसल्ली भी दी कि वह ठाकुर साहब को इस जलसे की रिपोर्ट भी पहुँचा देगी, ताकि यदि किसी ने शिकायत की भी हो तो वह कह सके कि आपने मेरी जो ड्यूटी लगाई है, वही तो मैं कर रही हूँ। जब आप मना कर देंगे तो मैं नहीं जाऊँगी।

मेहर बाबा को देखते ही लोगों ने उनकी जय-जय के नारे लगाने शुरू कर दिये। बहुत देर तक नारों से मैदान गूँजता रहा। लोगों में बहुत ही उत्साह था। और समान हुआ तो मानवता पार्टी के एक सज्जन ने जो काफी बूढ़े थे उठकर कार्यवाही शुरू करते हुए कहा—'भाइयो और बहनो, आज आपको इतनी संख्या में यहाँ इकट्ठे देखकर जो हर्ष मुझे हो रहा है उसका आप अन्दाजा नहीं लगा सकते। यह आप ही का प्रताप है कि आज मानवता पार्टी की जीत हुई है। दरअसल मानवता पार्टी की जीत आप ही की जीत है। विशेषकर मेहर बाबा तो आपके इस चुनाव से बहुत गम्भीर हो गये हैं। वह समझते हैं कि आपने उनका चुनाव करके बेशक उनका मान बढ़ाया है, परन्तु इसके साथ ही आपने उनकी जिम्मेदारी भी बहुत बढ़ा दी है। आपके सामने हर पार्टी के उद्देश्य और उनकी सेवाएँ मौजूद थीं, आपने उन्हें जाँचा, तौला और परखा। अन्त में आपने मानवता पार्टी को ही इस योग्य समझा। अब मैं चाहता हूँ कि मेहर बाबा स्वयं ही आपके सामने अपने विचार रखें। यूँ तो आप उनके विचार जानते ही हैं, परन्तु इस समय वह आपको धन्यवाद भी देंगे और भविष्य के लिए अपना कार्यक्रम भी बतायेंगे।'

इतना कहकर वह सज्जन तो बैठ गये और मेहर बाबा धीरे-धीरे उठकर खड़े हुए ताकि सब लोग उन्हें देख सकें। उनके खड़े होते ही फिर तालियाँ बजनी शुरू हुईं। वह तालियाँ बजाना पसन्द नहीं करते थे परन्तु इस समय लोगों के उत्साह को कैसे रोक सकते सारी जनता चुप हो गई। हाथ उठाकर लोगों को चुप रहने का संकेत किया तो वे चुप हो गये।

मेहर वावा ने अपने कन्धे पर पड़ी चादर को सम्भालते हुए वोलना शुरू किया—'भाइयो तथा वहनो !

इतने में ही एक वड़े जोर के धमाके की आवाज हुई, फिर धमाका, फिर तीसरी वार धमाका।

पहले धमाके पर मेहर वावा खड़े रहे, दूसरे धमाके पर वह लड़-खड़ा गये और तीसरे पर गिर पड़े।

यह तीन गोलियाँ चलने की आवाज थी जो मैदान के सिरे वाले ऊँचे पेड़ों के झुण्ड में एक शाखा पर वैठकर चलाई गई थी। लोगों में खड़वड़ी के साथ-साथ हलचल मच गई। मंच पर वैठे लोग एकदम आगे को वढ़े। अनिता भी चबूतरे के पास ही धरती पर वैठी थी, वह एकदम उठकर मेहर वावा के पास पहुँची लेकिन मेहर वावा की आँखें पथरा चुकी थीं।

उनकी आँखें देखकर अनिता को ठाकुर साहव का चेहरा याद आ ा और उसकी मोटी-मोटी आँखों से आँसू वह निकले।